www.kewalsachtimes.com

₹ 10

अक्टूबर 2019

KEWAL SACH TIMES

A National Magazine

RNI NO.-BIHBIL/2011/49252, DAVP NO.-131729, POSTAL REG. NO.:-PT.-78

ह्यूस्टन में मोदी-मोदी की गूंज

बिहार एवं झारखण्ड की तेज़ी से बढ़ती पत्रिका

''केवल सच''

सबुत के साथ खबर लिखता है

केवल सच मिडिया ग्रुप

भ्रष्टाचार एवं दहशतगर्दी

और

मुखिया से मुख्यमंत्री

थाना प्रभारी से डीजीपी के

साक्षात्कर के लिए चर्चित

पत्रिका केवल सच

से आज ही जुड़े।

ब्रजेश मिश्र

संस्थापक सह संपादक

www.kewalsachlive.in

वेब पोर्टल न्यूज

24 घंटे आपके साथ

Mob. 09431073769, 9308727077

निर्भीकता हमारी पहचान

केवल सच

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

www.kewalsach.com

Kewal Sach TIMES

A National Magazine

www.kewalsachtimes.com

प्रधान कार्यालय :- पूर्वी अशोक नगर, रोड नं.-14, मकान सं. 28/14, कंकड़बाग, पटना-800020 (बिहार)

झारखण्ड कार्यालय :- रिया प्लाजा, तीसरा तल्ला, फ्लैट नं.-303, कोकर चौक, राँची (झारखण्ड)

सम्पर्क संख्या :- 9431073769, 9955077308, 9308727077

जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएँ

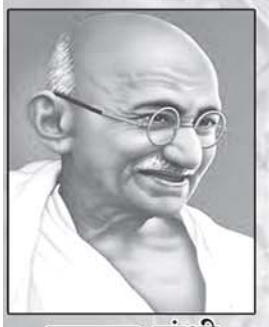

महात्मा गांधी
02 अक्टूबर 1869

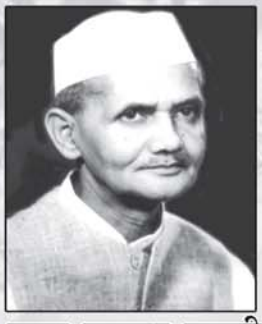

लाल बहादूर शास्त्री
02 अक्टूबर 1904

अभिजीत सावंत
07 अक्टूबर 1981

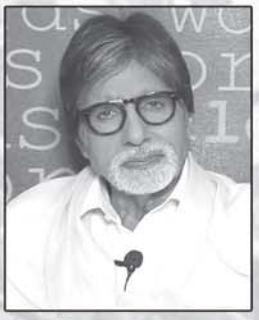

अमिताभ बच्चन
11 अक्टूबर 1942

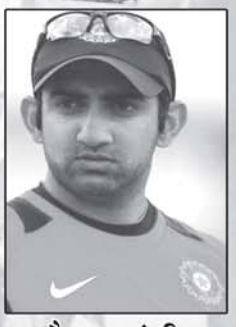

गौतम गंभीर
14 अक्टूबर 1981

एपीजे कलाम
15 अक्टूबर 1931

नवीन पटनायक
16 अक्टूबर 1946

हेमा मालिनी
16 अक्टूबर 1948

अनिल कुंबले
17 अक्टूबर 1970

वृंदा करात
17 अक्टूबर 1947

सनी देवल
19 अक्टूबर 1956

नवजोत सिंह सिद्धू
20 अक्टूबर 1963

वीरेन्द्र सहवाग
20 अक्टूबर 1978

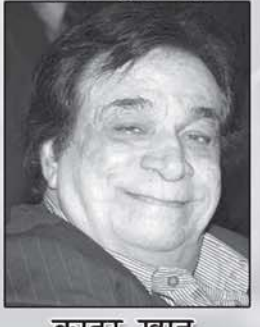

कादर खान
22 अक्टूबर 1932

परिनीति चोपड़ा
22 अक्टूबर 1988

सुनील भारती मित्तल
23 अक्टूबर 1957

प्रभाश राजू
23 अक्टूबर 1979

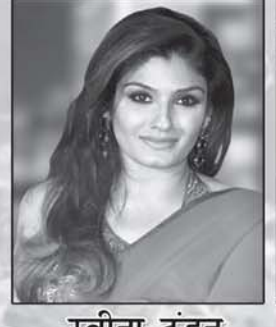

रवीना टंडन
26 अक्टूबर 1974

अनुराधा पौडवाल
27 अक्टूबर 1954

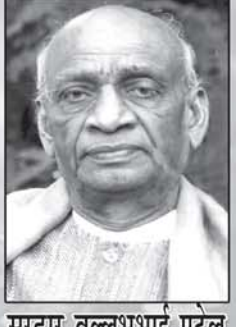

सरदार वल्लभभाई पटेल
31 अक्टूबर 1875

KEWAL SACH TIMES

A National Magazine

Regd. Office :-
East Ashok, Nagar, House No.-28/14, Road No.-14, kankarbagh, Patna- 8000 20 (Bihar) Mob.-09431073769,
E-mail :- kewalsach@gmail.com

Corporate Office:-
Riya Plaza, Flat No.-303, Kokar Chowk, Ranchi-834001 (Jharkhand)
Mob.- 09955077308,
E-mail:- editor.kstimes@rediffmail.com

Delhi Office :-
Sanjay Kumar Sinha
A-68, 1st Floor, Nageshwar talla, Shastri Nagar, New Delhi-110052
Mob.- 09868700991, 09955077308
kewalsach_times@rediffmail.com

Kolkata Office :-
Ajeet Kumar Dube, 131 Chitranjan Avenue, Near- md. Ali Park, Kolkata- 700073 (West Bengal)
Mob.- 09433567880, 09339740757

ADVERTISEMENT RATES PER ISSUE

	AREA	FULL PAGE	HALF PAGE
COLOUR	Cover Page	3,00,000/-	N/A
	Back Page	1,00,000/-	65,000/-
	Back Inside	90,000/-	50,000/-
	Back Inner	80,000/-	50,000/-
	Middle	1,40,000/-	N/A
	Front Inside	90,000/-	50,000/-
	Front Inner	80,000/-	50,000/-

	AREA	FULL PAGE	HALF PAGE
B & W	Inner Page	60,000/-	40,000/-

1. एक साल के नियमित विज्ञापन पर पत्रिका के वेवसाइट **www.kewalsachtimes.com** के फ्रंट पर भी विज्ञापन निःशुल्क तथा आपका वेवसाइट से सीधा लिंक हो सकता है।
2. एक साल के नियमित विज्ञापन पर 10 प्रतिशत की रियायत।
3. आपके प्रोडक्ट या संगठन के प्रचार-प्रसार हेतु आलेख को उचित स्थान।
4. पत्रिका द्वारा सामाजिक कार्य में आपके संगठन/प्रोडक्ट का बैनर/फ्लैक्स को उचित स्थान देकर आपके संगठन का व्यापक प्रचार-प्रसार।
5. विज्ञापन का भुगतान चेक या आर.टी.जी.एस. से ही मान्य होगा।

महाप्रबंधक (विज्ञापन)

दोगली व लूट नीति का शिकार

बिहार

अपनी प्रतिक्रिया हमारे ई-मेल पर दें:- editor.kstimes@rediffmail.com

बिहार ऐसे शासक की तलाश में है जो वास्तव में उसके विकास के लिए समर्पित हो। प्रदेश ऐसे राजा को सिंहासन पर बैठाकर खुद पर इठलाना चाहता है जिसका अतित आज भी इसको चर्चा में बनाये रखा है। 1947 के आजादी के बाद बिहार बढ़ता तो गया पर वह परिवारवाद, वंशवाद, जातिवाद, क्षेत्रवाद, भाषावाद और अपराधवाद के साथ अब भ्रष्टाचारवाद के दलदल में धंसता जा रहा है। बिहार एक ऐसी पवित्र धरती है जिसका लोहा सृष्टि के सृजन से लेकर आज तक वातावरण का कायम है। मोक्ष की धरती, ज्ञान की धरती, बलिदान की धरती, त्याग की धरती, दान की धरती, भगवान की धरती बिहार अब नीतीश कुमार की है, पहले लालू यादव की थी, कभी मोदी की हो सकती है लेकिन 10 करोड़ जनता की धरती है बिहार यह तब साबित होगा जब यहां रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सुरक्षा का पुख्ता इंतजाम हो न की वार्षिक रिपोर्ट के रंगीन पृष्ठों में दिखने वाला विज्ञापन बनकर रह जाये। बिहार के विकास में जी जान से लगे राजनेताओं का, पदाधिकारियों का और बिचौलियों का संपत्ति बुलेट ट्रेन की गति से बढ़ रहा है पर बिहार में बहार नहीं दिखता। सायकिल पर चलने वाला बिना बहुत कुछ किये दोगली राजनीति एवं लूट की नीति के दम पर आज कई-कई कारखाने, शो-रूम का मालिक बन बैठा है तो कुछेक लोगों ने तो आईलैंड तक खरीद लिया है की चर्चा आम होने लगी है। पिछले 40 वर्षों की बिहार की राजनीतिक त्रासदी यही रही है की यहां हर कुछ राजनीति से शुरू होती है और राजनीति पर खत्म, जिसके कारण से आज घर की गंदगी निकालने के लिए गाना बजाकर लोगों से कचरा मांगा जा रहा है। कल कारखाने बंद हैं, खुलने का असार दिखते नहीं है, इच्छा रखने वाला राजनेताओं एवं पदाधिकारी के कमीशन से परेशान हैं, वैसे में दोगली व लूट नीति की वजह से सूबे के लोगों का गुजरात मॉडल की दिशा में सोचना पड़ता है। प्रकृति के मौसम का मिजाज की जानकारी रखने वाला बिहार सरकार सब कुछ जानने के बाद भी अपनी दोगली एवं लूट की नीति की वजह से आधी आबादी को बाढ़ के सहारे छोड़ देती है तो आधी को सुखाड़ का दंश झेलने के लिए। यह विडम्बना ही हैं की बिहार की यह स्थायी समस्या बाढ़ एवं सुखाड़ के कारण राजेनताओं एवं पदाधिकारियों को वह व्यवस्था अर्जित करने का अवसर मिलता है जिसके लिए वह कड़ी मेहनत करके स्थान प्राप्त करता है। साल के 12 महीने में 01 माह बाढ़ से जीवन - मौत से जूझना और बच गये तो 6 महीना उससे उबड़ने में व्यतीत करना और शेष बचे 05 महीने में बेहतर जीवन के लिए कड़ा संघर्ष और फिर वहीं पुरानी समस्या का आना एवं जाना। न जाने कितने बाल सफेद हो गये की कोई तो आयेगा जो प्रतिवर्ष आने वाले बाढ़ की त्रासदी से निजात दिलायेगा! कोई तो आयेगा जो प्रतिवर्ष होने वाले जल की बर्बादी पर विराम लगाकर रोजगार की नई रौशनी प्रदान करेगा! कोई तो आयेगा जो मिथिलांचल एवं सिमाचंल को प्रतिवर्ष होने वाले शोक से मुक्ति दिलायेगा! 73 साल से कितनी आंखे पत्थरा गयीं, कितने बैकुंठ पहुंच गये पर समस्या यथावत बनी हुई है। बाढ़ एवं सुखाड़ से मुक्ति दिलाने पर नीतीश कुमार युगों - युगों तक याद किये जा सकते हैं, शराब से मुक्ति दिलाकर नहीं। बिहार को बाढ़ एवं सुखाड़ से बचाने की आवश्यकता थी न की 700 करोड़ लगभग के बिहार म्यूजियम बनाने की। बिहार में बहुत निर्माण हो रहा है इसके लिए नीतीश कुमार चर्चा में है पर उससे ज्यादा उसमें भ्रष्टाचार है यह भी उतना ही सत्य है लेकिन अगर डैम का निर्माण होता तो प्रतिवर्ष होने वाला अरबों रूपये की बर्बादी एवं हजारों लोगों की जान को बचाया जा सकता था तथा पनबिजली से शराब के राजस्व के नुकसान से कहीं ज्यादा प्राप्त भी किया जा सकता था। बिहार में नियत एवं नीति पर दोगली एवं लूट नीति का वर्चस्व है, इसलिए सकारात्मक कार्य पर न तो सत्तापक्ष गंभीर दिखता है और विपक्ष तो कुर्सी वापसी के लिए कूटनीति करने में मशगूल है। आपदा प्रबंधन विभाग बाढ़ एवं सुखाड़ में सरकारी खजाने को खाली प्रतिवर्ष करता है पर स्थायी समाधान का सार्थक प्रयास कभी नहीं करता। नीतीश कुमार के खास आईएएस एवं कुछेक राजनेताओं की दोगली एवं लूट नीति ने नीतीश कुमार का वास्तविक अस्तित्व एवं व्यक्तित्व को ही मिटा दिया है। बिहार में उम्मीद की किरण का नाम थे नीतीश कुमार, सुशासन का शासक का नाम थे नीतीश कुमार, सुरक्षा एवं विश्वास के नाम थे नीतीश कुमार, लेकिन आज वह कुछ जयचंद एवं मीरजाफर जैसे आईएएस एवं राजनेताओं के चंगुल में दिखते हैं जिसकी वजह से आज बिहार बर्बादी से उबर नहीं पा रहा है। बिहार तब तक विकसित नहीं हो सकता जबतक प्रतिवर्ष आने वाली समस्या बाढ़ एवं सुखाड़ का स्थायी समाधान न ढूंढ़ लिया जाये। विकल्प के अभाव का दंश झेल रहा बिहार में व्याप्त दोगली व लूट नीति से बचाना ही प्राथमिकता बनाना होगा अन्यथा बिहार ऐसे ही दौर से गुजरता रहेगा। बिहार में पदाधिकारियों का आतंक बढ़ गया है और इसका खामियाजा सरकार को उठाना पड़ रहा है और इसपर नकेल नहीं कसा गया तो इसके परिणाम बहुत बुरा होगा।

प्रकृति ने मानव जीवन ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण जगत को अपने वरदान से अमृत प्रदान किया है लेकिन वर्त्तमान समय में दोगली राजनीति एवं लूट नीति के कारण प्रकृति भी रूठ गयी है। बानगी के तौर पर कहीं बाढ़ तो कहीं सुखाड़ देखा जा सकता है जंगल, जल सब विलुप्त होने के कगार पर हैं या यूं कहें की हम उसी दिशा में बहुत तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। भारत को प्रकृति का स्वर्ग कहा जाता है पर मानवों ने अपने व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए प्रकृति पर ही प्रहार प्रारंभ कर दिया है जिसका नतीजा वर्त्तमान पीढ़ी तो भुगत ही रही है भविष्य की पीढ़ी इस त्रासदी का भयानक दंश झेलेगी। वक्त रहते हमने अपनी जान - बूझकर की जाने वाली गलती पर विराम लगाने का सार्थक प्रयास नहीं किया तो हमारे बच्चे हीं हमें अपमानित करेंगे, उसके लिए किसी दुश्मन की आवश्यकता नहीं होगी। बिहार का गौरव - गाथा पर बहुत कुछ कहना सूर्य को दिया दिखाना है लेकिन हमने षडयंत्र के तहत दीपक को ही बुझा दिया है और रौशनी की तलाश के लिए विशेष राज्य के दर्जे की राजनीति में जुटे हैं। बिहार जिसने देश को सर्वत्र दिया है वह आज अपने प्रदेश के आधे हिस्से को बाढ़ के भरोसे छोड़ दिया है तो आधे को सुखाड़ में और जीडीपी का बढ़ता दर दिखाकर किसको संतुष्ट करने का प्रयास है यह बात जनता आज तक समझ नहीं पायी है। मौसम प्रकृति का वह वरदान है जिसका लाभ उठाना चाहिए परन्तु दोगली एवं लूट नीति ने लाभ तो उठाया पर वह चंद हाथों तक ही सिमट कर रह गया है। आपदा की राशि विपदा लोगों के बजाय नेताओं का गोदाम भर रहा है तो पदाधिकारी का ऐशो - आराम का ऐजेण्डा पर जनता के हाथ तो बाढ़ एवं सुखाड़ ही है।

KEWAL SACH TIMES

A National Magazine

वर्षः- 09, अंकः- 100 माहः- अक्टूबर 2019 रू. 10/-

Editor in chief

Brajesh Mishra 09431073769
09955077308
08340360961

editor.kstimes@rediffmail.com
kewalsach@gmail.com
kewalsach_times@rediffmail.com

Chief Editorial Advisor

Deepak Mishra 09334096060

General Manager (H.R)

Triloki Nath Prasad 09308815605,
09122003000

General Manager (Advertisement)

Reeta Singh 09308729879
Poonam Jaiswal 09430000482

Joint Editor/Lay-out Editor

Amit Kumar 9905244479
amit.kewalsach@gmail.com

Legal Editor

Amitabh Ranjan Mishra 08873004350
S. N. Giri 09308454485

Asst. Editor

Rampal Prasad Verma 0 9939086809

Bureau Chief

Sanket kumar Jha 07762089203

Photographer

Mukesh Kumar 0 9304377779

Bureau

Sridhar Pandey 09852168763

प्रदेश प्रभारी

दिल्ली हेड

संजय कुमार सिन्हा 09868700991

झारखण्ड हेड

राजेश मिश्रा 09608645414
08083636668
rajeshmishrarti@gmail.com

पश्चिम बंगाल हेड

अजीत दुबे 09433567880
09339740757

मध्यप्रदेश हेड

अभिषेक पाठक 08109932505,
08269322711

छत्तीसगढ़ हेड

डिगल सिंह 09691153103
08982051378

उत्तर प्रदेश हेड

निर्भय कुमार मिश्रा 09452127278

उत्तराखण्ड हेड

आवश्यकता है

महाराष्ट्र हेड

कमोद कुमार कंचन 07492868363

गुजरात हेड

आवश्यकता है

आंध्र प्रदेश हेड

श्रवण कुमार चंचल 08977442750

राजस्थान हेड

आवश्यकता है

पंजाब हेड

आवश्यकता है

राजस्थान हेड

आवश्यकता है

उड़ीसा हेड

आवश्यकता है

आसाम हेड

आवश्यकता है

दिल्ली कार्यालय

केवल सच टाइम्स, द्विभाषीय पत्रिका,
द्वारा- संजय कुमार सिन्हा
97 ए, डी डी ए फ्लैट
गुलाबी बाग, नई दिल्ली- 110007
मो०- 09868700991, 09431073769

पश्चिम बंगाल कार्यालय

केवल सच टाइम्स, द्विभाषीय पत्रिका,
द्वारा- अजीत कुमार दुबे
131 चितरंजन एवेन्यू,
कोलकात्ता, पश्चिम बंगाल- 700073
मो०- 09433567880, 09339740757

झारखण्ड कार्यालय

केवल सच, हिन्दी मासिक पत्रिका,
रिया प्लाजा, तीसरा तल्ला, कोकर चौक,
राँची (झारखण्ड)
मो०- 9955077308, 9431073769

महाराष्ट्र कार्यालय

केवल सच टाइम्स, द्विभाषीय पत्रिका,
द्वारा- कमोद कुमार कंचन
Swapnapoorti Society,
Phase- 1, Sector - 26,
Nigdi, Pune- 411044
Mob:- 07492868363

छत्तीसगढ़ कार्यालय

केवल सच टाइम्स, द्विभाषीय पत्रिका,
द्वारा- नूर आलम
हाउस नं.-74, अटल आवास, बेलभाँटा,
अभनपुर, रायपुर (छत्तीसगढ़)
मो०- 09835845781, 08602674503

आपको केवल सच टाइम्स पत्रिका कैसी लगी तथा इसमें कौन-कौन सी खामियाँ हैं, अपने सुझाव के साथ हमारा मार्गदर्शन करें। आपका पत्र ही हमारी सच्चाई है।

हमारा पता है

केवल सच टाइम्स,

द्विभाषीय मासिक पत्रिका

द्वारा:- ब्रजेश मिश्र

पूर्वी अशोक नगर, रोड नं.-14, मकान संख्या- 14/28

कंकड़बाग, पटना-800020 (बिहार)

फोन:- 9431073769, 9955077308

हमारा ई-मेल

kewalsach@gmail.com,
editor.kstimes@rediffmail.com
kewalsach_times@rediffmail.com

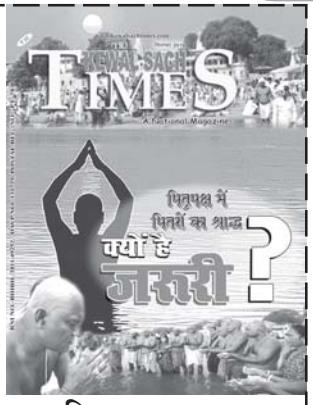

सितम्बर 2019

एक से बढ़कर एक

संपादक महोदय,

मैं आपकी पत्रिका केवल सच टाइम्स को वेवसाईट www.kewalsachtimes.com पर प्रत्येक माह पढ़ता हूं। संपादकीय, पितृपक्ष में पितरों का श्राद्ध क्यों है जरूरी? धरती को तबाह कर देगी बढ़ती हुई आबादी, मौत की नींद सुला देगी जंगल की आग, आरक्षण से सिर्फ राजनेताओं का विकास, प्रदूषण युक्त नदियां बनेगी प्रदूषण मुक्त और कानूनी सलाह पढ़ने के बाद ऐसा लगा की महज 10 रूपये में केवल सच टाइम्स पत्रिका पाठकों तक पहुंच रहा है, यह बहुत बड़ी बात है। यह पत्रिका सरकार एवं समाज को भी जागरूक करने का काम कर रही है। पत्रिका प्रबंधन इसको रंगीन पृष्ठों में प्रकाशित करने लगे तो निश्चित तौर पर इसका प्रसार और अत्यधिक बढ़ेगा।

● **महेन्द्र बनर्जी, बाबू बाजार, कोलकाता**

पितृपक्ष

ब्रजेश जी,

सितम्बर 2019 के केवल सच टाइम्स अंक में प्रकाशित अमित कुमार की खबर ''पितृपक्ष में पितरों का श्राद्ध क्यों है जरूरी?'' में भारतीय संस्कार एवं संस्कृति पर सटीक जानकारी भरी लगा। केवल सच टाइम्स पत्रिका की खबर एवं आवरण स्टोरी वास्तव में पूर्वजों के प्रति समर्पित खबर है। पिंडदान एवं मोक्ष से जुड़ी विभिन्न पहलुओं के साथ पितरों के श्राद्ध के क्या महत्व हैं के विषय में विस्तारपूर्वक खबर से समझाने का प्रयास सराहनीय है। आज की युवा पीढ़ी पितृपक्ष जैसे विषयों पर भरोसा आधुनिक चकाचौंध में रहने के कारण नहीं करना चाहती है लेकिन जब इसका महत्व समझ में आने लगता है तो उसे अपने धर्म पर भरोसा जगता है। बहुत मार्मिक एव सटीक खबर लगी।

● **सुरेश प्रसाद शर्मा, टावर चौक, मुंगेर**

जंगल की आग

ब्रजेश जी,

केवल सच टाइम्स पत्रिका के सितम्बर अंक 2019 में ''मौत की नींद सुला देगी जंगल की आग'' ललन कुमार प्रसाद ने जंगल के महत्व के साथ-साथ जंगल के साथ हो रहा प्रशासनिक एवं अपराधिक षडयंत्र की वजह से पर्यावरण दूषित होता जा रहा है। ललन कुमार प्रसाद की खबर खोजी एवं तथ्यपरक होती है। धीरे-धीरे जंगल का समाप्त होता जाना तथा पेड़ों की घटती संख्या की वजह से कई प्रकार की समस्या बढ़ती जा रही है। जंगल को बचाना नितांत आवश्यक है और इसके लिए वन विभाग के साथ - साथ स्थानीय आवाम को भी जागरूक होना पड़ेगा और इससे जंगल भी बचेगा और पर्यावरण भी। ऐसे ही खबरों को प्राथमिकता से प्रकाशित करते रहें।

● **कमलेश कुमार भगत, चंदवा बाजार, लातेहार**

बढ़ती आबादी

मिश्रा जी,

केवल सच टाइम्स पत्रिका का जवाब नहीं है मजबूत लेखनी को लेकर। वरीष्ठ पत्रकार ललन कुमार प्रसाद की खबर काफी उत्सावर्द्धक एवं जानकारीप्रद और ज्वलंत समस्याओं के कारण एवं उसके निवारण को लेकर लिखा जाता है। सितम्बर 2019 अंक में ललन कुमार प्रसाद की खबर ''धरती को तबाह कर देगी बढ़ती हुई आबादी'' में सभी प्रकार के कारणों एवं इसके निवारण को भी बहुत ही बारीक ढ़ंग से लिखकर सरकार एवं आवाम को जागृत करने का सार्थक प्रयास किया गया है। केवल सच टाइम्स समाज में घट रही घटनाओं को लेकर चिंतित हैं तथा सरकार को लगातार अगाह भी करता है ताकि समस्याओं के समाधान के लिए सरकार गंभीर हो।

● **जयशंकर तिवारी, सेक्टर- 6, लक्ष्मी नगर, नई दिल्ली**

प्रदूषणमुक्त नदियां

ब्रजेश जी,

झारखण्ड सरकार ने एक अच्छी पहल करके प्रदूषण से प्रभावित नदियां सरकार की योजना के तहत प्रदूषणमुक्त बनेंगी का साथ प्रयास किया जा रहा है। पत्रकार ब्रजेश कुमार मिश्र एवं अजय कुमार की खबर ''प्रदूषण युक्त नदियां बनेगी प्रदूषण मुक्त'' खबर में सरकार का प्रयास राँची एवं जमशेदपुर में स्वर्णरेखा नदी के किनारे उद्योगों ने 37 इफ्लूयेंट प्लांट (इटीपी) लगाने की जानकारी संतोषप्रद है। साथ ही साथ ''डॉक्टर दीदीयां करेंगी खेतों की मिट्टी की जांच'' वाली अनंत मोहन यादव की खबर भी बहुत सटीक एवं नई तरह की खबर लगी। पृष्ठों की संख्या कम होने की वजह एवं बड़े-बड़े खबरों के कारण खबरों की संख्या कम होती हैं लेकिन खबरों बहुत ही सटीक एवं वत्तर्मान समय की ज्वलंत मुद्दे पर रहती है।

● **कमलेश उरांव, लालपुर चौक, राँची**

आरक्षण

संपादक जी,

आपकी केवल सच टाइम्स और केवल सच, दोनों पत्रिका मैं सिर्फ संपादकीय पढ़ने के लिए खरीदता हूं तथा कई बार पढ़ता हूं। आपका आलेख बहुत ही साहस एवं सच्चाई के साथ बिना किसी लाग-लपेट का लिखा जाता है। सितम्बर 2019 अंक का संपादकीय ''आरक्षण से सिर्फ राजनेताओं का विकास'' में आपने जमीनी हकीकत को लिखने का काम किया है। आरक्षण का लाभ वास्तविक रूप में नीचले स्तर के लोगों तक नहीं पहुंच सका। भले ही योजनाओं का लाभ मिला लेकिन नौकरी के क्षेत्र एवं खास जगहों पर वहीं लोग लाभांवित होते रहे जो राजनीतिक रूप से सक्षम थे। आरक्षण का लाभ लेकर राजनेताओं ने अपनी सात पीढ़ी को जरूर कामयाब बना दिया। मुझे यह संपादकीय बहुत ही सटीक एवं वास्तविक लगा।

● **महेन्द्र पासवान, अम्बेडकर नगर, नई दिल्ली**

अन्दर के पन्नों में

14

A Brief History.....32

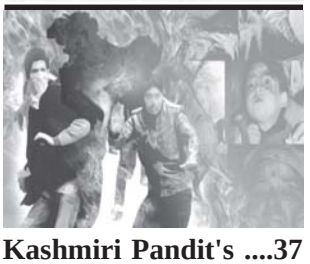
Kashmiri Pandit's 37

श्री चन्द्र प्रकाश सिंह

प्रधान संरक्षक सह प्रबंध संपादक **'केवल सच'** पत्रिका
एवं 'केवल सच टाइम्स' द्विभाषीय मासिक पत्रिका
प्रदेश अध्यक्ष, बिहार राष्ट्रीय मजदूर कांग्रेस (इंटक)
पूर्व निदेशक सदस्य, ओरियेंटल बैंक ऑफ कॉमर्स
09431016951, 09334110654

मुख्य संरक्षक के लिए आमंत्रण

मुख्य संरक्षक के लिए आमंत्रण

संपादकीय व प्रधान कार्यालयः-

- पूर्वी अशोक नगर, रोड नं:-14, मकान संख्याः- 28/14, कंकड़बाग,पटना-800020(बिहार)
  e-mail:- kewalsach@gmail.com,
  editor.kstimes@rediffmail.com
  kewalsach_times@rediffmail.com
- स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक ब्रजेश मिश्र द्वारा जय हिन्द प्रेस कंकड़बाग पटना-800020 से मुद्रित एवं पूर्वी अशोक नगर, रोड नं. 14, कंकड़बाग पटना-800020 से प्रकाशित, संपादक- ब्रजेश मिश्र। **RNI NO.- BIHBIL/2011/49252**
- पत्रिका में प्रकाशित समाचारों से संपादक की सहमति आवश्यक नहीं है।
- सभी प्रकार के वाद - विवादों का निपटारा पटना न्यायालय के अधीन होगा।
- आलेख पर किसी को कोई आपत्ति हो तो एक महीने के भीतर खंडन करें।
- किसी भी लेख के लिए रचनाकार/लेखक स्वयं जिम्मेवार होंगे।
- सभी पद अवैतनिक हैं।
- विज्ञापन की सत्यता की जाँच आप अपने स्तर पर कर लें।
- फोटो-समाचार साभार भी (माध्यम- इंटरनेट एवं अन्य स्त्रोत)
- कोई भी शिकायत हमारे पते पर लिखकर भेजें।
- **विज्ञापन का भुगतान चेक या ड्राफ्ट एवं RTGS से ही मान्य होगा।**
- भुगतान BRAJESH MISHRA को ही करें। किसी प्रतिनिधि को नगद न दें।
- A/C No. :- 20001817444
  BANK :- State Bank Of India
  IFSC Code :- SBIN0003564
  PAN No. :- AKKPM4905A

एक नजर इधर भी

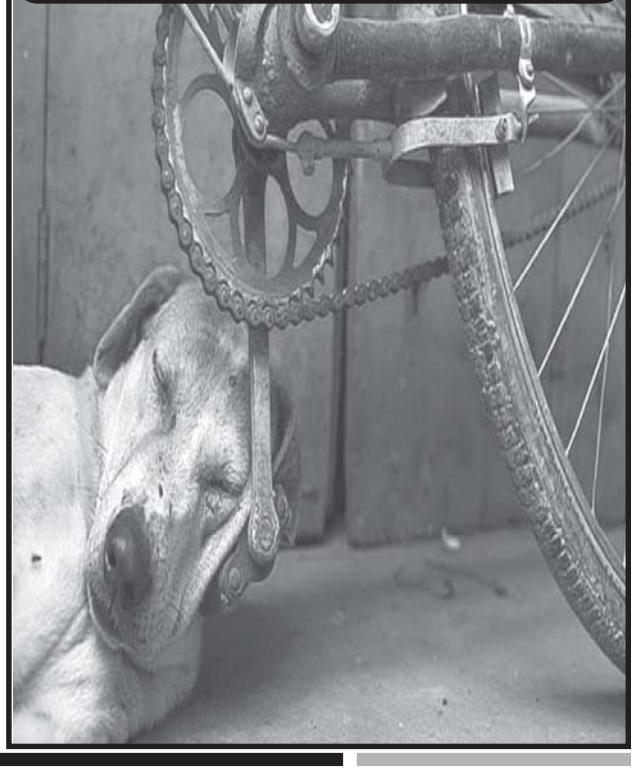

Contributions/Donations are Invited for the Welfare of Elders/Sr. Citizens for the establishment of "APNA GHAR" A home for Sr. Citizens of Bihar & Jharkhand Proposed to be Constructed Under the ageas of " KEWAL SACH SAMAJIK SANSTHAN".

KEWAL SACH SAMAJIK SANSTHAN

Registered Under the Indian Society Act 21, 1880

East Ashok Nagar, Road No.-14,
Kankarbagh, Patna - 800020

Contact No. :- 09431073769, 9955077308, 9308727077

E-mail :- kewalsachsamajiksansthan33@gmail.com

Reg. No. : 1141 (2009-10), Income Tax No. :12AA/2505-8 | 80 जी (5)/तक०/2013-14/1060-63

APNA GHAR

Now in the State of Bihar & Jharkhand

Help the helpless Elders/Sr. Citizen. For which your Contribution and Donation are essential.
Your Coopertation in this direction can make a diffrence in the lives of many Sr. Citizens.

KEWAL SACH SAMAJIK SANSTHAN

A/C No.	-	**0600010202404**
Bank Name	-	**United Bank of India**
IFSC Code	-	**UTBIOKKB463**
Pan No.	-	**AAAAK9339D**

ह्यूस्टन में मोदी-मोदी की गूंज

● अमित कुमार

विश्वभर के सारे भारतीयों की निगाहें ह्यूस्टन में होने वाले मोदीजी के हाउडी मोदी कार्यक्रम पर गड़ी थी। पिछले कुछ वर्षों की कूटनीतिक उपलब्धियों में यह एक और महत्वपूर्ण कड़ी थी, जब भारतीय प्रधानमंत्री और अमेरिकी राष्ट्रपति वहां एक ही सार्वजनिक मंच को साझा कर रहे थे। यह भारत सरकार की सफल कूटनीति का ही परिणाम है कि राष्ट्रपति ट्रम्प ही नहीं वरन उनके साथ अमेरिका के दोनों प्रमुख राजनीतिक दलों के महत्वपूर्ण नेता भी इस कार्यक्रम में शिरकत कर रहे थे। साथ ही, बधाई के पात्र वे सभी प्रवासी भारतीय भी हैं जिन्होंने वर्षों से कड़ी मेहनत करके और बड़ी शिद्दत के साथ विदेशों में अपने देश भारत का नाम ऊँचा किया है। सच तो यह है कि मोदी जी ही पहले ऐसे भारतीय प्रधानमंत्री हैं जिन्होंने हर देश में जाकर प्रवासी भारतीयों के इन प्रयासों को मान्यता दी और सराहना की। यही कारण है कि मोदीजी प्रवासी भारतीयों के बीच इतने लोकप्रिय हैं। यह भी उल्लेखनीय है कि वे ही पहले प्रधानमंत्री हैं जो विदेशों में आम भारतीयों से मुखातिब होते हैं। मोदी जी से पहले के प्रधानमंत्री भी भारतीय समुदाय से मिलते तो थे, किंतु उनका मिलना एक अत्यंत सीमित समूह से और मात्र औपचारिकता निभाने भर के लिए होता था। यहां जानने योग्य बात यह भी है कि अमेरिका में संसार के कई देशों की सरकारें भारी रकम देकर अमेरिकी सलाहकारों और अमेरिका के पूर्व राजनयिकों को नियुक्त करती हैं ताकि वे अमेरिकी सरकार के समक्ष उन देशों का हित रखें और अमेरिकी सांसदों को उनके पक्ष में जोड़ें। पाकिस्तान भी उन देशों में से एक है। अब सोचिए कि ह्यूस्टन के इस प्रोग्राम के बाद भारत को क्या आवश्यकता होगी कि भारी पारिश्रमिक पर किसी सलाहकार को नियुक्त करे जो भारत के पक्ष को अमेरिका के सामने रखे। वहां तो पूरा अमेरिका उठकर आ रहा है भारत की बात सुनने को। हर एक प्रवासी भारतीय, अमेरिका में या दुनिया में कहीं भी हो वह भारत का प्रतिनिधित्व करता है और अपने आचरण और उपलब्धियों से उस देश पर अपने देश की मुहर लगाता है। दुबई में भी यहां के शेखों के मुंह से हमने भारतीय नागरिकों के लिए अनेकों बार तारीफें सुनी हैं यह कि भारतीयों से बेहतर अनुशासित और कानून का सम्मान करने वाली कोई और कौम नहीं है, वहीं पाकिस्तान एवं कुछ अन्य देशों के नागरिक तो ड्रग्स, स्मगलिंग, चोरी आदि के धंधे में लिप्त होते हैं जो विदेशी सरकारों के लिए सिरदर्द तो होते ही हैं, अपने देश के लिए भी शर्मिंदगी का एक सबब होते हैं।

माना जा रहा था कि प्रधानमंत्री के लिए ह्यूस्टन का यह मंच पाकिस्तान को आड़े हाथों लेने के लिए एक विस्फोटक मंच साबित हो सकता है, किंतु यदि वे एक विश्व नेता के रूप में सम्बोधित करें तो शायद ऐसा नहीं करें क्योंकि अभी तक उन्होंने पाकिस्तान को जिस तरह से नजरअंदाज किया है और इमरान के बयानों की जिस तरह घोर उपेक्षा की है उससे इमरान खुद ही बेइज्जत हो चुके हैं। उनकी ओर से हो रही निरंतर अपशब्दों की बौछार भी प्रधानमंत्री को डिगा नहीं पाई। यद्यपि इमरान खान की जितनी भर्त्सना की जाए उतनी कम है क्योंकि उन्होंने राजनयिक मर्यादाओं और अभद्र भाषा के सारे मानदंड तोड़ दिए हैं। कायर और हिटलर से लेकर न जाने कितने आपत्तिजनक विशेषणों से वे उन्हें संबोधित कर चुके हैं। दूसरी ओर मोदीजी की तरफ से अभी तक इमरान के लिए कोई अपशब्द नहीं निकला है। यही वजह है कि इमरान की तड़प बढ़ती जा रही है और वे जरासंध की तरह लगातार जहर उगल रहे हैं। हालात यहां तक पहुंच चुके हैं कि पाकिस्तान का वजीरे आजम होते हुए भी उन्हें न झूठ बोलने का खौफ है न खुदा का। वे हर नुक्कड़ पर परमाणु युद्ध की धमकी दे रहे हैं और हाल यह है कि भारत सहित दुनिया के किसी देश में उनके बयानों को कोई तबज्जों नहीं मिल रही। न्यूयॉर्क टाइम्स में छपे इमरान के एक लेख को विभिन्न देशों के अखबारों ने छापा था। इस लेख में उन्होंने तथ्यों को तोड़

मरोड़कर कर प्रस्तुत किया था। उस लेख की कवरेज को लेकर इमरान बड़े उत्साहित थे और उम्मीद कर रहा थे कि इस पुलंदे के जरिए वे दुनिया में अपने झूठ को पैर लगा देंगे, किन्तु जब भारत के विदेश मंत्री जयशंकर से इमरान के इस लेख पर प्रतिक्रिया पूछी गई तो उन्होंने कहा कि मुझे समय ही नहीं मिला उसे पढ़ने का। इससे अधिक बेइज्जती और क्या हो सकती थी। हालांकि मोदीजी से उम्मीद तो यही की जा रही थी कि वे एक विश्व नेता की तरह अमेरिका सहित विश्व को संबोधित करेंगे। सन् 1893 में नरेंद्र (विवेकानंद) ने अमेरिका के शिकागो में भारतीय अध्यात्म की अमिट छाप जिस तरह छोड़ी थी उसे आज भी दुनिया भूली नहीं है। वैसा ही मौका आज नरेंद्र भाई के पास भी था और उन्होंने यह कर दिखाया।

गौरतलब हो कि पांच साल पहले जब नरेंद्र मोदी ने 'भारत मां की जय' और अपने नाम के नारों के बीच अमेरिका की धरती पर पहली बार भारत के प्रधानमंत्री के तौर पर कदम रखा था, तब बहुत से लोगों ने इसे बड़ा उत्साह और जोखिम भरा काम बताया था। न्यूयॉर्क के मैडिसन स्क्वेयर गार्डन में जुटी भारी भीड़ ने जब मोदी का रॉक स्टार की तरह स्वागत किया था तो उसे उस नेता की जीत के तौर पर देखा गया था जिसे अमेरिका करीब एक दशक तक वीजा देने से इंकार करता आया था। नरेंद्र मोदी टेक्सस के ह्यूस्टन में उससे कहीं ज्यादा बड़ी भीड़ को संबोधित किया। जब वो भाषण दे रहे थे, तब उनकी बगल में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनल्ड ट्रंप भी मौजूद थे। कई विश्लेषक यह मान रहे थे कि इस दृश्य के जरिए मोदी कश्मीर पर अपने विवादास्पद कदम की अंतरराष्ट्रीय आलोचना को कुछ हद तक कम कर पाएंगे। इस आयोजन का नाम हाउडी मोदी रखा गया था। इसमें 50 हजार से अधिक लोग पहुंचे थे। बहरहाल नरेंद्र मोदी और ट्रंप का इस तरह से एकसाथ मौजूद रहना मोदी की पीआर टीम की जीत के तौर पर भी देखा गया। मगर यह आयोजन भारत और अमेरिका के आपसी संबंधों की बढ़ती अहमियत की गवाही भी देता है। ओबामा के कार्यकाल में विदेश मामलों की सहायक मंत्री रहीं निशा बिस्वाल बताती हैं, कि यह भारतीय मूल के अमरीकी समुदाय की ताकत को दर्शाता है। निशा के मुताबिक राष्ट्रपति डोनल्ड ट्रंप का टेक्सस जाने का फैसला एक अच्छी बात है। इन दिनों अमेरिकी-भारतीय व्यापार परिषद की प्रमुख निशा बिस्वाल बताती हैं, भारत-अमेरिका संबंध अब व्यक्तिगत और राजनीतिक स्तर से कहीं आगे बढ़ चुके हैं। इवेंट का आयोजन कर रही टैक्सस इंडिया फोरम ने डेमोक्रेट्स नेताओं को भी आमंत्रित किया है। इनमें स्टेने होयर और अन्य कांग्रेस सदस्य भी शामिल हैं। इसके अलावा आमंत्रित मेहमानों में कई अमेरिकी अधिकारी और गवर्नर भी शामिल हैं। रिपब्लिकन और डेमोक्रेट्स, दोनों के प्रतिनिधियों के बीच संतुलन का ध्यान रखा गया है। हालांकि आयोजन के लिए ह्यूस्टन को ही चुने जाने पर भी किसी को अचरज नहीं हो रहा है। भारत ह्यूस्टन का चौथा सबसे बड़ा कारोबारी साझेदार है। ऊर्जा की बढ़ती मांग को देखते हुए आने वाले दिनों में अमरीकी तेल और गैस की बिक्री भी बढ़ने की उम्मीद की जा रही है। भारत के लिहाज से यह अमरीका के साथ अपने संयुक्त व्यापार घाटे को कम करने का मौका होगा, जो ट्रंप के लिए एक बड़ा मुद्दा बन चुका है। दोनों देश पिछले डेढ़ साल से चले आ रहे अपने कारोबारी मतभेदों को भुलाकर कुछ नई घोषणाएं भी किये गये।

अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप खुद भव्य प्रदर्शन और भारी भीड़ को पसंद करते हैं। यह आयोजन एक तरह से अगले साल होने वाले राष्ट्रपति चुनाव के लिए भारतीय अमेरिकियों को भी रिझाने का मौका उपलब्ध करा रहा है। पत्रकारों से बात करते हुए अमेरिकी राष्ट्रपति ने कहा था कि उनके लिए (मोदी के लिए) भारी भीड़ आ रही है। मुझे उम्मीद है कि वहां ज्यादा बड़ी भीड़ पहुंचेगी, क्योंकि उन्होंने अभी केवल घोषणा की है और पूछा है कि क्या मैं जाऊंगा। मैं वहां जाऊंगा। अमेरिका में भारतीय मूल के लोगों की संख्या 32 लाख है, जो अमेरिका की कुल आबादी का एक ही प्रतिशत है, लेकिन यह समुदाय अमरीका के सबसे धनी समुदायों में एक है। इनमें से अधिकांश डेमोक्रेट समर्थक हैं। एशियन अमेरिकन लीगल डिफेंस एंड एजुकेशन फंड के सर्वेक्षण के मुताबिक 2016 के चुनाव में इन लोगों ने हिलेरी क्लिंटन को वोट दिया था। राष्ट्रवादी नजरिए और भारत की महानता को फिर से स्थापित करने के वादे के चलते इस समुदाय में नरेंद्र मोदी बेहद लोकप्रिय हैं। मदान बताती हैं, मुझे भरोसा है कि रिपब्लिकन पार्टी के लोगों को उम्मीद होगी कि इसमें कई लोग पाला बदलकर उन्हें वोट देंगे। कई विश्लेषकों ने इस आयोजन को दोनों नेताओं के लिए फायदेमंद बताया है लेकिन हर कोई इसको लेकर बहुत उत्साहित नहीं है। वही इनके आलोचकों की माने तो मोदी की यात्रा उनके सरकार के उस फैसले के कुछ दिनों के बाद हो रही है जिसमें मुस्लिम बहुल कश्मीर के विशेष दर्जे को खत्म कर दिया गया है और उस इलाके में संचार व्यवस्थाओं पर पाबंदी लगी हुई है। भारत सरकार के इस फैसले से पड़ोसी पाकिस्तान के साथ तनाव बढ़ा है। पाकिस्तान भी इस हिस्से पर अपना दावा जताता रहा है। इसके अलावा मुस्लिम संगठन और मानवाधिकार कार्यकर्ता भी इस फैसले की आलोचना कर रहे हैं।

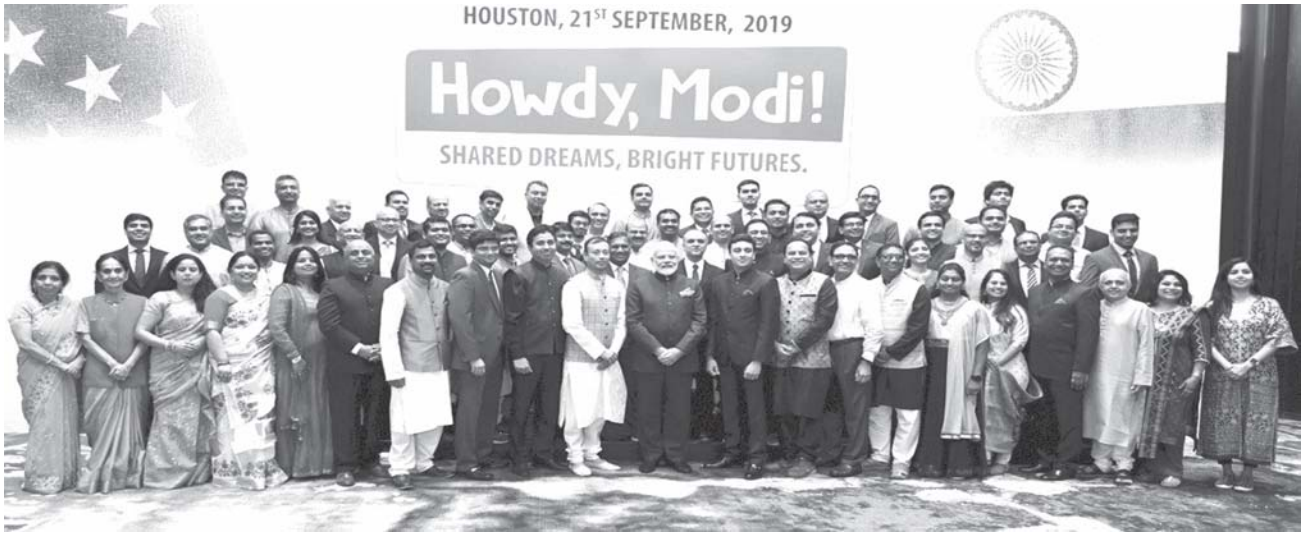

भारतीय-अमेरिकी समुदाय की कांग्रेस सदस्य प्रमिला जयपाल सहित कई अमरीकी कांग्रेस प्रतिनिधियों ने इस आयोजन को लेकर अपनी चिंता जताई है। सामाजिक कार्यकर्ता इस बात को लेकर चिंतित हैं कि फ्री वर्ल्ड के नेता अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप जब मोदी के साथ खड़े होंगे तो इससे यह संदेश जाएगा कि ट्रंप मोदी की नीतियों के साथ खड़े हैं। मानवाधिकार मामलों के वकील और सामाजिक कार्यकर्ता अर्जुन सेठी बताते हैं, यह एक गलत कदम है, ट्रंप को वहां नहीं होना चाहिए। अजुर्न सेठी कहते हैं, हमें हाउडी मोदी की जगह गुडबाय मोदी कहना चाहिए।

ह्यूस्टन के एनआरजी स्टेडियम में 22 सितंबर को अमेरिका में बसे 50 हजार भारतीयों और कई अमेरिकी सांसदों, सेनेटरों, गवर्नरों, मेयरों और कारोबारियों के सामने हाउडी मोदी का मेगा शो हुआ, जिसकी टैग लाइन थी-साझा स्वप्न, सुनहरा भविष्य। वो किसी रॉक कंसर्ट से कम नहीं था। वहां लोगों का हुजूम था, चमक-दमक थी, संगीत था, नृत्य था और थी नारेबाजी- मोदी! मोदी! ये एक ऐसा शो था, जिसे देख शायद खुद जबरदस्त शोमैन समझे जाने वाले पूर्व टीवी होस्ट डोनाल्ड ट्रंप और भारतीय फिल्मी सितारों अमिताभ बच्चन, शाहरुख खान और सलमान खान को भी जलन होती होगी। इस आयोजन में साफ दिखा कि अमेरिका में बसे भारतीय समुदाय के लोगों पर मोदी का चुंबकीय असर है। यह समुदाय एक तरफ तो अमेरिका के संपन्न समुदायों में एक है, जिसके पास वित्तीय, राजनीतिक और संगठनात्मक स्तर पर संसाधनों की कमी नहीं हैं, वहीं दूसरी ओर यह अपनी भारतीय जड़ों यानी धार्मिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक रूप से बेहद गहरे ढंग से जुड़ा हुआ है। यह समुदाय भारतीय योग से लेकर भारतीय नृत्य और फिल्म संगीत को भी अपने भीतर समाहित कर लेना चाहता है। सबसे बड़ी बात यह है कि इस समुदाय को अपनी भारतीयता पर गर्व है। इन सबके बावजूद मोदी का जिस गर्माहट और उत्साह से स्वागत किया गया वह अविश्वसनीय रहा। मगर जब पर्दा गिरा, चमकती बत्तियां बंद हो गईं, तो सबसे बड़ा सवाल यही है कि हाउडी मोदी का असल विजेता कौन है- ट्रंप या मोदी? दोनों ही नेता, जो इतने अलग होकर भी एक जैसे हैं, वे इस साझा मंच से कई उद्देश्यों को साधने की कोशिश कर रहे थे। अंतरराष्ट्रीय राजनीति में अपना कद ऊंचा करना, अपने समर्थकों में अपनी दमदार पहचान को मजबूती से पेश करना, प्रतिद्वंद्वी देशों को संदेश देना, चुनावी फायदे के लिए राजनीतिक पकड़ बनाना, द्विपक्षीय संबंधों में व्यापार, कारोबार, रक्षा और निवेश से जुड़े मुद्दों पर समझ बढ़ाना और चीन, रूस, अफगानिस्तान, ईरान, पाकिस्तान से जुड़े मुद्दों पर अच्छे समझौतों के लिए माहौल बनाना और आतंकवाद पर लगाम लगाना। मोदी के ह्यूस्टन के ऊर्जा सेक्टर में की गई पहली बातचीत से पेट्रोनेट लिक्विड नेचुरल गैस (एलएनजी) का अमेरिकी बेहेमोथ- टेल्यूरियन इंक से समझौता हुआ है जिसके तहत पेट्रोनेट हर साल अमेरिकी कंपनी से पांच मिलियन टन एलएनजी आयात करेगी। इस एक समझौते ने ही व्यापार असंतुलन को लेकर ट्रंप की घबराहट को काफी हद तक कम कर दिया होगा। ट्रंप इस डील से बेहद खुश दिखाई दिए और उन्हें उम्मीद होगी कि दोनों देशों के बीच रक्षा और ऊर्जा सेक्टर में तेजी से वृद्धि हो। उन्होंने इस मौके पर अमेरिका में, खासकर स्टील उद्योग क्षेत्र में निवेश करने वाली भारतीय कंपनियों की भी प्रशंसा की।

बताते चले की इस मेगा इवेंट में भारतीय मूल के अमेरिकियों ने ट्रंप का शानदार स्वागत किया। इससे यह भी पता लगता है कि ट्रंप की अपनी छवि भी बेहतर हुई है, जो अप्रवासियों के मुद्दों पर उनके भाषणों और आदेशों के चलते काफी प्रभावित हुई थी, उनके आदेश को विभिन्न अदालतों में चुनौती भी मिल चुकी है। भारत अमेरिका से पेट्रोलियम, गैस और रक्षा उपकरणों को खरीदना चाहता है और कारोबार को देखकर अमेरिकी राष्ट्रपति अपने तीखे टैरिफ पर कुछ समय तक नियंत्रण रख सकते हैं। जिस दिन प्रधानमंत्री मोदी अमेरिका रवाना हो रहे थे उसी दिन भारत में कॉर्पोरेट टैक्स में काफी कटौती की घोषणा को अमेरिका में पॉजिटिव नजरिए से देखा गया है। मोदी ने अपने संबोधन में ट्रंप के मजबूत नेतृत्व और अमेरिका को फिर से महान बनाने के प्रति उनके पैशन की प्रशंसा की। उन्होंने यह भी उम्मीद जताई कि ट्रंप अमेरिका और दुनियाभर के लिए काफी कुछ हासिल कर रहे हैं। इसके अलावा मोदी ने चरमपंथ के खिलाफ भारत की लड़ाई में साथ देने के लिए भी उनको धन्यवाद दिया। वहीं निजी तौर पर, मोदी ने ट्रंप को गर्मजोशी से भरा, दोस्ताना, ऊर्जा से भरा और सहज रूप से उपलब्ध बताया। मोदी ने ट्रंप के दूसरे कार्यकाल के लिए भी 'अबकी बार ट्रंप सरकार' कहकर ट्रंप का दिन बना दिया। मोदी ने अपने संबोधन के अंत में कहा कि हम लोग नया इतिहास बनते हुए देख रहे हैं और एनआरजी स्टेडियम में उत्साह और जोश से नई कैमेस्ट्री भी बन रही है। ट्रंप ने अपने जवाबी संबोधन में मोदी को अमेरिका का सबसे प्रतिबद्ध और भरोसेमंद दोस्त बताया। उन्होंने भारतीय चुनाव में ऐतिहासिक जीत हासिल करने के

लिए मोदी की प्रशंसा की और कहा कि कई आर्थिक सुधारों को लागू करके मोदी वाकई में भारत के लिए अद्भुत काम कर रहे हैं। उन्होंने यह भी कहा कि मोदी ने भारत में लाखों लोगों को गरीबी से बाहर निकाला है। उन्होंने इस मौके पर अमेरिका में बसे करीब 40 लाख शानदार भारतीयों के प्रति गहरा आभार जताते हुए कहा कि यह समुदाय अमेरिकी संस्कृति और अमेरिकी वैल्यू को समृद्ध बना रहा है। वही मोदी ने अपने भाषण में अपनी कई उपलब्धियों का जिक्र किया, लेकिन सबसे अहम यह रहा है कि उन्होंने ट्रंप की मौजूदगी में अनुच्छेद 370 को फेयरवेल देने की बात कही। उनकी इस घोषणा से यह स्पष्ट है कि जम्मू और कश्मीर पर हालिया फैसला भारत का आंतरिक मामला है और अमेरिका भी इस बात को मान रहा है। ट्रंप ने सार्वजनिक तौर पर पूछा कि क्या उन्हें मुंबई के पहले एनबीए मैच को देखने के लिए आमंत्रित किया जाएगा और उन्होंने ये भी संकेत दिया कि वे आ सकते हैं। इससे अंदाजा होता है कि वे निकट भविष्य में भारत की यात्रा कर सकते हैं। किसको क्या पता मोदी ट्रंप को अगले साल गणतंत्र दिवस के मौके पर उन्हें मुख्य अतिथि के तौर पर भी निमंत्रित कर सकते हैं। मोदी और ट्रंप अपने अपने समर्थकों के पास जाकर दावा कर सकते हैं कि यह आयोजन उनकी जीत रही। इस मेगा इवेंट का एक संदेश तो साफ है कि अब भारत-अमेरिका के आपसी संबंध, कई मुद्दों पर मतभेद के बाद भी नई ऊंचाइयों तक पहुंच गए हैं। दोनों देशों को इस संबंधों से फायदा ही होना है। मोदी निजी बातचीत में बताते हैं कि ट्रंप उन्हें मोल-तोल करने के लिहाज से मुश्किल नेता बताते हैं लेकिन अमेरिकी राष्ट्रपति डील करने के लिहाज से माहिर नेता हैं और मैं उनसे सीख रहा हूं। उम्मीद है कि अगले कुछ दिनों में दोनों नेता कारोबारी समझौतों की घोषणा कर सकते हैं जिससे भारत और अमेरिका दोनों के हित सधेंगे। एनआरजी स्टेडियम में दोनों नेताओं की कैमेस्ट्री से यही जाहिर होता है कि अच्छी चीजें भविष्य में आने वाली हैं। इस आयोजन ने मौजूदा दौर के ग्लोबल प्रभावशाली नेताओं की कतार में ला दिया है।

विडम्बना है कि भारत के एक छोटे से राज्य गोवा से दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के प्रधानमंत्री और दुनिया के सबसे ताकतवर लोकतंत्र के राष्ट्रपति की मुलाकात के बारे में लिखना, एक अजीब विरोधाभासी स्थिति है। हालांकि, इसमें कुछ समानताएं भी हैं। ह्यूस्टन में तूफान और बारिश का खतरा है और दोनों नेताओं के मिलने का ऐतिहासिक क्षण भी करीब है। गोवा में भी भारी बारिश और तूफान है और यहां भी राज्य के युवाओं ने हाल ही में कुछ ऐतिहासिक किया है। लेकिन, गोवा के बारे में किसी और लेख में बात करेंगे। फिलहाल बात ह्यूस्टन और हाउडी मोदी की। इस वक्त का बड़ा सवाल ये है कि आखिरकार हाउडी ह्यूस्टन बना कैसे? क्या ये वैश्विक परिदृश्य में भारत की उपस्थिति दिखाता है? इससे ज्यादा महत्वपूर्ण ये कि ये सबकुछ तब हो रहा है, जब भारत-अमेरिका के बीच कारोबार को लेकर तनाव है, कश्मीर को लेकर बड़ी-बड़ी बयानबाजी हो रही है। ऐसे में अमेरिका में उठी इस भारतीय लहर के क्या कुछ नतीजे होंगे या ये आधुनिक समय, डिजिटल राजनीति का महज एक नाटक बनकर रह जाएगी जिसमें आभासी (वर्चुअल) होना ही असलियत लगता है और असलियत ही अवास्तविकता बन जाती है। इस पर एक किताब लिखने की जरूरत है, लेकिन यहां इसका सार है। इसमें कोई शक नहीं कि जो ह्यूस्टन की शाम को होने जा रहा है, वो इतिहास में पहली बार है। हाउडी मोदी कार्यक्रम में 50 हजार अमेरिकियों के आने की उम्मीद जतायी जा रही थी। साथ ही वहां ऐसा पहली बार ऐसा हुआ कि कोई अमेरिकी राष्ट्रपति ऐसे कार्यक्रम में शामिल हुआ, जिसे राजधानी से बाहर दूसरे देश के प्रधानमंत्री संबोधित कर रहे हैं। इस कार्यक्रम को दोनों देशों के बीच उभरते हुए घनिष्ठ आर्थिक और सामरिक संबंधों के प्रदर्शन के तौर पर दिखाया गया। लेकिन डिजिटल युग में कूटनीति का ये दिखावा बंद कमरे में होने वाली वास्तविक राजनीति के आगे असफल हो जाता है। हकीकत वो है, जो उस बंद कमरे में तय होती है और जो हमेशा से एक मुश्किल काम रही है। अमेरिका में राष्ट्रपति चुनाव होने वाले हैं और ऐसे में अमेरिका में दूसरे वर्गों से ज्यादा तेजी से बढ़ रहे एशियाई समुदाय से मिलने वाले फायदे को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। अमेरिकी में मौजूद इस 20 प्रतिशत एशियाई समुदाय का झुकाव अमूमन डेमोक्रेट्स की तरफ रहा है। इस समुदाय में भारतीय भी शामिल हैं। अगर इस समुदाय का थोड़ा भी झुकाव रिपब्लिकन पार्टी की तरफ जाता है तो इससे ट्रंप को बड़ा फायदा मिलने की उम्मीद है। हालांकि अभी इसके बारे में कुछ भी कहना जल्दबाजी है, क्योंकि राजनीति में कुछ भी निश्चित तौर पर नहीं कहा जा सकता। नरेन्द्र मोदी को डोनाल्ड ट्रंप की और ज्यादा जरूरत है, क्योंकि अपने देश में कांग्रेसमुक्त भारत बनाने के नाम पर की जा रही उनकी राजनीति पर विरोधी सवाल उठा रहे हैं। उनकी इस राजनीति का सबसे बड़ा उदाहरण गोवा में है, जहां लगभग पूरा विपक्ष सत्ताधारी पार्टी में शामिल हो गया। इस तरह लोगों की भलाई के नाम पर असलियत आभासी बन गई है। साथ ही कश्मीर से धारा 370 हटाने के विवादित फैसले के बाद सरकार को शक्तिशाली देशों को अपने पक्ष में खड़ा दिखाना है। ह्यूस्टन में हो रही राजनीति बस इसी के इर्द-गिर्द है। लेकिन इसके पीछे अर्थव्यवस्था भी एक कारण है। बढ़ते संरक्षणवाद के बीच टूटती, सुस्त और व्यापार युद्ध जैसी स्थितियां झेलती वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं के बीच विश्व व्यापार संगठन का सभी पक्षों को ध्यान में रखने का तरीका अब पुराना हो रहा है। अब इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि सभी की भलाई के लिए व्यापार में सहयोग व समझौते को कितना उदार बनाया जा सकता है, क्योंकि आज अपने हितों को देखते द्विपक्षीय संबंध ही हकीकत बन गए हैं। ऐसा नहीं है कि ये वैश्विक आर्थिक संस्थानों की जगह लेने वाले हैं। वो संस्थान जिन्होंने अराजक अंतरराष्ट्रीय प्रणाली में कुछ स्थिरता और समन्वय लाने की कोशिश की है, लेकिन व्यावहारिक द्विपक्षीय संबंध ही वास्तविकता बनने जा रहे हैं, जो अलग-अलग मामले के अनुसार बदल सकते हैं। व्यापार युद्ध की स्थिति में पहुंचे अमेरिका और चीन के बीच तब नरमी दिखने लगी, जब दोनों को बड़े नुकसान की आशंका दिखाई दी। यही बात भारत और अमेरिका के बीच भी है। डाटा सुरक्षा कानून को लेकर तनातनी के बावजूद भी दोनों देशों के बीच व्यापार और निवेश अब भी जारी है। उदार सोच रखने वाले इस बात से राहत महसूस कर सकते हैं कि सभी देशों को एक-दूसरे की जरूरत है, क्योंकि अब अर्थव्यवस्थाएं जुड़ी हुई हैं। अगर भारत की बात करें तो प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने लाखों भारतीयों में उम्मीदें और आकांक्षाएं पैदा करने की जबरदस्त क्षमता दिखाई है। इसे वो तभी हकीकत में बदल सकते हैं, जब वो अपने नारे 'सबका साथ सबका विकास' को लागू कर पाएं और भारत के मूल विचारों को खत्म कर रही नफरत की राजनीति को रोक पाएं। उनके पास इसे करने के लिए अब भी समय है और वो इतिहास रच सकते हैं। इसी तरह डोनाल्ड ट्रंप को चुनाव के लिए अप्रवासियों के वोट की जरूरत महसूस हो रही है और इसी को देखते हुए वे भी कुछ घोषणाएं कर सकते हैं। इसलिए हाउडी मोदी दोनों देशों के बीच समान झुकाव वाला मैच है, जो किसी भी तरफ जा सकता है। ये पुराने घिसेपिटे रवैये से निकल दोनों देशों को द्विपक्षीय, क्षेत्रीय और वैश्विक स्थिरता के महत्वपूर्ण युग में ले जा सकता है या फिर ये झगड़े और अराजकता को और बढ़ावा मिल सकता है। हालांकि ये इस पर निर्भर करेगा कि दोनों नेता क्या चुनते हैं? ●

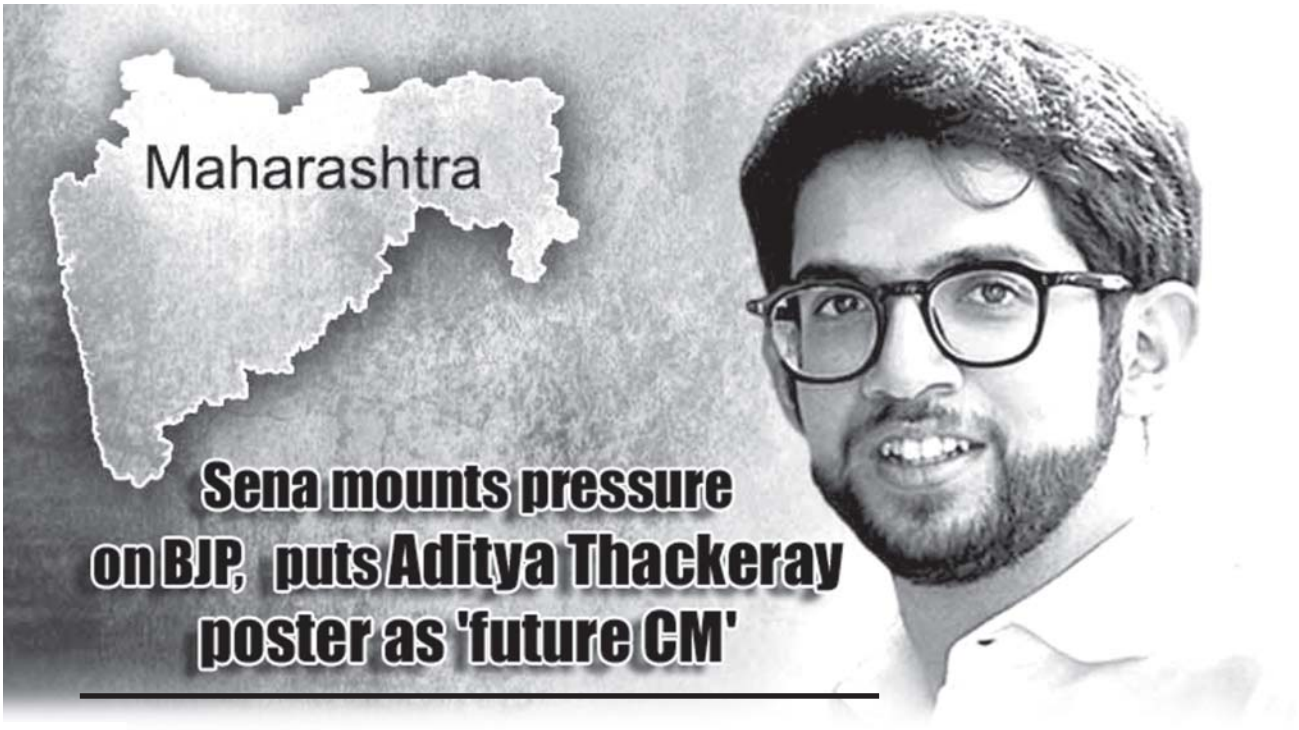

Sena mounts pressure on BJP, puts Aditya Thackeray poster as 'future CM'

Shiv Sena, oldest ally of BJP and a key partner in Maharashtra, continues to mount pressure on the Lotus party on its 50:50 power share formula and put out poster on Friday hailing Aditya Thackeray as 'future Chief Minister'. Sena chief Uddhav Thackeray on Thursday hinted that all may not be so well with its longtime partner BJP. "We have been accommodating during the Lok Sabha elections. But I can't keep doing that anymore. I have to make sure my party flourishes," he said tongue-in-cheek.On Friday morning in its editorial in party mouthpiece 'Saamna', the party sought to warn all stake holders not to display 'arrogance of power'. It said the verdict in Maharashtra, which has again returned BJP-Sena to power with reduced tally, has rejected a perception that elections can be won by engineering defections and splitting opposition parties.It

said while questions were raised earlier that if the Sharad Pawar-led NCP had any future, but the poll mandate showed - "the NCP bounced back" crossing the 50-seat mark, while Congress won 44 seats.

"The results were a warning to rulers not to show arrogance of power".Sena could be interested for an arrangement under which Aditya Thackeray may get Chief Ministerial post after two-and-half years. It could also ask for the post of Speaker. The BJP won 100 seats and is leading on 5 while the Sena has bagged 57 seats.Notably for BJP, the show was not as splendid as expected from Nagpur, the hometown of Chief Minister Devendra Fadnavis and also BJP stalwart Nitin Gadkari's parliamentary constituency. Of the 12 seats in Nagpur district, the BJP could win six, the Congress four, the NCP one and an independent one. Nagpur city and Nagpur rural went to Congress. Nagpur, the hometown of Chief Minister of Maharashtra Devendra Fadnavis, turned out to be a tough electoral battleground for the BJP which could win just six of the 12 seats on offer in the district on Thursday.The BJP had won 11 of the 12 seats in Nagpur district in the 2014 assembly elections. Of course,Mr Fadnavis won from Nagpur South West.

बलात्कारी चिन्मयानंद

● अमित कुमार

आज का परिवेश में घुलती अनैतिकता और बेशर्म आचरण ने पुरूषों के मानस में स्त्री को मात्र भोग ही निरूपित किया है, लिहाजा ईश्वर ने नर और नारी की शारीरिक संरचना भिन्न इसलिए बनायी है, क्योंकि संसार आगे बढ़ सके ना कि भोग की वस्तु बनकर बलात्कार जैसे कृत्यों को अपनाने के लिए। विडम्बना है कि इस कुकृत्यों में समाज के वैसे लोगों का नाम आना शर्मसार करता है, जो सच्चाई के पथ पर चलकर ईश्वर में लीन होने का पाठ पढ़ाते हैं। ईश्वर में आस्था रखने की बड़ी बातें करने वाले जो मनुष्य और ईश्वर का माध्यम खुद को बतलाते हैं, आज बलात्कार जैसे घिनौने कृत्यों से जंजीरों की जकड़ में सलाखों के पीछे देखे जा सकते हैं। अब तक आसाराम और उनके पुत्र नारायण साईं एवं गुरमीत राम रहीम के नाम सुर्खियों में थें किन्तु विगत् दिनों पहले कानून की पढ़ाई करने वाली एक छात्रा ने पूर्व केन्द्रीय मंत्री स्वामी चिन्मयानंद पर बलात्कार का गंभीर आरोप लगाया है।

गौरतलब है कि छात्रा से दुष्कर्म के आरोप में घिरे पूर्व केंद्रीय मंत्री और भाजपा नेता स्वामी चिन्मयानंद को गिरफ्तार कर अदालत में पेश किया गया जहां से उन्हें 14 दिन की हिरासत में भेज दिया गया। बहरहाल, चिन्मयानंद कौन हैं एवं कितने पावरफुल है, इसके लिए इनके पृष्ठभूमि का आंकलन करना होगा। ज्ञात हो कि चिन्मयानंद का असली नाम कृष्णपाल सिंह है। वह उत्तरप्रदेश के गोंडा के परसपुर के रहने वाले हैं। कृष्णपाल का परिवार कभी छोटी रियासत का मालिक था। आज भी यहां उनके नाम कई बीघा जमीन है। परिवार कांग्रेस से जुड़ा था। उनके चचेरे भाई उमेश्वर प्रताप सिंह कांग्रेस के टिकट पर विधायक चुने गए। बहरहाल कृष्णपाल की रूचि आरएसएस

में थी और वह बचपन से ही संघ की शाखा में जाने लगे। लखनऊ विश्वविद्यालय से एमए करने वाले चिन्मयानंद ने मात्र 20 वर्ष की उम्र में घर छोड़ दिया और संन्यास के रास्ते पर चल पड़े। बताया जाता है कि वह गणतंत्र दिवस परेड देखने दिल्ली गए थे और फिर लौटकर नहीं आए। 80 के दशक में चिन्मयानंद शाहजहांपुर आए और स्वामी धर्मानंद के शिष्य के रूप में मुमुक्ष आश्रम में रहने लगे। कुछ ही सालों में वह राम मंदिर आंदोलन में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेने लेगे। इस आंदोलन ने ही उन्हें भाजपा से जोड़ा। उनका राजनीतिक सफर शुरू हो गया और देखते ही देखते उनका नाम भाजपा के कद्दावर नेताओं में शुमार हो गया। वह भाजपा के टिकट पर 3 बार सांसद का चुनाव जीता। अटल सरकार में उन्हें केंद्रीय गृह राज्यमंत्री बनाया गया। योगी आदित्यनाथ के गुरु योगी अवैद्यनाथ ने उनके बेहद करीबी संबंध रहे हैं। वह शाहजहांपुर में स्वामी शुक्रदेव लॉ कॉलेज भी चलाते हैं।

बताते चले कि शाहजहांपुर-बरेली मार्ग पर मुख्य सड़क पर ही करीब 21 एकड़ में बने मुमुक्षु आश्रम की पहचान जितनी एक धार्मिक संस्था के तौर पर होती है उससे ज्यादा ये शिक्षा के केंद्र के रूप में पहचाना जाता है। वजह ये है कि आश्रम परिसर में ही इंटर कॉलेज से लेकर पीजी कॉलेज तक पांच शिक्षण संस्थान इसी के तहत संचालित होते हैं। इसी परिसर में स्थित एसएस लॉ कॉलेज की एक लड़की से रेप के आरोपों का सामना कर रहे पूर्व मंत्री स्वामी चिन्मयानंद इस आश्रम के सर्वेसर्वा हैं। गोंडा के मूल निवासी और संन्यासी बनने के बाद हरिद्वार में रहने वाले स्वामी चिन्मयानंद की शाहजहांपुर के इस आश्रम में पहुंचने की कहानी भी कम दिलचस्प नहीं है। मुमुक्षु आश्रम की स्थापना इस क्षेत्र के मशहूर संत स्वामी शुकदेवानंद ने आजादी से पहले ही की थी। मुमुक्षु आश्रम के प्रबंधक श्रीप्रकाश डबराल बताते हैं, स्वामी शुकदेवानंद ने यहां आश्रम बनाया और संस्कृत महाविद्यालय की स्थापना की। उनके शिष्य स्वामी सदानंद, फिर धर्मानंद और आखिर में स्वामी चिन्मयानंद जी यहां के मुख्य अधिष्ठाता बने। सनद् रहे कि स्वामी धर्मानंद और स्वामी चिन्मयानंद के बीच भी कुछेक संत हुए जो मुमुक्षु आश्रम के अधिष्ठाता रहे, लेकिन उनका कार्यकाल बहुत लंबा नहीं रहा। आश्रम के संविधान के मुताबिक, यहां का प्रमुख अधिष्ठाता होता है और जितनी भी शिक्षण संस्थाएं इसके तहत चलती हैं, अधिष्ठाता उन सबका पदेन प्रमुख होता है। स्वामी चिन्मयानंद अस्सी के दशक में शाहजहांपुर आए और स्वामी धर्मानंद के शिष्य बनकर उन्हीं के आश्रम में रहने लगे। स्वामी शुकदेवानंद ने ही श्री दैवी संपद मंडल नामक एक संस्था की स्थापना की थी, जिसका मुख्यालय हरिद्वार

में है। श्रीप्रकाश डबराल के मुताबिक, श्री दैवी संपद मंडल की ओर से ही स्वामी चिन्मयानंद शाहजहांपुर के मुमुक्षु आश्रम में भेजे गए थे। दरअसल, श्री दैवी संपद मंडल ही वो मातृ संस्था है जिसके तहत मुमुक्षु आश्रम जैसे तमाम आश्रम आते हैं और इन आश्रमों के संतों का यहीं से नाता जुड़ा होता है। इस मंडल के तहत देश भर में सौ से भी ज्यादा आश्रम हैं जिनमें करीब दस आश्रम काफी बड़े हैं। ये सभी आश्रम परमार्थ, मुमुक्षु और शुकदेवानंद नाम से जाने जाते हैं। एसएसपीजी कॉलेज के प्राचार्य और मुमुक्षु आश्रम की कई संस्थाओं के प्रबंधन से जुड़े डॉक्टर अवनीश मिश्र बताते हैं कि स्वामी शुकदेवानंद की कर्मभूमि शाहजहांपुर थी। साल 1965 में अपनी मृत्यु से पहले उन्होंने एसएस डिग्री कॉलेज समेत तीन शिक्षण संस्थाओं की स्थापना की। शुकदेवानंद के शिष्य धर्मानंद थे, जिनके दो शिष्य हुए- चिदानंद और चिन्मयानंद। चिदानंद ऋषिकेश स्थित परमार्थ आश्रम के अधिष्ठाता हैं, जबकि चिन्मयानंद मुमुक्षु आश्रम और हरिद्वार स्थित परमार्थ निकेतन के। बाद में चिन्मयानंद ने ही शाहजहांपुर में मुमुक्षु शिक्षा संकुल नाम से एक ट्रस्ट बनाया, जिसके जरिए कई शिक्षण संस्थाओं का संचालन किया जाता है। इनमें पब्लिक स्कूल से लेकर पोस्ट ग्रेजुएट स्तर के कॉलेज तक शामिल हैं। इन शिक्षण संस्थाओं में से इंटर कॉलेज और एसएसपीजी कॉलेज सरकार से अनुदान प्राप्त हैं, जबकि अन्य संस्थाएं स्ववित्तपोषित हैं। इन संस्थानों के जरिए आश्रम को अच्छी खासी आमदनी होती है।

ध्यान रहे कि आश्रम की आमदनी के और भी कई स्रोत हैं। सभी शिक्षण संस्थाओं को मुमुक्षु आश्रम की ओर से 99 साल की लीज पर जमीन दी गई है। यानी इन संस्थाओं का मालिकाना हक मुमुक्षु आश्रम के ही पास है और इसके अधिष्ठाता स्वामी चिन्मयानंद हैं। स्थानीय लोग बताते हैं कि आश्रम को जमीनें यहां के लोगों ने स्वेच्छा से दान में दी थीं। इसकी वजह ये

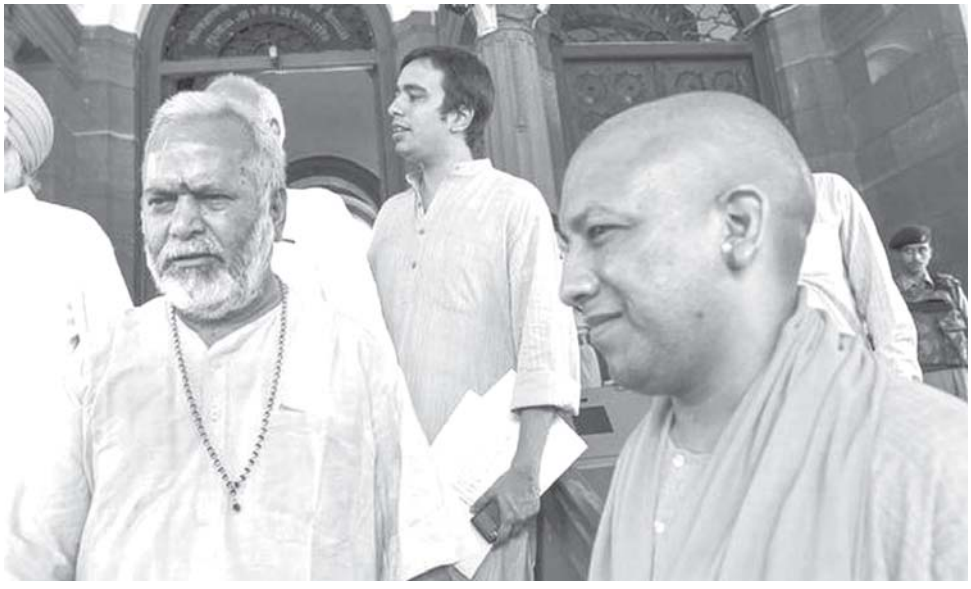

थी कि स्वामी शुकदेवानंद का यहां बेहद सम्मान था और वो क्षेत्र में शिक्षण संस्थाओं, संस्कृत कॉलेज इत्यादि की स्थापना कर रहे थे। लंबे समय तक स्थानीय लोगों के प्रतिनिधियों की भी आश्रम से संबंधित संस्थाओं में सक्रिय भूमिका रही, लेकिन 1989 में चिन्मयानंद के आने के बाद ये सिलसिला धीरे-धीरे खत्म होता गया। वही आश्रम को जमीन का एक बड़ा हिस्सा शहर के मशहूर ज्वेलर काशीनाथ सेठ ने दिया था। उनके परिजन भी इस बात की तस्दीक करते हैं, लेकिन उनका कहना है कि विवादों में होने की वजह से वो लोग संस्था से दूर रहने लगे। काशीनाथ सेठ के कुछ परिजनों से हमने बात की लेकिन उन्होंने बात करके अनावश्यक रूप से विवादों का साझीदार बनने से इंकार कर दिया। शाहजहांपुर के चौक इलाके में रहने वाले बिशनचंद सेठ यहां से सांसद भी रह चुके हैं। उनके परिजन बताते हैं कि बुजुर्गों ने भले काम के लिए जमीन दान में दे दी थी लेकिन वो लोग अब इन संस्थाओं से कोई मतलब नहीं रखते हैं। परिजन तो इस बारे में कुछ भी नहीं कहते लेकिन स्थानीय लोग बताते हैं कि इसके पीछे वजह यही है कि आश्रम से जुड़ी संस्थाओं और लोगों का विवादों में रहना एक अहम कारण है।

बताते चले कि ढ़ाई-तीन दशक पहले तक शाहजहांपुर के संभ्रांत और धनाढ्य वर्ग के लोग जिनके पूर्वजों ने जमीनें दी थीं, वो लोग भी समिति के सदस्य होते थे और बकायदा नियमित रूप से बैठकें होती थीं। लेकिन चिन्मयानंद ने धीरे-धीरे अपने लोगों को और आश्रम के कर्मचारियों को समितियों में शामिल कर लिया और पूरे आश्रम और समितियों पर एक तरह से एकाधिकार कायम कर लिया। कई बार तमाम चीजों की जांच भी हुई है, लेकिन कभी कोई जांच पूरी नहीं हुई और न ही कोई कार्रवाई हुई। संभ्रांत लोगों ने विवादों को देखते हुए खुद ही किनारा कर लिया। इसके अलावा स्वामी धर्मानंद और चिन्मयानंद के बीच शाश्वतानंद और निश्चलानंद भी इस आश्रम के मुख्य अधिष्ठाता रह चुके हैं। ये दोनों संत भी श्री दैवी संपद मंडल से ही भेजे गए थे। वही स्थानीय लोगों के मुताबिक, इन संतों की मौत भी काफी संदिग्ध रही और इसे लेकर भी कई सवाल उठे, लेकिन अब लोग ये सब भूल चुके हैं। मुमुक्षु आश्रम का उत्तराधिकारी श्री दैवी संपद मंडल से ही तय होता है। स्थानीय लोगों के मुताबिक, चिन्मयानंद की राजनीतिक पहुंच के चलते संस्थाओं का विकास भी हुआ, लेकिन इसका एक दुष्परिणाम ये हुआ कि आश्रम समेत सभी संस्थाएं एक व्यक्ति के हाथ में केंद्रित होती गईं। हालांकि संस्थाओं में शहर के आम लोग अभी भी नामित हैं, लेकिन उनकी भूमिका नाममात्र की रह गई है और ये लोग खुद भी दिलचस्पी नहीं लेते। शहर के रहने वाले एक व्यवसायी रामानुज कहते हैं कि एक व्यक्ति के हाथ में केंद्रित रहने का असर ये हुआ कि जब तक उस व्यक्ति की सत्ता कायम रही, संस्थान भी

आगे बढ़ते रहे और जब व्यक्ति आरोपों के घेरे में आया तो संस्था पर आंच आना स्वाभाविक है।

बहरहाल, इस वक्त स्वामी चिन्मयानंद बलात्कार के गंभीर आरोपों से घिरे हैं और छात्रा द्वारा लगाए गए दुष्कर्म के आरोपों पर अपनी चुप्पी तोड़ते हुए स्वामी चिन्मयानंद ने कहा था कि यह एक षड्यंत्र के तहत किया गया है, जिसमें उन्होंने कॉलेज के कुछ लोगों पर साजिश में शामिल होने की बात कही और कहा कि अब एसआईटी जांच में

वह सब दूध का दूध और पानी का पानी हो जाएगा। खबरों के मुताबिक, शाहजहांपुर के लॉ कॉलेज की छात्रा के साथ दुष्कर्म के आरोपों पर स्वामी चिन्मयानंद ने कहा कि यह एक षड्यंत्र के तहत उन पर आरोप लगाए गए हैं। एसआईटी की जांच में षड्यंत्रकारी सामने आ जाएंगे। उन्होंने अपने ही कॉलेज के कुछ लोगों पर पूरी साजिश में शामिल होने की बात कही है। उन्होंने कहा कि उन्हें समझ नहीं आ रहा है कि वे कौन लोग हैं, जो जिले के शैक्षिक विकास में बाधा डाल रहे हैं। मामला सुप्रीम कोर्ट में है। एसआईटी गठित हो गई है, इसलिए कोई भी बात कहकर एसआईटी के रास्ते में नहीं आना चाहते हैं। वही सर्वोच्च न्यायालय ने निर्देश दिए कि उत्तर प्रदेश सरकार पूरे मामले की एसआईटी गठित कर जांच कराए। इसके साथ ही सरकार ने एसआईटी का गठन कर दिया। दिगर बात है कि शोषण का आरोप लगाने वाली छात्रा ने चिन्मयानंद को गिरफ्तार न किये जाने पर एक टीवी चैनल को दिए एक इंटरव्यू में कहा था कि चिन्मयानंद की जल्द ही गिरफ्तारी न होने की स्थिति में वह केरोसिन डालकर आत्महत्या कर लेगी। इस पर एसआईटी चीफ आईजी नवीन अरोड़ा ने कहा कि किसी की भावनाओं के अनुरूप जांच-पड़ताल नहीं होती, तथ्यों के आधार पर होती है। उन्होंने सभी पक्षों से संयम की अपेक्षा की। उन्होंने आगे कहा कि सभी को एसआईटी पर भरोसा रखने की जरूरत है और इसकी जवाबदेही कोर्ट के प्रति है। हमारी पूरी कोशिश है कि इस केस में कोई भी तथ्य न छूटे। दूसरी ओर स्वामी चिन्मयानंद के पक्ष में हिंदू महासभा के तथाकथित नेता ओमजी ने संवाददाताओं से कहा कि उन्होंने 6 दिसंबर को राम मंदिर का निर्माण करने की घोषणा की है, ऐसे में अगर स्वामी चिन्मयानंद को कुछ हो जाता है तो मंदिर निर्माण में रोड़ा पैदा होगा। उन्होंने कहा कि स्वामी चिन्मयानंद पर दर्ज झूठा मुकदमा रद्द होने वाला है। चिन्मयानंद को दुष्कर्म के मामले में फंसाया जा रहा है। कल प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को भी फंसाया जाएगा इसलिए वे उत्तरप्रदेश सरकार से चाहते हैं कि चिन्मयानंद के विरुद्ध दुष्कर्म का मामला दर्ज नहीं कराया जाए और यदि दर्ज हो जाता है तो उसे खत्म कराएं। ओम ने कहा कि कथित पीड़िता यहां से जाकर दिल्ली में सोनिया गांधी, राहुल गांधी और प्रियंका गांधी से मिली और उन्हीं के दबाव में स्वामी चिन्मयानंद पर जीरो क्राइम नंबर पर मुकदमा दर्ज कराया गया है। ज्ञात हो कि सुप्रीम कोर्ट के निर्देश पर गठित विशेष जांच दल ने शाहजहांपुर में पूर्व केंद्रीय गृह राज्यमंत्री स्वामी चिन्मयानंद पर बलात्कार का आरोप लगाने वाली विधि छात्रा के 3 दोस्तों और उसके कॉलेज के कुछ कर्मचारियों से पूछताछ की, तो दूसरी तरफ कथित पीड़िता के पिता ने कहा कि मेरी बेटी ने सबूत के तौर पर चिन्मयानंद का मालिश कराते हुए वीडियो एसआईटी को दिया था, लेकिन एक साजिश के तहत सोशल मीडिया पर यह वीडियो और उसके स्क्रीनशॉट पोस्ट किए जा रहे हैं। सूत्रों के मुताबिक एसआईटी ने छात्रा के जिन मित्रों से पूछताछ की उनमें वह लड़का भी शामिल है जो राजस्थान में उसकी बरामदगी के वक्त उसके साथ था, इसके अलावा पिछले 24 अगस्त को छात्रा ने चिन्मयानंद पर परोक्ष आरोप वाला वीडियो शूट किया था। उस वक्त कार में ये तीनों युवक मौजूद थे। एसआईटी ने इन तीनों युवकों को बयान दर्ज करने के लिए पुलिस लाइन बुलाया था। एसआईटी ने विधि महाविद्यालय के प्रधानाचार्य और चिन्मयानंद के मुमुक्षु आश्रम परिसर में स्थित दूसरे परास्नातक महाविद्यालय के प्रधानाचार्य से भी पूछताछ की। विशेष जांच टीम ने कॉलेज के दो कर्मचारियों को भी पूछताछ के लिए बुलाया था। इस बीच स्वामी चिन्मयानंद प्रकरण में कथित पीड़िता के पिता ने कहा कि मेरी बेटी ने साक्ष्य के तौर पर चिन्मयानंद का मालिश कराते हुए वीडियो एसआईटी को दिया था, लेकिन एक साजिश के तहत सोशल मीडिया पर यह वीडियो और उसके स्क्रीनशॉट पोस्ट किए जा रहे हैं। कथित पीड़िता के पिता ने कहा कि सोशल मीडिया पर जो स्क्रीनशॉट और वीडियो पोस्ट किए जा रहे हैं वे साक्ष्य तो मेरी बेटी के ही पास थे। यह एक साजिश है और वह इस मामले को सुप्रीम कोर्ट को भी बताएंगे और पूरे मामले की जांच कराने का अनुरोध करेंगे।

गौरतलब हो कि यह मामला और भी उलझता चला गया और पूर्व केन्द्रीय मंत्री और भाजपा नेता स्वामी चिन्मयानंद पर यौन शोषण का आरोप लगाने वाली छात्रा अब खुद फंसती दिखने लगी है। एसआईटी ने उसे हिरासत में लिया है। छात्रा पर आरोप है कि उसने एवं उसके साथियों ने स्वामी से 5 करोड़ रुपए की रंगदारी की मांग की। चिन्मयानंद के वकील ओम सिंह की ओर से पीड़िता और उसके 3 दोस्तों के खिलाफ मोबाइल फोन के जरिए 5 करोड़ की रंगदारी मांगने का मामला दर्ज कराया गया था। इतना ही नहीं सोशल मीडिया पर एक वीडियो भी वायरल हुआ था, जिसमें कथित तौर पर लड़की अपने 3 दोस्तों के साथ रंगदारी को लेकर बातचीत करती देखी गई थी। इस मामले में लड़की

के दोस्त संजय, विक्रम तथा सचिन को पहले ही गिरफ्तार किया जा चुका है। गौरतलब है कि भाजपा के पूर्व विधान पार्षद जयेश प्रसाद ने चिन्मयानंद से जेल में मुलाकात के बाद यौन शोषण का आरोप लगाने वाली लड़की पर रंगदारी के आरोप लगाए थे। प्रसाद ने मांग की थी कि छात्रा एवं उसके 3 साथियों को भी गिरफ्तार किया जाना चाहिए। लॉ की छात्रा ने 24 अगस्त को एक वीडियो वायरल कर चिन्मयानंद पर यौन शोषण के गंभीर आरोप लगाए थे। आरोप लगाने के बाद लड़की गायब हो गई थी एवं बाद में उसे राजस्थान के एक होटल से एक लड़के के साथ बरामद किया गया था। सनद् रहे कि स्वामी चिन्मयानंद पर उत्पीड़न का आरोप लगाने के बाद लापता हुई और फिर राजस्थान में मिली कानून की छात्रा अपने गृह राज्य उत्तरप्रदेश नहीं जाना चाहती। कोर्ट के न्यायाधीशों ने लड़की से बंद कमरे में बात की। सुप्रीम कोर्ट के निर्देश पर उत्तरप्रदेश पुलिस उसे न्यायालय लेकर आई थी। न्यायमूर्ति आर. भानुमति और न्यायमूर्ति एएस बोपन्ना की पीठ ने खुली अदालत में सुनवाई में कहा कि महिला अपने माता-पिता के यहां आने तक दिल्ली में रहना चाहती है। पीठ के अनुसार लड़की 4 दिन तक राष्ट्रीय राजधानी में रहेगी और इस दौरान शीर्ष अदालत की रजिस्ट्री उसकी सुरक्षा सुनिश्चित करेगी। बहरहाल आखिरकार चिन्मयानंद ने अपनी गलती को स्वीकार ही लिया। पूर्व केंद्रीय मंत्री स्वामी चिन्मयानंद को यूपी पुलिस और एसआईटी ने यौन उत्पीड़न के एक मामले में गिरफ्तार कर अदालत में पेश किया। यहां से उन्हें 14 दिन की न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया। इस बीच एसआईटी ने दावा किया कि चिन्मयानंद ने अपनी गलती स्वीकार कर ली। उन्होंने कहा कि वे अपनी गलती पर शर्मिंदा हैं। एसआईटी की टीम ने स्वामी चिन्मयानंद को मुमुक्षु आश्रम स्थित उनके आवास दिव्य ध ाम से सुबह गिरफ्तार किया। शाहजहांपुर के राजकीय मेडिकल कॉलेज में उनका चिकित्सकीय परीक्षण कराया गया। एक टीवी चौनल के अनुसार, मामले की जांच कर रही एसआईटी का दावा है कि चिन्मयानंद ने पीड़ित लड़की को मसाज के लिए बुलाने में अपनी गलती स्वीकार की। उन्होंने कहा कि मुझे अपने कृत्य पर शर्म आती है।

गौरतलब है कि एसआईटी के समाने अपना जुर्म कबूल करने के बाद अब चिन्मयानंद की मुश्किलें बढ़ गई है। संत से लेकर सियासी जीवन तक का सफर तय करने वाली स्वामी चिन्मयानंद अब बिल्कुल अकेले पड़ गए है। संतों के सबसे बड़ी संख्या अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद ने स्वामी चिन्मयानंद को संत समाज से बाहर करने का मन बना लिया है। अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष महंत नरेंद्र गिरी ने कहा कि हरिद्धार मे 10 अक्टूबर को होने वाली अखाड़ा परिषद की बैठक में इस बारे में अंतिम निर्णय लिया जाएगा। बैठक में सभी 13 अखाड़ा परिषद के प्रमुख शामिल होंगे जो इस बारे में निर्णय लेंगे। अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष नरेंद्र गिरी ने कहा कि स्वामी चिन्मयानंद के इस कृत्य से संत समाज की बदनामी हो रही है इसलिए अखाड़ा परिषद ने उनको बाहर करने का निर्णय लिया है। स्वामी चिन्मयानंद वर्तमान समय में महानिर्वाणी अखाड़े के महामंडलेश्वर है और संत परंपरा से आते है। दूसरी तरफ भाजपा ने भी स्वामी चिन्मयानंद से अपना पल्ला झाड़ लिया है। तीन बार के सांसद और अटल सरकार में केंद्रीय गृहराज्यमंत्री स्वामी चिन्मयांद अयोध्या में भाजपा के राम मंदिर आंदोलन से निकले नेता है। स्वामी चिन्मयानंद के रेप के मामले में फंसने के बाद अब पार्टी ने भी उनसे पल्ला झाड़ लिया है। उत्तर प्रदेश भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष स्वतंत्रदेव सिंह के मुताबिक तो स्वामी चिन्मयानंद पार्टी के सदस्य ही नहीं है। भले ही यूपी भाजपा अध्यक्ष दावा कर रहे हो कि स्वामी चिन्यानंद पार्टी के सदस्य नहीं है लेकिन उनकी पार्टी के दिग्गज नेताओं से नजदीकी छिपी नहीं है। ●

अभी कलम उठाइये

आपके सामने हो रहे भ्रष्टाचार एवं अपराध की खबर की समीक्षा करें और सरकार सहित पुलिस-प्रशासन तक उसको पहुंचाने के लिए केवल सच पत्रिका के साथ जुड़े। खबर की जानकारी इस नम्बर पर दें

सम्पर्क करें:- 9431073769/9955077308

ई-मेल:- editor.kstimes@rediffmail.com पर भेजें।

Qazi who attempted rape and burnt teenager alive in Madarsa gets death sentence

Nusrat Jahan had reported the principal of a religious school for attempted rape, but was then burnt alive for not withdrawing the complaint. Her death sparked public outrage and mass demonstrations. A court in Bangladesh sentenced 16 people to death on Thursday for the murder of Nusrat Jahan. The 18-year-old was set on fire after refusing to withdraw a sexual harassment complaint against the head teacher of the seminary she attended. The killers poured kerosene over Jahan and set her on fire on the roof of her madrasa in April in the southeastern district of Feni. She suffered severe burns and died in hospital five days later on April 10. Siraj Ud Doula, the head teacher, was among those sentenced to death. "We are happy about the judgment," Hafez Ahmed, a public prosecutor, told reporters after the court verdict. Defense lawyers said they would appeal against the ruling in the high court. The case was fast-tracked with the hearing taking only 62 days.

✯ **Public outrage :-** Jahan's murder sparked public outrage and mass protests calling for her killers to be brought to justice. Bangladesh's Prime Minister Sheikh Hasina had met the victim's family and vowed to prosecute all those involved. The incident also drew attention to an alarming rise in sexual harassment and sexual violence cases in the South Asian country of 165 million people. After the murder, Bangladesh ordered some 27,000 schools to set up committees to prevent sexual violence. Observers say the murder exposed a "culture of impunity" surrounding sex crimes against women and children. Prosecutions are also rare in cases of rape and sexual assault. "We have strict laws in Bangladesh, but no implementation. Justice is delivered in only 4% of cases. There is a prevailing culture of impunity. That is why rape cases are increasing every day," Alena Khan, a lawyer based in Dhaka, told DW in July.

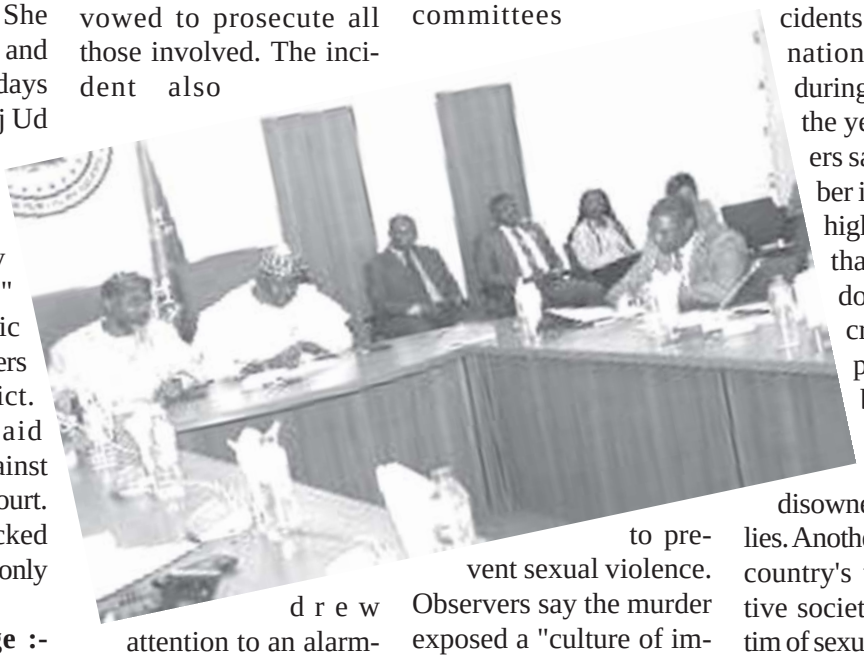

Rise in sex crimes

A report published recently by the "Bangladesh Mahila Parishad" (BMP) — Bengali for Bangladesh women's council — estimates that 731 women and children were raped in the first six months of 2019. BMP came up with these figures by counting incidents reported in 14 national newspapers during the first half of the year. But observers say the real number is likely to be far higher, pointing out that many victims do not report sex crimes due to the pervasive fear of being blamed for the rape or ostracized and disowned by their families. Another problem is the country's ultra-conservative society, where a victim of sexual violence is often viewed as a person without honor and stigmatized by the community.

सर्वाधिक प्रलयंकारी होती है जंगल की आग

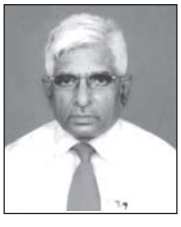

● ललन कुमार प्रसाद

दुनियां के हर देश के हुक्मरान, कुछ हद तक भारत के प्रधानमंत्री मोदी को छोड़कर, इस तथ्य से बिल्कुल ही अंजान हैं कि हमारे जीवन की हर सांस वृक्षों के पास गिरवी है, पेड़-पौधों के पास गिरवी है, हरियाली के पास गिरवी है। इसका सबसे बड़ा प्रमाण है की सारी दुनियां में जंगल धू-धूकर के जल रहे हैं। अर्थात् सारी दुनियां के हुक्मरान जीवन को समझने के बजाय मृत्यु को समझने में अधिक से अधिक समय दे रहे हैं। एक से बढ़कर एक विनाश के, युद्ध के साजो-समान बनवाने में व्यवस्त है। एक से बढ़कर एक विध्वंशक साजो-समान का खौफ दिखाते रहते हैं कि मेरे पास ऐसे-ऐस विध्वंशक अस्त्र-शस्त्र हैं कि हम एक घंटे के अंदर ही पूरी दुनियां को मिटा सकते हैं। इनके नजर में अधिक से अधिक विध्वंशक होना, खौफनाक होना ही सबकुछ है। वही देश सर्वाधिक शक्तिशाली है जो सर्वाधिक विध्वंश करने की क्षमता रखता है। दुनियां के देशों के हुक्मरानों के मन में हमेशा युद्ध की रणनीति चलती रहती है, युद्ध करने के नये-नये साजो-समान का याद कराने में व्यस्त रहते हैं। इन्हें मानव प्रेम से कुछ लेना-देना नहीं है। ये खौफ के सौदागर हैं। ये दूसरे देशों में खौफ पैदा करने के लिए उलटा- सीधा कुछ भी करते रहते हैं। नतीजा दुनियां के हर देश के हुक्मरानों के चलते आज पूरी दुनियां बारूद के भंडार पर बैठ गई है, खात्मे के कगार पर है, कभी भी खत्म हो सकती है। सिर्फ पांच मिनट के लिए इन हुक्मरानों को पगलाने की देरी है और ये हुक्मरान कभी भी पगला सकते हैं। यदि ऐसा होता है तो कुछ ही मिनटों में दुनियां का खात्मा हो जायेगा।

★ **जीवन जीने की आवश्यक शर्तें :-** जीवन जीने की दो आवश्यक शर्तें हैं-1. सांस लेने के लिए आजीवन शुद्ध हवा मिलती रहे और 2. की हवा की अनवरत सफाई होती रहे, जिससे की हवा प्रदूषित न हो, जहरीली न हो और सांस लेने के लिए शुद्ध हवा मिलती रहे। इन दोनों शर्तों को सिर्फ और सिर्फ पेड़-पौधे ही पूर्ति करते हैं। इन दोनो शर्तो को पालन करने में सक्षम है। सर्वेक्षणों द्वारा यह प्रमाणित हो चुका है कि एक हेक्टेयर जंगल से प्रतिवर्ष 0.2 टन ऑक्सीजन पैदा होती है और 3.7 टन कॉर्बन डाईऑक्साईड गैस अवशोषित होती है। हम सभी जानते हैं कि हवा में ऑक्सीजन की मात्रा आयतन के हिसाब से 21% होनी चाहिए। ऐसा तभी संभव है, जब कल-कारखानों, वाहनों से उत्सर्जित कॉर्बन डाईऑक्साइड को अनवरत शोषित किया जाता रहे। अर्थात् हवा में ऑक्सीजन की मात्रा 21% और कॉर्बन डाईऑक्साइड की मात्रा 0.03% बनी रहे। यह तभी संभव है, जब धरती पर पर्याप्त हरियाली हो, पर्याप्त पेड़- पौधे हो, पर्याप्त जंगल हो।

दुनियां के सभी देशों के हुक्मरान और उनके वैज्ञानिक सलाहकार क्या इस तथ्य से अवगत नहीं है कि एक व्यस्क व्यक्ति 24 घंटे में

21600 बार सांस लेता है और उतनी ही बार छोड़ता है। एक व्यस्क व्यक्ति 24 घंटे में 15700 लीटर हवा लेता है और उतना ही छोड़ता है फिर दुनियां का बलिष्ट से बलिष्ट व्यक्ति तीन

मीनट से अधिक समय तक बगैर सांस लिए जीवित नहीं रह सकता। फिर भी दुनियां के हुक्मरान जंगल के आग के प्रति इतने उदासहीन क्यों हैं? क्या इन हुक्मरानों और उनके वैज्ञानिक सलाहकारों की मति मारी गई है? क्या यह हुक्मरान और इनके वैज्ञानिक सलाहकार मानसिक रूप से दिवालिया हो गये हैं? इस धरती के विनाश का इससे बड़ा और इससे अधिक कारगर कोई दूसरा कारक नहीं है और ना ही हो सकता है। दुनियां के सभी देशों के हुक्मरान क्या दुनियां को जल्दी से जल्दी खत्म करके ही रहेंगे? अगर ऐसा नहीं है तो ये दुनियां के हुक्मरान ऐसी वन नीति क्यों नहीं बना रहे हैं कि जंगल में आग लगे ही नहीं और यदि लग भी जाये तो बगैर किसी खास नुकसान के उसपर तुरंत काबू पा ली जाये। अब और समय नहीं बचा है। यदि दुनियां के जंगलों को धू-धूकर जलने से नहीं बचाया गया तो मैं इस आलेख का लेखक यह भविष्यवाणी करता हूं कि आगामी 100 साल के अंदर ही यह खूबसूरत दुनियां मिट जायेगी। ईश्वर करे की ऐसा कुछ भी न हो और दुनियां के सभी देशों के हुक्मरान और उनके वैज्ञानिक सलाहकार सुधर जाये।

जितने भी तरह की आगजनी होती है उनमें सर्वाधिक प्रलयंकारी जंगल की आगजनी यानि दावानल होती है। इसके दो कारण हैं- पहला जलने के लिए बड़ा ही उपयुक्त वातावरण मिल जाता है। जलने के लिए हवा चाहिए। जिसकी भरपूर प्रचुरता रहती है। ऐसा इसलिए की जलने के लिए ऑक्सीजन चाहिए और हवा में 21% ऑक्सीजन होता है। बात यह है कि जलना ऑक्सीकरण है। इसके लिए ऑक्सीजन की जरूरत पड़ती है और हवा से जंगल को अनवरत अनंत ऑक्सीजन मिलता रहता है, ऑक्सीजन की किसी भी तरह की जरा सी भी कमी नहीं होती है। फिर जब जंगल में आग लगती है तो हवा की गति इतनी तेज हो जाती है कि अकल फाबता हो जाता है। देखकर तो ऐसा लगता है कि हवा को इसी समय इतनी तेज गति से बहनी है। लेकिन यह वैज्ञानिक प्रक्रिया है, जो आग के जलने के साथ प्रारंभ हो जाती है। आग की भीषण गर्मी से आग को घेरे हुए चारो ओर की हवा बहुत तेजी से फैलने के चलते हल्की होकर ऊपर उठती जाती है, जिससे उत्पन्न जगह की भरपायी चारों ओर से तेज गति से हवा आकर पूरी करने लगती है। नतीजा आगजनी प्रारंभ होते ही शांत से शांत हवा बहुत ज्यादा तेज गति से बहने लगती है। इसलिए जंगल में लगी आग बहुत तेजी से फैलती है। आग इतनी तेजी से फैलती है और बहुत ही जल्दी इतनी प्रलंयकारी हो जाती है कि दिमाग काम नहीं करता है, आदमी भौचक्का रह जाता है। दूसरा कि जंगल की आग को जलने के लिए सर्वाधिक उपयुक्त वातावरण के साथ-साथ जलने के लिए ईंधन का खजाना मिल जाता है, क्योंकि चारो ओर लकड़ी ही लकड़ी दिखती है। इसलिए लाख प्रयासों के बावजूद आग बुझने का नाम नहीं लेती, महीनों धू-धूकर जलती रहती है। इसलिए जंगल की आग से अकल्पनीय नुकसान पहुंचता है। जंगल की आग से इतनी तेजी से और इतना ज्यादा नुकसान पहुंचता है कि उसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। इस साल के दावानल के कुछ उदाहरण:-

☞ रूस के साईबेरियाई जंगलों में इसी वर्ष जुलाई में आग लगी थी, जिसे तीन महीने बाद पूरी तरह बुझा दी गई। तब तक जंगल की यह आग क्रास्नोयार्स्क, इरकुत्सक, बुराटिया, जविकालिये और याकुटिया के 94 हेक्टेयर क्षेत्र में सबकुछ स्वाहा कर दी। इस दावानल से 765 करोड़ रूपये का नुकसान हुआ है। दमकल के एक सौ कर्मियों ने 13 विमानों की मदद से इस आग पर बामुश्किल काबू पाया है, इसे बुझाने में सफल हुए हैं।

☞ इसी वर्ष 15 अगस्त के आसपास इंडोनेशिया के जंगलों में आग लगी थी, जो लगातार फैलती ही जा रही है। अब तक 2900 जगहों में आग लग चुकी है। इस दावानल की वजह से पड़ोसी देश मेलेशिया में धूंध इतनी घनी हो गयी है कि वहां के 1500 से ज्यादा स्कूलों में छुट्टी घोषित कर दी गयी। इस दावानल की वजह से सिंगापुर में भी धूंध छा गई है। इंडोनेशिया के दो बड़े प्रांतों में पहले से ही स्कूलों में छुट्टी घोषित कर दी गई। इंडोनेशिया, मलेशिया और सिंगापुर में लोगों को धूंध का सामना करने के लिए 200 एनजीओ ने मुफ्त में फेश मास्क बांटे हैं। इस दावानल से इंडोनेशिया के 6 राज्यों के 3.28 लाख हेक्टेयर में फैला जंगल राख में तब्दील हो चुका है। इंडोनेशिया का बोर्नेओ नेशनल पार्क जलकर खाक हो चुका है। इस आग को बुझाने के लिए 16 हजार सैनिक लगाये गये हैं, 52 हैलिकॉप्टरों से कृत्रिम वर्षा कराया जा रहा है। इसके लिए 275 टन नमक छिड़का जा चुका है और 3 करोड़ लीटर पानी की वर्षा करायी जा चुकी है।

☞ इसी वर्ष ऑस्ट्रेलिया के न्यू साउथ वेल्स और क्वीन्सलैंड के जंगलों में आग लगी हुई है, जो जंगल के करीब एक लाख हेक्टेयर क्षेत्र को अपने चपेट में ले ली है। आगजनी के पांच हफ्तों में सौ से ज्यादा घर जलकर खाक हो चुके हैं। ऑस्ट्रेलिया के फायर विभाग के अनुसार दस हजार लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचा दिया गया है। इस आग को बुझाने के लिए दस हजार फायर फाईटर दिन-रात जुटे हुए हैं।

☞ अमेरिका के कैलिफोर्निया के जंगलों में इसी वर्ष 10 अक्टूबर को आग ने 12 अक्टूबर को विकराल रूप ले लिया। जिसके चलते करीब एक लाख लोगों को अपना घर छोड़ने पर मजबूर होना पड़ा है। यह आग इतनी तेज है कि यह हर घंटे करीब 800 एकड़ इलाका अपने चपेट में ले रही है। वहां के पुलिस ऑफिसरों के मुताबिक अब तक सैन फर्नाण्डो वैली में 7542 एकड़ इलाका जल चुका है। अब यह आग एंजिल्स शहर से महज 32 किलोमीटर दूर रह गई है। इस दावानल को सैडलरिज फायर की संज्ञा दी गई है। इस दावानल को कैलिफोर्निया

में बड़ी आपदा घोषित की जा चुकी है। इस आग से करीब 76 घरों और इमारतों को नुकसान पहुंच चुका है तथा अनुमान लगाया गया है कि 20 हजार घर इस दावानल की चपेट में आ सकते हैं। जंगल की इस आग की वजह से कैलिफोर्निया में इन्फ्रास्टक्चर को खासा नुकसान पहुंचा है। 12 अक्टूबर को राज्य के 3 लाख 12 हजार उपभोक्ताओं को बिना बिजली के रहना पड़ा। बात यह है कि वहां के बिजली कंपनी ने बिजली की सप्लाई रोक दी है, क्योंकि आग के बीच बिजली सप्लाई जारी रहने से आग भड़कने का खतरा रहता है। इस आग को बुझाने में काफी तेजी लायी गई है। आग को बुझाने के लिए हवाई जहाज से सोडियम कैल्सियम बोरेट तथा अन्य रसायनों का छिड़काव किया जा रहा है। सोडियम कैल्सियम बोरेट जलने की रफ्तार को काफी हद तक घटा देता है, जिससे आग पर काबू पाने में काफी सहुलियत होती है। 18 अक्टूबर की शाम तक पूरे इलाके में फैले आग के 13% क्षेत्र पर काबू पाया जा चुका है। पिछले साल भी कैलिफोर्निया के जंगलों में भीषण आगजनी हुई थी।

जंगल की आग से निपटने के लिए स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी के खनिज वैज्ञानिक और इंजीनियर इरिक एपेल एक अनोखा जेल वाला वेक्सीन बनाया है, जो जंगलों के पेड़-पौधों पर चिपककर महीनों तक जलने से बचा सकता है। यह जेल चिपचिपा और अग्निरोधक है। इसे पौधों की सामग्री से बनाया गया है जो पूरी तरह विषरहित है। कृषि उपकरणों या एयरक्राफ्ट की मदद से जंगल में लगी आग के पेड़ों पर छिड़क कर आग पर काबू पाया जा सकता है। अभी इस जेल का निर्माण बड़े पैमाने पर किये जाने का प्रयास किया जा रहा है। आग पर काबू पाने के लिए अमोनियम पॉलीफॉस्फेट या एपीपी का भी इस्तेमाल किया जाता है, पर यह ज्यादा प्रभावी नहीं होता है।

★ जंगल में आग लगती नहीं है, लगा दी जाती है :- जंगल में आग

प्राकृतिक और मानवीय दोनो कारणों से लगती रहती है। प्राकृतिक कारण है- आकाशीय बिजली का गिरना, बांस के सूखे तनों की रगड़ और ज्वालामुखी विस्फोट। कृत्रिम या मानवजनित कारण है-लापरवाही, अज्ञानता, भू-माफियाओं या लकड़ी माफियाओं की बदनियती, वनकर्मियों का निकम्मापन व उनमें व्याप्त भ्रष्टाचार और आतंकवादियों यानि सरफिरे आदमियों का कुकृत्य। 2% प्राकृतिक कारणों से और 98% मानवीय कारणों से जंगलों में आग लगती रहती है। प्राकृतिक कारणों से लगी आग पर जल्दी काबू पा लिया जाता है, लेकिन मानवीय कारणों से लगी आग पर जल्दी काबू पाना कठिन होता है। ऐसा इसलिए की मानवजनित आगजनी लालचियों और भ्रष्टाचारियों द्वारा पूरी तैयारी के साथ लगायी जाती है। ऐसे आतंकवादियों का उद्देश्य ही होता है, किसी देश-विशेष को बर्बादी के कगार पर पहुंचा देना। अमेरिका जैसे विकसित देश में प्रलयंकारी दावानल द्वारा दहलाने का काम सिर्फ और सिर्फ आतंकवादी ही कर सकते हैं। ऐसा इसलिए की समृद्ध होने के चलते अमेरिका आतंकवादियों के निशाने पर है। समान्यतया लोगों के जेहन में यह बात नहीं है, इसलिए आतंकवादी प्रलयंकारी दावानल को अंजाम तक पहुंचाने में सफल हो रहे हैं और पूरी मानवता को इतनी बड़ी क्षति पहुंचा रहे हैं कि उसका आंकलन करना भी संभव नहीं है। मसलन अमेरिका को ही ले लिजिए। अमेरिका आतंकवादियों के निशाने पर है। इसलिए हर साल कैलिफोर्निया के जंगलों में आतंकवादियों द्वारा भीषण आगजनी को अंजाम दिया जा रहा है। फिर पड़ोसी देश पाकिस्तान को ही ले लिजिए। भारत हमेशा पाकिस्तानी आतंकवादियों के निशाने पर है, क्योंकि भारत समृद्धि की ओर बढ़ता जा रहा है। पाकिस्तान आतंकवाद की फैक्ट्री है, इसलिए पूरी दुनियां से कटोरा लेकर भीख मांग रहा है।

★ कॉर्बन उत्सर्जन का सबसे बड़ा कारक है जंगल की आग :- वर्ल्ड रिर्सोस इंस्टीच्यूट की रिपोर्ट के अनुसार समाज के विभिन्न क्षेत्रों से कॉर्बन का उत्सर्जन इस प्रकार होता है-ताप विद्युत गृह से 25%, वाहनों से 24%, कृषि संबंधित कार्यों (विशेष कर फसल के अवशेषों को जलाने) से 13%, उद्योगों से 10%, कूड़ा डपिंग यार्डो में तथा यत्र-तत्र जमा कूड़ा जलाने से 0.4% और अन्य कारणों से 34% कॉर्बन का उत्सर्जन होता है। इस रिपोर्ट में बताया गया है कि जंगलों के कटाव से 18% कॉर्बन का उत्सर्जन होता है, जो बिल्कुल गलत है। ऐसा इसलिए की जंगल के कटाव से कॉर्बन उत्सर्जित होने का कोई सवाल ही नहीं है। हाँ, इतना जरूर है कि कॉर्बन के अवशोषण में भारी कमी आ गई है। फिर वर्ल्ड रिर्सोस इंस्टीच्यूट की रिपोर्ट में इस बात का उल्लेख नहीं है कि जंगल की आग से कॉर्बन का कितना उत्सर्जन होता है। अर्थात् वर्ल्ड रिर्सोस इंस्टीच्यूट द्वारा कॉर्बन के उत्सर्जन से जुड़ी रिपोर्ट सही नहीं है। इतना ही नहीं सारी दुनियां के पर्यावरण विदों व पर्यावरण वैज्ञानिकों ने जंगल की आग को तव्वजों नहीं दिया है। यह बहुत ही हैरानी की बात है, जबकि पूरी दुनियां में सबसे तेज गति से भारी मात्रा में कॉर्बन का उत्सर्जन जंगल की आग से होता है। दरअसल सदियों से जंगल की आग विश्व पर्यावरण का हिस्सा रही है, जो प्राकृतिक या मानवीय कारणों से लगती रही है। सच्चाई तो यह है कि जंगल की आग के चलते सबसे अधिक और सबसे तेज गति से कॉर्बन का उत्सर्जन हो रहा है। आश्चर्य की बात है कि यह तथ्य पूरी दुनियां के पर्यावरण वैज्ञानिकों व पर्यावरण विदों को क्यों नहीं दिख रहा है? जबकि जंगल भारी मात्रा में कॉर्बन का उत्सर्जन नहीं बल्कि अवशोषण करते हैं। सच्चाई तो यह है कि जंगल ही एक मात्र ऐसा प्राकृतिक साधन है जो

कॉर्बन का अवशोषण करते हैं। दूसरा तो कोई भी प्राकृतिक अथवा कृत्रिम साधन नहीं है और ना ही हो सकता है। इससे स्पष्ट है कि सारी दुनियां के पर्यावरण वैज्ञानिक जंगल की आग के चलते पर्यावरण को गंभीर रूप से नुकसान पहुंचाने वाले इस कारक के प्रति आंख मूंदे हुए हैं। सारी दुनियां के पर्यावरण वैज्ञानिकों और पर्यावरण विदों के लिए जंगल की आग को नजरअंदाज करना बहुत ही शर्मनाक है, चुल्लू भर पानी में डूब मरने जैसा है।

यह निर्विवादित तथ्य है कि पृथ्वी की सभी समस्याओं का रामवाण इलाज है जंगल। पर्वतीय क्षेत्रों में इसकी मौजूदगी 60% और मैदानी क्षेत्रों में 23% अनिवार्य है। ध रती के कुल क्षेत्र में औसतन 33% हिस्से में हरियाली का होना अनिवार्य है। यह भी निर्विवादित तथ्य है कि समस्त जीवधारी और वनस्पती एक-दूसरे पर आश्रित है। अर्थात् एक के बिना दूसरे का अस्तित्व संभव नहीं है। अर्थात् पेड़-पौधे रहेंगे तो हमारा वजूद रहेगा और अगर नष्ट हो जायेंगे तो हमारा वजूद मिट जायेगा। महात्मा गाँधी ने एक बार कहा था कि पृथ्वी में इतनी सार्मथ है कि वह मनुष्य और पशु-पक्षी की हर जरूरत पूरी कर सकती है। लेकिन कभी भी मनुष्य के लालच को पूरी नहीं कर सकती है। मनुष्य के लालच और स्वार्थ का परिणाम है कि विश्व में 750 करोड़ लोगों को प्राणवाय यानि ऑक्सीजन प्रदान करने वाला जंगल खुद अपने ही अस्तित्व को बचाने के लिए संघर्ष कर रहा है। वैसे ही विगत् चार दशकों में न सिर्फ भारत, पूरी दुनियां में जंगलों के साथ बड़ी क्रूरता से व्यवहार किया जा रहा है। हरे-भरे खूबसूरत जंगलों को खत्म किया जा रहा है। भारी संख्या में वृक्षों को काटकर एक से बढ़कर एक अति मूल्यवान हरे-भरे लहलहाते खूबसूरत जंगलों को बहुमंजिली इमारत रूपी कंक्रीट में तब्दील किया जा रहा है। वन भूमि पर उद्योग धंधे, मकानों तथा सड़कों का निर्माण, वन भूमि को खेती के काम में लाने लायक बनाने, लकड़ियों की लगातार बढ़ती मांग को पूरी करने, आदि कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने के लिए जंगलों की अवैध कटाई की जा रही है। हमारे देश में वर्ष 2000 से 2015 की अवधि में 57500 वर्ग किलोमीटर कृषि भूमि में वृद्धि हुई, जिसमें से 36900 वर्ग किलोमीटर ऐसा इलाका था जो पहले पेड़ों से ढ़का था, जिसे कृषि भूमि में तब्दील कर दिया गया। 250 वर्ग किलोमीटर जंगल हर साल देश में ढ़ाचागत विकास की भेंट चढ़ रहे हैं। पिछले 30 वर्षों में हमारे देश में 15 हजार वर्ग किलोमीटर जंगल काटे गये। धरती पर मनुष्यों के जन्म से लेकर आज तक करीब 3 लाख करोड़ पेड़ काटै जा चुके हैं। धरती पर हर साल करीब 5 अरब पेड़ लगाये जा रहे हैं, लेकिन 10 अरब काटे जा रहे हैं। देश के कई बड़े-बड़े शहरों की हरियाली पहले जितनी थी, उससे 50% से भी ज्यादा कम हुई है। इसलिए दुनियां के 30 हजार शहर वायु प्रदूषण के चपेट में है। ऊपर से कई देशों में जंगल की आग कहर बरपा रही है। ऐसे में कैसे बचेगी यह दुनियां।

★ मौत का फरमान है अमेजन का धधकता जंगल :- ब्राजील का अमेजन वर्षावन अमेजन रेन फॉरेस्ट 35 लाख वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है। इसका क्षेत्रफल भारत के क्षेत्रफल से दोगुणा से कुछ कम है। भारत का क्षेत्रफल 32.8 वर्ग किलोमीटर है। यह जंगल यूरोपीय देशों के पूरे क्षेत्रफल से डेढ़ गुणा बड़ा है। अमेजन जंगल की जद में दक्षिण अफ्रीका के नौ देश पड़ते हैं-ब्राजील, पेरू, कोलंबिया, बेनेजुएला, इक्वाडोर, बोलिविया, गुयाना, सुरीनाम और फ्रेंच गुयाना। इस जंगल का 60% हिस्सा अकेले ब्राजील में पड़ता है। 12% हिस्सा पेरू में, 10% हिस्सा कोलंबिया में पड़ता है और शेष 18% हिस्सा अन्य छः देशों में फैला हुआ है। दुनिया में दस बड़े रेन फॉरेस्ट है। अमेजन दुनियां का सबसे बड़ा रेन फॉरेस्ट है। दुनियां भर के फॉरेस्टों में से करीबन 40% हिस्सा अकेले अमेजन रेन फॉरेस्ट का है। अमेजन के बाद कांगो रेन फॉरेस्ट और वालिदियन रेन फॉरेस्ट है, जो एक लाख वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैले हुए हैं। जैव विविधता से भरपूर अमेजन वर्षा वन में 12 महीने वर्षा होती है। अपनी प्राकृतिक नमी के कारण वर्षा वन आम तौर पर आगजनी के प्रति प्रतिरोधी होते हैं, परन्तु शुष्क मौसम होने से अमेजन के जंगल में जून से अक्टॅबर तक आग लगते रहती है। भारत में गर्मियों में वातावरण में नमी सबसे कम और वातावरण का तापमान सबसे अधिक होता है, जो दहनशील पदार्थों में आग पकड़ने और आग को फैलाने के लिए सर्वाधिक उपयुक्त होता है। इसलिए हमारे देश में हर साल 15 फरवरी से 15 जून तक वनों में अग्नि कान (फायर सिजन) माना जाता है।

अमेजन का जंगल पृथ्वी पर पाये जाने वाले कुल पेड़-पौधों और जानवरों की प्रजातियों में सें 30% का घर है। यहां के जंगलों में 16 हजार प्रजातियों के 390 अरब पेड़ हैं, जो धरती के बायोमॉस्क का 10% हिस्सा है। 25 लाख से अधि क प्रजातियों के कीड़े-मकौड़े और 1700 प्रजातियों के पक्षी यहाँ मौजूद हैं। यह जंगल इतना घना है कि यहां दिन में अंधेरा छाया रहता है। कहते हैं कि इस जंगल में अगर कोई भटक जाये तो उसका वापस लौटना नामुमकिन है। कहा जाता है कि ध रती पर अमेजन के जंगल का अस्तित्व करीब 550 लाख वर्षों से है। अमेजन के जंगलों में 500 से अधिक आदिवासी जनजातियां रहती है। इनमें से करीब 100 आदिवासी जनजातियां ऐसी है, जिन्होंने कभी भी बाहर की दुनियां से कोई सम्पर्क तक नहीं किया है।

ऑक्सीजन का प्राकृतिक स्त्रोत है अमेजन का जंगल। यह जंगल अकेले धरती के कुछ ऑक्सीजन का 20% ऑक्सीजन देता है। इसलिए इसे दुनियां का फेफड़ा कहा जाता है। प्रति वर्ष दुनियां के जंगलों द्वारा जितना कॉर्बन डाईऑक्साइड गैस अवशोषित किया जाता है, उसका एक तिहाई हिस्सा अकेले अमेजन का जंगल अवशोषित करता है। अर्थात् प्रतिवर्ष दुनियां के जंगलों द्वारा हटाये जाने वाले 2.4 अरब टन कॉर्बन का लगभग 0.86 अरब टन अकेले अमेजन का जंगल अवशोषित करता है।

अमेजन के जंगल के

बिचो-बीच दुनियां की सबसे बड़ी नदी बहती है, जिसका नाम अमेजन है। इस नदी की लम्बाई 6800 किलोमीटर है और चौड़ाई 11 किलोमीटर है। बरसात के दिनों में इस नदी की चौड़ाई करीब 100 किलोमीटर हो जाती है। दुनियां के कुल सतही पानी (सफेस वाटर) का 16% फ्रेश वाटर यानि मीठा जल अकेले इस नदी से समुद्र में गिरता है। अमेजन नदी से 100 से अधिक सहायक नदियां मिलती है। इस नदी में एनाकोंडा से लेकर पिरान्हा और बिजली पैदा करने वाली मछलियां भी मिलती है।

★ आमेजन का जंगल बचेगा तभी दुनिया बचेगी :- अमेजन का जंगल बचेगा तभी दुनियां बचेगी, वरना दुनियां समाप्त हो जायेगी, दुनियां का वजूद मिट जायेगा। अमेजन के जंगल का सार्मथ्य अपरंपार है। अकेले यह जंगल ग्लोवल वार्मिंग पर लगाम लगा सकता है और जलवायु परिवर्तन को रोक सकता है, फिर भी विश्व के सभी देशों के प्रशासक किस नींद में सो रहे हैं, युद्ध के उन्माद रूपी शराब की कैसी नशा में डूबे हैं कि अभी तक आमेजन के जंगल की आग को बुझाने में सफल नहीं हो सके हैं। सफल होने की बात तो दूर आमेजन के जंगल की तेजी से फैलती हुई आग की रफ्तार को कम करने में भी सफल नहीं हो सके हैं। अमेरिका, चीन, रूस, जर्मनी, जापान सहित दुनियां के सभी देश आमेजन के जंगल में लगी आग को लेकर कुंभकर्णी नींद में सो रहे हैं। आमेजन के जंगल की आग को लगे दो महीने से भी अधिक समय बीत गया है, फिर भी इस आग को बुझाने के लिए अमेरिकी राष्ट्रपति ने कुछ नहीं किया, ना ही चीन के राष्ट्रपति ने कुछ किया है, ना रूस के राष्ट्रपति ने कुछ किया है, ना जर्मनी के राष्ट्रपति ने कुछ किया है और ना जापान के राष्ट्रपति ने कुछ किया है। जबकि ये सारे के सारे देश दुनियां के विकसित देश हैं और तो और संयुक्त राष्ट्र संघ ने भी कुछ नहीं किया है, सिर्फ

चीन, अमेरिका और पाकिस्तान के आग्रह पर आपात बैठक बुलाने के सिवाय। क्या संयुक्त राष्ट्र संघ के मुखिया यानि महासचिव एंतोनिया गुतारेस अंधा हैं। उन्हें आमेजन के जंगल में लगी आग नहीं दिखती। उन्होंने अभी तक संयुक्त राष्ट्र संघ की आपात बैठक बुलाकर एक ऐसा प्रस्ताव क्यों नहीं पारित किया है कि दुनियां के सारे देश बगैर किसी विलंब के आमेजन के जंगल की आग को बुझाने में अपनी सारी शक्ति झोक दे। सभी विकसित देशों को दुनियां में अपने देश का प्रभुत्व अधिक से अधिक विस्तार करने के सिवाय दूसरा कुछ भी नहीं दिख रहा है। ये सभी विकसित देश एक से बढ़कर एक युद्धक विमान, एक से बढ़कर एक संघारक बैलेस्टिक मिसाल, एक से बढ़कर एक युद्धक जहाज, पनडुब्बी आदि के निर्माण में व्यस्त है। ये सभी देश विश्व में शांति कैसे स्थापित हो, इसके लिए कई कारगर उपायों को कार्यान्वित कर सकारात्मक कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने का सिर्फ सपना दिखा रहे हैं, नही तो फिर पिछले 15 वर्षों में 15 हजार से भी अधिक युद्ध कैसे हो गये। चीन, अमेरिका, रूस, उत्तर कोरिया और पाकिस्तान युद्ध के प्रति सर्वाधिक उन्मादी देश है। चीन अनवरत अपने सम्राज्य के विस्तार के सिवाय और कुछ नहीं करता है। अवैध तरीके से अपने सम्राज्य के विस्तार में लिप्त है। दुनियां के कई देश चीन के जुल्मोंसितम से ग्रस्त है। पाकिस्तान हर रोज भारत के विरूद्ध एलओसी पर न सिर्फ सीजफायर का उलंघन करता है बल्कि कश्मीर के सीमावर्ती रियायशी इलाकों पर गोले बरसाता है। पाकिस्तान के लोग भूखों मर रहे हैं और इमरान सरकार भारत के विरूद्ध सीजफायर का उलंघन करने में व्यस्त है तथा भारत के विरूद्ध एटम बम का बटन दबाने की ध मकी देता रहता है। भारत की मोदी सरकार ने एक से बढ़कर एक अच्छा काम किया है-पाकिस्तान को सबक सिखाने हेतु सर्जिकल स्ट्राइक और एयर स्ट्राइक, मुस्लिम बेटियों और बहनों को इंसाफ दिलाने के लिए तीन तलाक को समाप्त करना, देश के टुकड़े-टुकड़े होने से बचाने के लिए अनुच्छेद 370 और अनुच्छेद 35ए को समाप्त करना, इत्यादि। लेकिन संयुक्त राष्ट्र संघ के पर्यावरण संरक्षण के सबसे बड़े पुरस्कार चैम्पियन ऑफ द अर्थ से सम्मानित प्रधानमंत्री मोदी ने भी आमेजन की जंगल की आग को बुझाने हेतु एक भी वक्तव्य जारी नहीं किया है। आमेजन के जंगल की आग को बुझाने हेतु पूरी दुनियां के एक भी देश को ब्राजील सरकार को सहायता देने की पेशकश की अपील तक नहीं की है और ना ही अपने प्रभाव का प्रयोग कर दुनियां के किसी देश को ब्राजील की सहायता देने तथा इस भीषण जंगल की आग को बुझाने के लिए

संयुक्त राष्ट्र संघ को अपात बैठक बुलाने का आग्रह भी नहीं किया है। वास्तविकता यह है कि दुनियां के विकसित देश सहित कुछ और देश मिल जाये तो आमेजन के जंगल की प्रचंड आग को कुछ ही दिनों के भीतर बुझाया जा सकता है। ऐसा इसलिए की रूस के पास ऐसा हैलिकॉप्टर है जो एक बार में तीन हजार लीटर पानी उठा लेता है। अमेरिका के पास ऐसा हैलिकॉप्टर है जो एक बार मे 4500 लीटर पानी उठा लेता है। इन हैलीकॉप्टरों को जंगल की आग बुझाने के लिए ही बनाया गया है। हैलीकॉप्टर में लगे पानी ढ़ोने वाले इस उपकरण को बाम्बी बकेट कहते हैं। देश के सारे के सारे प्रिंट मीडिया और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया अमेजन की आग को लेकर मूकदर्शक बने हुए हैं। देश के दूरदर्शन के सभी चैनलों पर हर रोज किसी न किसी मुद्दे को लेकर बहश चलती रहती है, लेकिन दो महीने से भी अधिक समय गुजर जाने के बाद भी देश के किसी भी चैनल पर आमेजन के जंगल में लगी आग को लेकर आज तक एक भी बहश नहीं हुई है। लगता है कि देश के बुद्धिजीवियों, समाजिक कार्यकर्ताओं, पर्यावरण विदों और पर्यावरण वैज्ञानिकों को लकवा मार गया है।

★ **आमेजन की जंगल की आग** :- दुनियां के यह भीषणत्तम आग 82 हजार से भी अधिक स्थानों पर धधक रही है। इस साल 13 अगस्त को आमेजन के जंगलों में लगी यह आग 26 अगस्त तक ब्राजील के 29 हजार वर्ग किलोमीटर तक फैल चुकी है। इसके अलावा बोलेबिया, पेरू, बेनेजुएला और इक्वाडोर में भी फैल गई है, जो आगे भी तेजी से फैलती ही जा रही है। बोलिबिया के 9500 वर्ग किलोमीटर जंगल का इलाका इसके जद् में है। आग से करीब 2600 वर्ग किलोमीटर में फैला तुकाबाका वन्यप्राणी अभ्यारण्य खतरे में आ गया है। बोलिबिया के जंगल को दुनियां का सबसे बड़ा स्वस्थ उष्णकटिबंधीय शुष्क जंगल के तौरपर जाना जाता है। बोलिबिया में पिछले दो वर्षों में यह नुकसान सबसे ज्यादा है। विशेषज्ञों का मानना है कि आग से हुए इस पारिस्थितकीय नुकसान की भरपायी में दो सदी लग जायेगी।

आमेजन के जंगलों में 2013 में 30 हजार, 2014 में 52 हजार, 2015 में 53 हजार, 2017 में 54 हजार और 2018 में 68 हजार जगहों पर आग लगी थी। यहां के जंगलों में पिछले साल 2018 के इसी अगस्त में महीने में आगजनी की घटने वाली घटनाओं में 84% की वृद्धि हुई है। 13 अगस्त को लगी यह आग अभी तक नहीं बुझी है। अगर ऐसा ही रहा तो जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों से बचाने वाले जंगलों से दुनियां वंचित हो जायेगी। एआईएस के अनुमान के मुताबिक इस आग के कारण धरती के वायुमंडल में 18 हजार फीट की ऊँचाई तक वायु प्रदूषण फैल गया है। ब्राजील के नेशनल इंस्टीच्यूट फॉर स्पेस रिर्सच के अनुसार यह आग प्रति मिनट एक फुटबॉल के मैदान जितने क्षेत्र को अपने चपेट में लेते जा रही है। ब्राजील के साओ पावलो यूनिवर्सिटी के जलवायु वैज्ञानिक कार्लोस नोब्रे का कहना है कि अब यह आग चरम बिंदु के पहुंचने के करीब है। अगर चरम बिंदु को पार कर जाये तो यह बदलाव अपरिवर्तनीय होगा।

आमेजन के जंगलों की आग बुझाने में सबसे बड़े बाधक वहां के राष्ट्रपति जेयर बोल्सनारो स्वयं हैं। वे आज की बाजारवादी सोच और प्राकृतिक संसाधनों का विनाशकारी दोहन करने वाली मानसिकता के व्यक्ति हैं। वह आर्थिक सुदृढ़ता के वादे के साथ सत्ता में आये। वह तत्कालिक आर्थिक फायदो और कोरी वाहवाही के हिमायती है।

यही कारण है कि राष्ट्रपति सत्ता में आने के कुछ महीने बाद से जंगल की कटाई में वृद्धि हो गई। इस वर्ष जुलाई तक 3 हजार वर्ग किलोमीटर जंगल कम हो चुके हैं। इससे स्पष्ट है कि आमेजन के जंगलों में रहने वाले 3 करोड़ लोगों में अधिकतर आदिवासी हैं। इन्हें विस्थापित कर खेती और खनन के लिए वन्य काटने और जलाने की वैध व अवैध कोशिशें लगातार चलती रहती है। राष्ट्रपति तो अपने चुनावी वादों में पर्यावरण संरक्षण और आदिवासियों के अधिकारों को खारिज कर आमेजन के व्यवसायिक इस्तेमाल की बात कर चुके हैं। राष्ट्रपति बनने के बाद उन्होंने पर्यावरण संरक्षण की राष्ट्रीय एजेंसी के बजट में 95% की कटौती कर दी है। इसी वजह से आग पर काबू पाने में अड़चने आ रही है। इससे स्पष्ट है कि सत्ता की लालच में पड़कर उन्होंने अपने ही देश से ही नहीं, बल्कि पूरे विश्व के प्राणी जगत के साथ विश्वासघात कर रहे हैं। ब्राजील के लिए सौभाग्य की बात है कि उसके पास दुनियां का सर्वाधिक किमती धरोहर है। फिर भी ब्राजील की आर्थिक स्थिति दयनीय है। सचमुच फुटबॉल के लिए प्रसिद्ध ब्राजील के राष्ट्रपति सेल्फ गोल करने में माहिर हैं। ऐसे में ब्राजील सहित पूरी दुनियां को बर्बाद होने से कैसे बचाया जा सकता है।

ऐसा भी नहीं है कि ब्राजील की सरकार द्वारा अमेजन के जंगल में लगी आग को बुझाने का प्रयास नहीं किया जा रहा है। प्रयास तो जरूर किया जा रहा है, लेकिन आधे मन से किया जा रहा है। यही कारण है कि आग लगने के दो

महीने बीत जाने के बाद भी आग बुझने का नाम नहीं ले रही है। दमकल विभाग और सेना के लोग आग बुझाने के काम में निरंतर जुटे हुए हैं। ब्राजील की सेना 2C130 हरक्यूलिस विमानों से हजारों लीटर पानी लेकर आग बुझाने के लिए अमेजन के वर्षा वनों पर डाल रही है, लेकिन आग इतनी विकराल हो गई है कि अभी तक इस पर काबू नहीं पाया जा सका है।

★ विश्व के सर्वोच्च पर्यावरण संरक्षक हुक्मरान हैं नरेन्द्र मोदी :- विश्व के सबसे बड़े पर्यावरण संरक्षक हुक्मरान है भारत के प्रधानमंत्री मोदी। पिछले पांच वर्षों में उन्होंने दुनियां में पर्यावरण संरक्षण को लेकर सर्वाधिक शानदार काम किया है। इसी का नतीजा है कि सितम्बर 2018 में उन्हें संयुक्त राष्ट्र संघ ने पर्यावरण संरक्षण के सबसे बड़े सम्मान 'चैम्पियन ऑफ द अर्थ' से सम्मानित किया। मोदी ने 150वीं गांधी जयंती के अवसर पर 24 सितम्बर 2019 को संयुक्त राष्ट्र संघ के मुख्यालय में 50 किलो वाट के गांधी सोलर पार्क का उद्घाटन किया। इससे सारी दुनियां में भारत का नाम रौशन हुआ है। गांधी सोलर पार्क में 193 सोलर प्लेटें लगी हैं। सभी पर एक देश का नाम लिखा हुआ है। भारत ने इसके लिए दस लाख डॉलर का उपहार दिया है। 2015 में अंतर्राष्ट्रीय सौर संगठन की शुरूआत की गई थी। 121 देशों का यह समूह पेट्रोल-डीजल-कोयला पर निर्भरता घटाने के लिए सौर ऊर्जा का ज्यादा से ज्यादा दोहन करने की दिशा में काम कर रहा है। भारत की मोदी सरकार ऊर्जा की खपत में नॉन फॉसिल फ्यूएल का इस्तेमाल लगातार बढ़ा रही है। मोदी सरकार बायो फ्यूयेल का उत्पादन भी लगातार बढ़ा रही है और पेट्रोल-डीजल फ्यूयेल में बायोफ्यूयेल की मिक्सिंग भी अनवरत बढ़ा रही है। मोदी सरकार जुलाई 2018 तक 81 गीगावाट अक्षय ऊर्जा उत्पादन का लक्ष्य हासिल कर लिया है। अगस्त 2019 तक 80 देश इंटरनेशनल सोलर अलायंस से जुड़ चुके हैं।

23 सितम्बर 2019 को अमेरिका के न्यूयार्क में आयोजित संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन शिखर सम्मेलन में प्रधानमंत्री मोदी ने अपने संबोधन में कहा है कि जलवायु परिवर्तन (क्लाईमेट चेंज) पर बहुत अधिक चर्चा हो चुकी है, अब कार्यवाई करने का समय आ चुका है। मोदी ने कहा है कि पूरी दुनियां के सभी देश मिलकर इस ज्वलंत समस्या के निदान की दिशा में कार्य करे। प्रधानमंत्री मोदी ने अपने संबोधन में कहा है कि हमें स्वीकार करना चाहिए कि अगर में जलवायु परिवर्तन जैसी गंभीर चुनौती से पार पाना है तो हम इस समय जो कुछ कर रहे हैं, वह पर्याप्त नहीं है। उन्होंने कहा कि जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए आज व्यापक प्रयास की जरूरत है। इसलिए विश्व के सभी देश एक साथ मिलकर प्रयास करे। प्रधानमंत्री मोदी ने घोषणा की कि भारत सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, पनबिजली जैसे गैर परंपरागत ऊर्जा के उत्पादन में लगातार वृद्धि कर रहा है और आगे भी बढ़ाता ही रहेगा। इस कड़ी में प्रधानमंत्री मोदी को गोबर गैस और बायोगैस के उत्पादन पर विशेष ध्यान देना चाहिए, क्योंकि पशु धन के मामले में भारत दुनियां का सिरमौर है। पशुपालन एवं मतस्य विभाग के अनुसार भारत में सिर्फ गायों की संख्या 19 करोड़ से ऊपर है। गोबर गैस फायदे अपरमपार है। यदि गोबर गैस की किसी मात्रा से उपले बनाये जाये और गोबर की उतनी ही मात्रा से गोबर गैस तैयार किया जाये तो गोबर गैस बारह गुणा ज्यादा ऊर्जा उपलब्ध कराती है। जिससे वातावरण को स्वच्छ रखने में मदद मिलती है। फिर गोबर गैस प्राप्त कर लेने के बाद गोबर गैस संयंत्र में जो पदार्थ बच जाता है, वह कच्चे गोबर की तुलना में तिगुनी मात्रा में बहुत ही उम्दा किस्म की नाईट्रोजन समृद्ध जैविक खाद होती है। इस तरह गोबर गैस से प्राप्त खाद जमीन को उर्वरता प्रदान करने की दृष्टि से गोबर के कंपोस्ट खाद की तुलना में डेढ़गुणा अधिक असरदार होती है। ऐसा इसलिए की घासो आदि के बीच जो गोबर में रहते हैं, गोबर गैस की टंकी में 15 से 20 दिनों तक पड़े रहने के कारण अपने जमने की शक्ति को खो देते हैं। इतना ही नहीं, गोबर गैस का इस्तोमाल घर में रौशनी, खेतों की सिंचाई के लिए पंपिंग सेट चलाने के लिए तथा कृषि के मशिनीकृत यंत्रों को चलाने के लिए भी किया जाता है, जिससे बिजली की भारी बचत होती है। परजीवियों के 95% अंडे गोबर गैस के प्लांट में पहुंचने के बाद किण्वन (फरमेंटेशन) के चलते नष्ट हो जाते हैं, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में हूकवर्क, घोंघा ज्वर और लैप्टोस्पाईरोसिस जैसे बिमारियों का खात्मा हो जाता है। चूकि गोबर गैस संयंत्र में गैस बनने की प्रक्रिया में गोबर जमीन के अंदर ही सड़ता रहता है, इसलिए मक्खी और मच्छर उत्पन्न नहीं हो पाते हैं। इस तरह

गोबर का गोबर गैस बनाकर इस्तेमाल करने से प्रदूषण मुक्त ऊर्जा प्राप्त करने के साथ-साथ घर के आसपास वातावरण को स्वच्छ रखने में भी मदद मिलती है। इसी तरह बायो गैस तैयार करने से कई तरह के लाभ होते हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने 23 सितम्बर को अमेरिका के न्यूयार्क में जलवायु परिवर्तन शिखर सम्मेलन में घोषणा की कि भारत गैर परंपरागत ऊर्जा यानि नॉन-फॉसिल ऊर्जा उत्पादन के लक्ष्य 2022 तक 175 गीगावाट को तीन गुणा अधिक बढ़ाकर 400 गीगावाट तक पहुंचाने का संकल्प लिया। लेकिन यदि मोदी सरकार गोबर गैस और बायो गैस के उत्पादन में किसानों को आर्थिक और तकनीकी रूप से भरपूर सहयोग करे तथा किसानों के बीच इन दोनो गैसों से पहुंचने वाले लाभ का प्रचार-प्रसार कर जागृति पैदा करे तो 2022 के बजाय 2021 तक 400 गीगावाट ऊर्जा उत्पादन का लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं तथा ऊर्जा उत्पादन में कोयले की खपत में भारी कमी लायी जा सकती है। जिससे भारत के द्वारा कॉर्बन उत्सर्जन में भारी कमी हो सकती है। जो जलवायु परिवर्तन पर रोक लगाने में कुछ हद तक कारगर साबित होगी।

जलवायु परिवर्तन के लिए जिम्मेदार कॉर्बन डाईऑक्साइड का उत्सर्जन भारत, पूरी दुनियां के द्वारा किये जाने वाले कुल उत्सर्जन का सिर्फ 6% ही उत्सर्जन करता है। 2018 में भारत कॉर्बन उत्सर्जन में 12% की कमी लाने में कामयाब रहा। लेकिन दुख की बात है कि कॉर्बन उत्सर्जन करने वाले दो शीर्ष देश-चीन और अमेरिका मनमानी कर रहे हैं। चीन कुल वैश्विक कॉर्बन उत्सर्जन का अकेले 28% और अमेरिका अकेले 16% उत्सर्जन करता है। फिर भी ये दोनो देश कॉर्बन उत्सर्जन में कटौती करने से आनाकानी कर रहे हैं। जून 2017 में अमेरिका ने 2015 के पेरिस जलवायु समझौते से अलग होने की घोषणा कर दी।

प्रधानमंत्री मोदी ने अपने संबोधन में क्लाईमेट चेंज से निपटने के लिहाज से हमें अपनी आदतों में बदलाव लाने के लिए एक वैश्विक जन आन्दोलन की जरूरत बतायी। उन्होंने घोषणा की कि भारत के गैर परंपरागत यानि नॉन-फॉसिल ईंधन उत्पादन के लक्ष्य को 2022 तक 175 गीगावाट को तीन गुणा से अधिक बढ़ाकर 400 गीगावाट तक पहुंचाने का संकल्प लिया है।

25 सितम्बर 2019 को भारत के प्रधानमंत्री मोदी को अमेरिका के न्यूयार्क में बिल एंड मेंडिला गेट्स फाउंडेशन ने ग्लोबल गोलकीपर अवार्ड से नवाजा। मोदी को यह अवार्ड बिल गेट्स ने स्वयं अपने हांथों से प्रदान किया। हर साल दिये जाने वाले इस अवार्ड की शुरूआत 2017 में हुई है। प्रधानमंत्री मोदी के पहले राष्ट्राध्यक्षों को यह अवार्ड मिल चुका है। खुले में शौच के लिए बदनाम भारत को पिछले पांच वर्षों में स्वच्छता के मापदंडों पर ऊपर लाने का श्रेय मोदी सरकार को ही है। 2014 के पहले जहां ग्रामीण स्वच्छता का दायरा 40% से भी कम था, आज वह बढ़कर 100% पहुंच रहा है। मोदी के स्वच्छ भारत जैसा अभियान दुनियां के किसी भी दूसरे देश में नहीं चलाया गया है। मोदी सरकार ने पूरे देश में पिछले पांच वर्षों में 11 करोड़ शौचालय बनवाया है। मोदी सरकार ने पिछले पांच वर्षों में 8 करोड़ गरीब परिवारों को कुकिंग गैस चूल्हा, गैस सिलिंडर और रेंगुलेटर के साथ मुफ्त में उपलब्ध कराया है। मोदी सरकार के स्वच्छ भारत मिशन में कई करोड़ भारतीयों के जीवन को बेहतर बनाया है और महिलाओं की गरीमा की रक्षा की है। बिल एंड मंडिला गेट्स फाउंडेशन की प्रकाशित रिपोर्ट से पता चलता है कि भारत में बेहतर ग्रामीण स्वच्छता के कारण बच्चों में फेफड़ों की समस्याओं में कमी आयी है और महिलाओं के बॉडी मास्क इंडेस्क में बेहतरी आयी है।

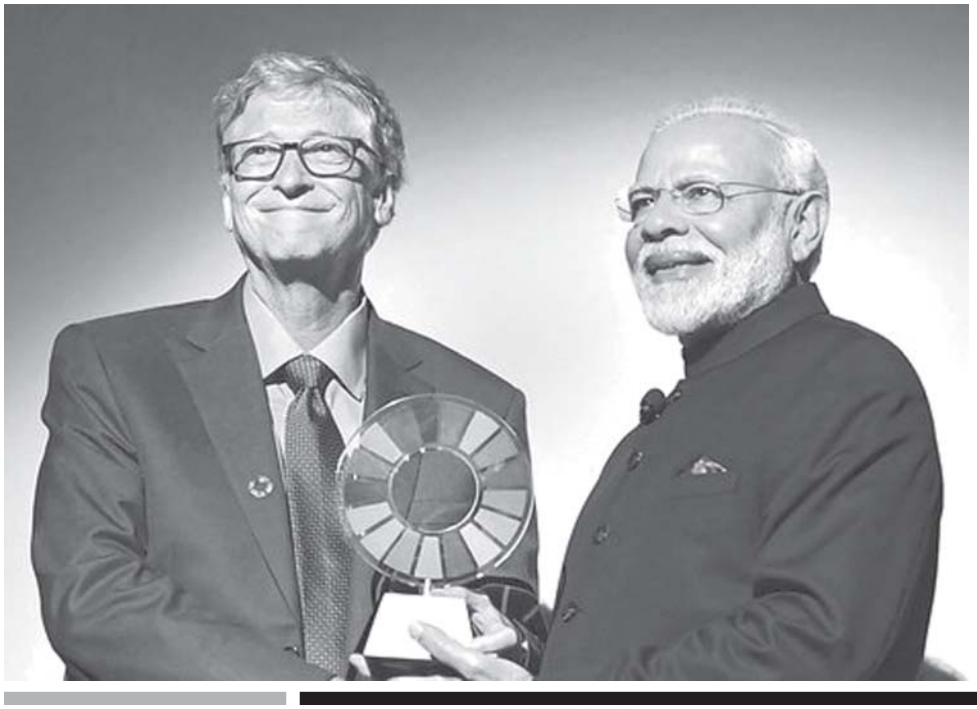

संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव एंतोनियो गुतारेस ने कहा है कि जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए अंतर्राष्ट्रीय प्रयास में भारत की भूमिका अहम है। भारत ने गैर परंपरागत ऊर्जा के विस्तार के लिए

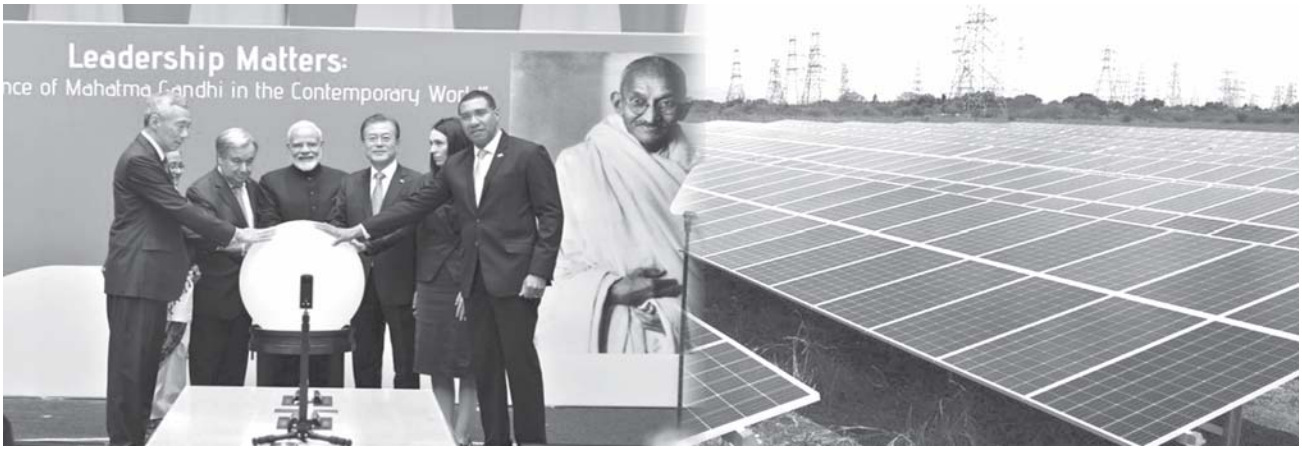

बेहतरीन प्रयास किये हैं। उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन में प्रधानमंत्री मोदी के मैत्रीत्व की तारीफ की और भारत द्वारा संयुक्त राष्ट्र संघ को दिये गये 193 सौर पैनल को बेहद उपयोगी करार दिया।

✯ **प्राकृतिक जंगलों की खास विशेषताएँ :-** केरल के वायनाड जिले में प्राकृतिक सदाबहार जंगल को खत्म करके वृक्षारोपण किया गया तो वह इलाका उत्तरोतर गर्म होने लगा और हवा में नमी बढ़ गई। नतीजा कम अंतराल में भारी बारिश होने लगी। इस तरह की बारिश से भयंकर बाढ़ आनी शुरू हो गयी और भू-स्खलन भी बढ़ गई। ऐसा इसलिए की प्राकृतिक जंगल को खत्म करके उसकी जगह पर वृक्षा रोपण करके पुन: पहले जैसे जंगल नहीं बनाये जा सकते हैं, क्योंकि नये सिरे से वृक्षा रोपण करके बसाये गये जंगल में पहले जैसी प्राकृतिक जंगल की गुणवत्ता को प्राप्त नहीं किया जा सकता है। नतीजा प्राकृतिक आपदाओं, बाढ़, भू-स्खलन, आदि की आवक बढ़ जाती है। अध्यन करने पर पता चला कि मजबूत जड़ों के कारण प्राकृतिक जंगल के बचे पेड़ तो खड़े रहे, पर बाकि सब उजड़ गये। बात यह है कि एक बार खत्म हो जाने के बाद प्राकृतिक जंगल को वृक्षारोपण द्वारा उसी रूप में नहीं बसाया जा सकता है। पहले विविध प्रकार के पेड़-पौधों से भरे प्राकृतिक जंगल को मनुष्यों ने काटना शुरू किया और फिर सरकार ने एक ही जाती के पौधों का पौध रोपण किया। अर्थात् एक ही प्रजाति के पौधों का विस्तार किया गया। नतीजा आज दुनियां भर के जंगलों में दावानल के रूप में देखने को मिल रहा है। पहले दावानल की घटनाएं बहुत कम होती थी और अब बहुत ज्यादा होने लगी है। बात यह है कि प्राकृतिक जंगल विभिन्न प्रकार कें पेड़ों के समुदायों का निर्माण करते हैं। भारत में विविध प्रकार के पेड़-पौधों के जंगल थे, जिन्हें अंग्रेजों ने काटकर फर्नीचर में लगा दिया और चीर के जंगलों का विस्तार करना शुरू कर दिया। हम भी अंग्रेजों का नकल करने लगे। नतीजा उतरांचल के पर्वतीय क्षेत्र में चीर का एक भी ऐसा जंगल नहीं है, जहां आग कभी न लगी हो। ऐसा इसलिए की जंगल कभी मानव निर्मित नहीं हो सकता। दरअसल प्राकृतिक जंगल के लिए प्राकृतिक विविधता की जरूरत होती है जो प्रकृति प्रदत्त होती है। मानव निर्मित चीर के जंगल खेत की तरह है। ऐसे में वहां आग लगेगी तो फैलने से कोई नहीं रोक पायेगा। पुराने जमाने में प्राकृतिक जंगलों के एक समुदाय में आग लगती थी तो दूसरा समुदाय उस आग को बढ़ने से रोक देते थे। मसलन सिकोइया दुनियां के ऊँचे पेड़, ओक (बांज) और चीड़ की कुछ प्रजातियों की छाल आग प्रतिरोधी होती है। हमारे द्वारा आज ऐसा संभव नहीं है, चाहे आमेजन के जंगल हो या उत्तराखण्ड के। उत्तराखण्ड के जंगलों में एकल प्रजाति के पौधों का विस्तार है जो आग लगने से नष्ट होने से रोक पाने में सक्षम नहीं है। इसलिए प्राकृतिक जंगलों की प्रकृति को नहीं छेड़ा जाना चाहिए, क्योंकि जंगल का जीवन उसकी विविधता है।

✯ **जरूरी है वन नीति में सुधार :-** अगर जंगलों को आग से बचाने में वनवासियों, आदिवासियों और स्थानीय लोगों की भागेदारी रहेगी तो जंगलों में आग लगने की घटनाएं कम से कम होगी, क्योंकि उनमें हमदर्दी होती है, आत्मीयता होती है। फिर जंगलों से जुड़े लोग ही जंगलों में लगी आग को बुझाने के लिए सबसे पहले आते हैं। इतना ही नहीं, जंगल की आग बहुत बड़ी होती है और सामान्यत: 15 किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्तार से सर्पिल आकृति में फैलती है। इसलिए वन विभाग के थोड़े से कर्मचारियों द्वारा इस पर काबू नहीं पाया जा सकता। फिर वनवासी और आदिवासी जंगल की आग बुझाने में बहुत माहिर होते हैं। अत: जंगल की आग पर बहुत जल्दी काबू पा लेते हैं। इसलिए जंगल की आग बुझाने के लिए हर हालत में उन्हें वनवासियों, आदिवासियों और स्थानीय लोगों की मदद लेनी ही पड़ेगी। हालांकि गलत वन नीति के चलते जंगलों से वनवासियों, आदिवासियों और स्थानीय लोगों के जुड़ाव में बहुत कमी आयी है। फिर भी जंगलों की सुरक्षा के लिए वे पीछे नहीं हटेंगे, क्योंकि जंगलों से उनका अटूट संबंध है। वनवासियों व आदिवासियों को खेत-खलियान और गांव-घर ना तो प्रकृति ने दिया है और ना ही किसी सरकार ने। जंगल के वाशिंदों ने अपनी हाड़तोड़ मेहनत से जंगल के बीच के खाली स्थानों, पहाड़ों के नीचे, नदियों के किनारे तथा जल-प्रपातों के आसपास खून-पसीना बहाकर खेती योग्य जमीन तैयार किया है और वृक्षों के पत्तों तथा उनकी शाखाओं की टहनियों से झोपड़ियां बनाकर सदियों से रहते आ रहे हैं। ये आदिवासी व वनवासी आदिकाल से ही अपने पुरखों के बनाये खेत-दोन को आबाद करते आ रहे हैं। तब खेत-दोन के लिए भूमि की छूट थी वन्य प्राणियों का आखेट और जंगल में उपलब्ध कंद-मूल इनका भोजन है। ये जलावन के लिए वृक्षों के सुखे पत्तों, जमीन पर गिरी छोटी-छोटी टहनियों तथा वृक्षों की टेढ़ी-मेढ़ी अनुपयोगी डालियों को काटते हैं। आदिवासी पीपल, बरगद, आम, कदम, पलास, शमी, आदि वृक्षों की पूजा करते हैं। अर्थात् ये लोग वृक्षों को देवता मानते हैं। आदिवासी अलग-अलग बिमारियों के लिए अलग-अलग वृक्षों की छाल, जड़, फल-फूल और पत्तों का इस्तेमाल करते हैं, आदि भविष्य के लिए बचाकर

जड़ी-बुटियों का इस्तेमाल करते हैं। जंगल, पहाड़, नदी ही नहीं, जंगली जानवरों को भी आदिवासी बचाकर रखते हैं। शिकार के दौरान ये मादा, गाभिन और शिशु जानवरों को नहीं मारते हैं। आदिवासी जंगल को सबकुछ मानते हैं। ये मानते हैं कि जंगल उन्हें भोजन, आवास और दवा देकर उनकी रक्षा करते हैं, तो उनका भी फर्ज बनता है कि जीवनदायी वन और वन संपदा की रक्षा करें। दरअसल जंगल में रहने वाले लोगों के लिए जंगल सिर्फ उनकी आजीविका का साधन नहीं बल्कि समग्र जीवनशैली है। कोई अपने पोषणकर्ता का विनाश कैसे कर सकता है। आदिवासियों की यही भावना जंगल के संरक्षण का मुख्य आधार है। जंगलों का संरक्षण ही पर्यावरण का संरक्षण है और पर्यावरण का संरक्षण ही समस्त प्राणियों का संरक्षण है। आदिवासियों के लिए जंगल, पहाड़ और नदी बहुत प्रिय है। इन सब के बिना आदिवासियों के जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। इसलिए ये लोग जंगल को बचाकर रखते हैं। स्पष्ट है कि आदिवासियों और जंगलों का बहुत ही घनिष्ट संबंध है। ये दोनो एक-दूसरे पर आश्रित है। आदिवासी समाज और संस्कृति की पहचान वन भूमि में खेती करना, जंगल में कंदमूल खाना, लकड़ी तथा अन्य जरूरत के चीजों का इकट्ठा करते रहना है। इसलिए प्रकृति प्रदत्त जीवन जीने के स्त्रोत जंगल पर इनका नैसर्गिक अधिकार है। लेकिन गलत वन नीति ने स्थानीय लोगों को जंगलों के लिए बहुत हद तक पराया जरूर बना दिया है। भारत सहित कई देशों की सरकारों ने जंगलों को सरकारी संपत्ति मानकर वहां के वनवासियों को शरणार्थी बना दिया है। नतीजा आग लगने पर वे अब आग बुझाने के लिए जंगलों में जाते ही नहीं है और आग फैलती रहती है। इसलिए यह जरूरी है कि वनवासियों को तथा जंगल के आसपास के गांवों में बसे लोगों को विश्वास में लेकर सरकारें वन सुरक्षा समितियां बनाएं और जंगलों को बचाने की जिम्मेदारी उन्हें सौंप दे। अत: सरकार को जंगलों से आदिवासियों,

वनवासियों और स्थानीय लोगों के पावन रिश्ते को नहीं भूलना चाहिए। सरकार को इस बात की समझ होनी चाहिए की जंगल से वनवासियों और आदिवासियों का रिश्ता मजबूत बनाये बिना जंगलों को आग और उससे होने वाले नुकसान से नहीं बचाया जा सकता है। इसलिए सरकार को गलत वन नीति में अविलंब सकारात्मक परिवर्तन करनी चाहिए, जिससे की जंगलों के प्रति आदिवासियों, वनवासियों और स्थानीय लोगों का अपनापन पुन: प्राप्त किया जा सके और भविष्य में भी बराबर बनाया रखा जा सके।

भले ही हम आधुनिकता का चोला पहन ले, शहरों में बहुमंजिली इमारत खड़ी कर लें, हवाई जहाज में उड़ने लगे, लेकिन जंगलों की अहमियत को भूल

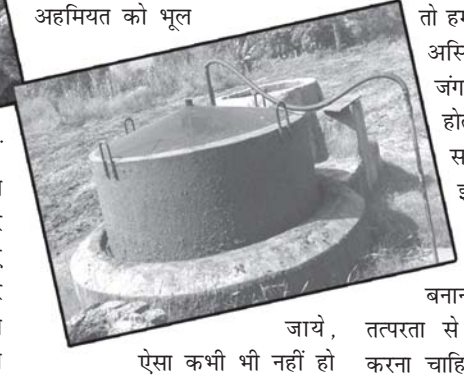

जाये, ऐसा कभी भी नहीं हो सकता। हम इस सच्चाई से कभी भी मुंह नहीं मोड़ सकते हैं कि जंगल ही हमारे जीवन का आधार है। जंगल ना सिर्फ ऑक्सीजन का एकमात्र स्त्रोत है, शुद्ध हवा का एकमात्र स्त्रोत है बल्कि हवा को शुद्ध बनाये रखने में यानि हवा को प्रदूषण रहित बनाये रखने का एकमात्र साधन भी है। जंगल एक ऐसी प्राकृतिक मशीन है, जो ऑक्सीजन पैदा करता है और जहरीली कॉर्बन डाईऑक्साइड का अवशोषण करता है। इससे स्पष्ट है कि जब जंगल ही नहीं बचेंगे तो हम कैसे बचेंगे, तब हमारा अस्तित्व ही मिट जायेगा। जंगल तो हर देश के फेफड़े होते हैं, इसलिए उसे बचाना सबसे ज्यादा जरूरी है। इसलिए दुनियां के सभी जंगलों को आग से बचाने के लिए ठोस योजनाएं बनानी चाहिए और उनपर तत्परता से ईमानदारीपूर्वक अमल करना चाहिए। ●

(लेखक फायर एण्ड सेफ्टी विशेषज्ञ हैं।)
मो०:- 9334107607
वेबसाईट :www.psfsm.in

सर्वोच्च अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कारों के शंहशाह हैं प्रधानमंत्री मोदी

☞ **ऑर्डर ऑफ अब्दुलअजीज अल सेश (अप्रैल 2016) :-** सउदी अरब का सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार।
☞ **स्टेट ऑर्डर ऑफ गाजी अमिर अमानुल्लाह खान पुरस्कार (जून 2016) :-** अफगानिस्तान का सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार।
☞ **ग्रांड कॉलर पुरस्कार (फरवरी 2018) :-** विदेशी मेहमानों के लिए फलस्तीन का सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार।
☞ **चैम्पियन ऑफ द अर्थ (सितम्बर 2018) :-** संयुक्त राष्ट्र का सर्वोच्च पर्यावरण पुरस्कार।
☞ **सियोल शान्ति पुरस्कार (अक्टूबर 2018) :-** दक्षिण कोरिया का सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार।
☞ **फिलिप कोटलर पुरस्कार (जनवरी 2019) :-** केलॉग स्कूल ऑफ मैनेजमेंट पुरस्कार।
☞ **सेंट एंड्रय पुरस्कार (अप्रैल 2019) :-** रूस का सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार।
☞ **सुल्तान बिन जायेद पुरस्कार (2019) :-** यूएई का सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार।
☞ **निशान इच्यूद्दीन (जून 2019) :-** मालदीप का सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार।
☞ **द किंग हमद ऑर्डर ऑफ द रेनेसा (अगस्त 2019) :-** बहरीन का तीसरा सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार।
☞ **ग्लोवल गोलकीपर्स अवार्ड (सितम्बर 2019) :-** बिल एंड मेलिंडा फाउंडेशन द्वारा प्रदत्त सर्वोच्च पुरस्कार।

निकट भविष्य में शीघ्र ही प्रधानमंत्री मोदी को पर्यावरण, स्वच्छता और आतंकवाद के विरूद्ध मजबूती से लड़ने तथा पूरी दुनियां को आतंकवाद के विरूद्ध एकजुट करने को लेकर दुनियां के सर्वोच्च पुरस्कार 'नोबेल' पुरस्कार मिल सकता है। लेकिन आश्चर्य की बात है कि दुनियां के अनेक देशों के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कारों से सम्मानित भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को अब तक अपने ही देश के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार 'भारत रत्न' से सम्मानित क्यों नहीं किया गया है? तीन तलाक, अनुच्छेद 370 और अनुच्छेद 35ए से देश को मुक्ति दिलाने वाले देश की सुरक्षा तंत्र को बेहद मजबूत बनाने वाले तथा पूरी दुनियां में भारत को महिमामंडीत करने वाले देश के इस महान यशस्वी सपूत को देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न से अभी तक नहीं नवाजा गया है। सच ही कहा गया है 'देश की मुर्गी दाल बराबर'।

आईआईटी रूढ़की में प्रतिवर्ष धूमधाम से मनाया जाता है थॉम्सो

● श्रीधर पाण्डेय

आईआईटी रूड़की में 'थॉम्सो' अपने प्रारंभिक वर्ष 1982 से ही यानि 37 वर्षों से प्रतिवर्ष धूमधाम से मनाया जा रहा है। इस सांस्कृतिक पर्व में भाग लेने के लिए देश भर से हजारों लोग एकत्रित होते हैं। 'थॉम्सो' न केवल कला, संस्कृति और अभिव्यक्ति का संगम है बल्कि युवा जोश और उत्साह के साथ आईआईटी रूड़की की सांस्कृतिक विरासत को शान से प्रदर्शित करने वाला माध्यम है। इस पर्व का नाम इसके संस्थापक सर जेम्स थॉमेसन को नाम पर रखा गया है, जो 1843-53 तक लेफ्टिनेंट गवर्नर रहे और जिन्होंने 1853 में थॉमेसन कॉलेज ऑफ सिविल इंजिनियरिंग की स्थापना की। बाद में सन 1948 में यही कॉलेज रूड़की विश्वविद्यालय बन गया और वर्ष 2001 से इसे आईआईटी रूड़की कहा जाने लगा। इस पर्व की 37 वर्ष की समृद्ध विरासत है जिसका विस्तार प्रतिवर्ष हो रहा है। 'थॉम्सो' इस संस्थान के एक प्रमुख ब्रांड बन चुका है जोकि एक प्रकार से देश भर में इस संस्थान की राष्ट्रीय महत्ता को प्रदर्शित करता है। प्रत्येक वर्ष देश भर के हजारों कॉलेज इस विशाल सांस्कृतिक उत्सव में भाग लेते हैं। इस प्रकार से एक स्थान पर विभिन्न संस्कृतियों, विचारों और नूतन उपायों का समागम होता है।

कहते हैं "Rome wasn't built in a day" यानि रोम शहर का निर्माण एक दिन में नहीं हुआ था। 'थॉम्सो के बारे में भी यही कहा जा सकता है। चाहे एक भव्य शहर बनाना हो या फिर भव्य पर्व, आपको इसकी एक-एक ईंट लगाने का कठिन

श्रम करना होगा। वर्ष 1982 में 'तरंग' (जोकि इस पर्व का पूर्व नाम था) के बाद अब 'थॉम्सों' नाम से यह पर्व पिछले 37 वर्षों से लोगों के दिलों को जीत रहा है। प्रतिवर्ष इसकी टीम इस पर्व की तैयारियों को बिल्कुल नए तरीके से शुरु करती है ताकि इस जनता के लिए एक भव्य और यादगार अनुभव बनाया जा सके। ऐसा करने के लिए केवल दो बातें उनके मस्तिष्क में रहती हैं - इस पर्व की प्रतिष्ठा और थाम्सो के प्रत्येक पर्व को इसके पिछले पर्व से बिल्कुल नया और अलग बनाने का जज्बा जो प्रत्येक व्यक्ति के लिए प्रेरणास्रोत बने। पर्व की तैयारियों का पहला कदम होता है इसकी विषयवस्तु तय करना यानि कि वो मुख्य विचार जिस पर यह पर्व आधारित होगा। इस पर बहुत सी चर्चाएं, परिचर्चाएं होती हैं, नए-नए विचार मिलते हैं जिसके आधार पर विषयवस्तु तय होती है और फिर काम शुरु होता है। विषयवस्तु तय होने के बाद हम प्रायोजकों के पास जाते हैं ताकि अपेक्षित वित्तीय सहायता और अन्य महत्वपूर्ण संसाधन प्राप्त हो सके। टीम के सदस्य मार्किटिंग और ब्रांडिंग के लिए कुछ नए और सबसे अलग तरीकों को अपनाते हैं और प्रायोजकों को राष्ट्रीय स्तर पर प्रोत्साहित करते हैं। और इस प्रकार से 'थॉम्सो' का विचार सहयोग और साझेदारी के बल पर पूरे देश में फैलता है। 'थॉम्सो' का सौभाग्य है कि पिछले कुछ वर्षों में इस पर्व के साथ पैप्सी, टीसीआईएल, हीरो, कलर्स ऑफ यूथ, 9एक्सएम, ओएनजीसी, गेल, एनएचएलएलआर, एनबीसीसी, जेब्रियोनिक्स जैसे कई विख्यात ब्रांड जुड़े हैं। साथ ही साथ इस पर्व की जीवनरेखा यानि कि इसके इवेंट्स की योजना बनाई जाती है। इस पर्व में 150 से भी अधिक इवेंट आयोजित होते हैं और इवेंट टीम के पास पूरा करने के लिए एक बहुत बड़ा कार्य है। प्रति वर्ष इवेंट बढ़ते रहते हैं और दर्शकों की संख्या बढ़ाने के लिए इनमे समुचित संशोधन किए जाते हैं। इवेंट्स की सूची तैयार होने के बाद इनकी पूरी विस्तृत पद्धति तैयार करते हैं. इसके लिए टीम से नए-नए सुझाव लिए जाते हैं और प्रत्येक इवेंट की छोटी से छोटी बारिकियों पर भी विशेष ध्यान दिया जाता है। इसके बाद इवेंट्स की तिथि, स्थल, समय और संचालकों का निर्धारण किया जाता है ताकि आपस में कोई टकराव न हो। साथ ही, हमें सामान लाने-लेजाने

संबंधी तैयारियों, प्रतियोगिताओं के निर्णायकों का चयन और सलिब्रिटियों, मुख्य अतिथियों आदि से बातचीत करने जैसी जिम्मेदारियों का निर्वाह करना होता है।

इवेंट प्रबंधन भी एक महत्वपूर्ण कार्य है। इवेंट इस पर्व का मुख्य भाग होते हैं अत: यह सुनिश्चित करना आवश्यक होता है कि वे समुचित रूप से आयोजित किए जाएं। चाहे वो किसी दस्तावेज में पूर्ण विराम छूट जाए या फिर कोई विशेष अतिथि, सारी जिम्मेदारियां इवेंट प्रबंधन टीम के कंधों पर ही रहती है। हमें यह सुनिश्चित करना होता है कि इवेंट अपने निर्धारित समय पर प्रारंभ हो, अतिथि स्थल पर पहुंच जाएं और सभी प्रतिभागी वहां उपस्थित रहें, इवेंट का समुचित संचालन किया जाए, सभी उपकरण ठीक ढंग से काम कर रहे हों, सभी आवश्यक सामान स्थल पर पहुंच चुका हो और फिर भी यदि किसी अप्रत्याशित स्थिति का सामना करना पड़े तो उसकी भी पूरी तैयारी रहे। प्रत्येक इवेंट के संचालन के लिए तीन दिन तक टीम पूरी तरह से सजग रहकर काम करती है। 'थाम्सो' का एक अविस्मरणीय इतिहास रहा है जिसे श्री कामेंद्र कुमार के ऊर्जावान नेतृत्व से और अधिक बल मिला। श्री कामेंद्र कुमार, थाम्सो के पहले संयोजक हैं। वे वर्ष 81-82 में स्टूडेंट्स असोसिएशन के अध्यक्ष रह चुके हैं और वर्तमान में टीसीआईएल (संचार मंत्रालय के अधीन सार्वजनिक उद्यम) के निदेशक तकनीकी पद पर कार्यरत

हैं। इसके अलावा, एलजी, एलस्टॉम और डीआरडीओ जैसी कंपनियों में काम करने का प्रगाढ़ अनुभव उनके पास है। आईआईटी रूड़की के अल्यूमनी सदस्य इस सांस्कृतिक पर्व को सफल बनाने के लिए हरसंभव मार्गदर्शन और सहयोग देते हैं। आईआईटीआर अल्युमनी असोसिएशन अपने निरंतर सहयोग के लिए हमेशा से ही हमारी महत्वपूर्ण साझेदार रही है। 'थॉम्सो' का हमेशा से ही यह प्रयास रहा है कि इसे एक सफल आयोजन बनाने के लिए जितने भी सदस्यों का योगदान रहा है, वह योगदान इसकी सफलता गाथा में प्रतिबिंबित हो। इस पर्व की सफलता के पीछे हमारी टीम के साथ-साथ निश्चित रूप से पैप्सी, ओएनजीसी, गेल, हीरो, कलर्स ऑफ यूथ, एनएचएसआरएल, यूसी ब्राउजर, जेब्रियोनिक्स जैसे हमारे प्रतिष्ठित साझेदारों का योगदान रहा है। उनके इस योगदान की बदौलत 'थॉम्सो' पर्व का हिस्सा बनने वाले लोगों की संख्या 20 लाख से भी ऊपर हो गई है और यह हर साल बढ़ रही है। 'थॉम्सो" ने सामाजिक कार्य के क्षेत्र में भी एक बड़े स्तर पर उपलब्धियां प्राप्त की हैं और युवा प्रतिभाओं को निखारने और उन्हें लोकप्रिय बनाने के लिए भी यह महत्वपूर्ण मंच है क्योंकि यहां प्रतिभाओं को एक बड़ा दर्शक वर्ग मिल जाता है। हम ग्रीन पीस, पेटा इंडिया, क्राई, एमएआरडी, स्माइल फाउंडेशन, आनंदी शेरोज, टेक फार इंडिया, वेस्ट वारियर्स इत्यादि प्रख्यात गैर-सरकारी संस्थाओं तक पहुंचे हैं जो पूरे जोश के साथ इन इवेंट्स का हिस्सा बनते हैं और लोगों के बीच महत्वपूर्ण सामाजिक विषयों को लेकर जागरूकता का प्रसार करते हैं। इन गैर सरकारी संगठनों के साथ 'थाम्सो' की भागीदारी का प्रमुख उद्देश्य भी यही है कि लोगों के बीच महिला सशक्तिकरण, बाल शिक्षा, स्वच्छ भारत अभियान जैसे सामाजिक मुद्दों पर जागरूकता का प्रसार किया जाए और कैंसर पीड़ित रोगियों और गरीबी उन्मूलन की दिशा में सहयोग दिया जा सके।

थॉम्सो का ऐसा जादू है जो हमारे भीतर की वो प्रतिभा को सार्वजनिक कर सकता है जिसके बारे में हम भी नहीं जानते हैं। थॉम्सो नाम अब हमारे गर्व का प्रतीक बना गया है। ऐसे विशाल समारोह की सफलता हमें एक बहुत बड़ी उपलब्धि का एहसास दिलाती है। यह हमें प्रेरणा देती है कि हम अपना विश्वास बनाए रखे। एक समारोह के आयोजन से हमें धैर्य, संयंम, नेतृत्व और निर्णय लेने की क्षमता जैसे कई गुण सीखने को मिलते हैं। टीम के कठिन परिश्रम को प्रशासन, हमारे उदार प्रायोजकों और हमारी प्यारे दर्शकों का भी असीम समर्थन मिलता है। थॉम्सो में यद्यपि सभी लोग अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान देने का प्रयास करते हैं पर कुछ ऐसे भी क्षण आए जब हमारे प्रयासों को विफलताएं देखने को मिली। पर हमारा मानना है कि व्यक्ति अपनी गलतियों से ही सीखता हुए धीरे-धीरे ही संपूर्णता प्राप्त करता है। हम अपनी गलतियों से सीखते हुए थॉम्सो को एक नई ऊंचाइयों तक ले जाने के लिए प्रतिबद्ध है।

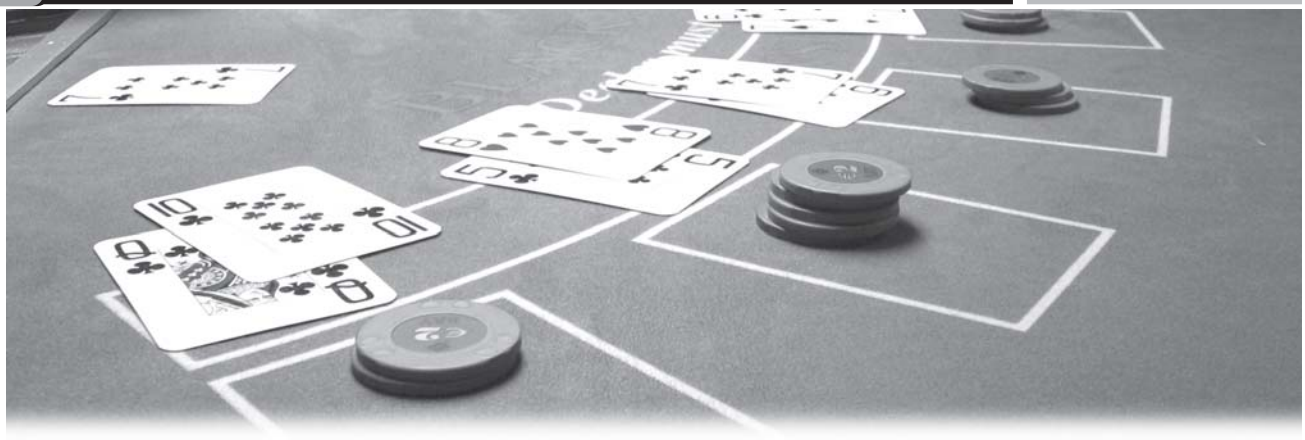

A Brief History of Blackjack

As is the case with many casino games, the origins of blackjack are unknown. The earliest version of the game was played by the Romans, but instead of cards, they used wooden blocks of different numerical values. The French had a version of blackjack called 21 which is roughly similar to the game played in Nevada from 1931. What's interesting about this historical version of it is that the five of clubs was known as Watson's card, not to be confused with Dr. Watson, Sherlock Holmes' trusty assistant, according to a certain Mr. Watson who was a famous blackjack player. The Spanish also had a version of blackjack called 31. Naturally the rules varied from version to version and they are entirely different from the way blackjack is played today. Land-based casinos provide a certain irreplaceable feeling when it comes to the atmosphere of gaming. They're still popular, but not as popular as online casino games. With the advancements in technology, the casino industry moved their games from the tables to the net. The graphics were not perfect and despite being 2D animations they took forever to load.

Along came 3D graphics and the games were remade. New shiny graphics took over and along came new types of games. Variants such as live, single deck, double deck, and VIP blackjack are offered at every online casino. Various bonuses come with the games too so players have a tough time choosing a site to play on. If you're looking for some of the best promotions then go to Royal Panda's online blackjack page or the blackjack page of LeoVegas, 888 Casino or any other top-ranking sites. With new tech trends paving the way for many industries, blackjack was adapted to keep up with the pace. Smartphones became the next big thing so all the websites offering blackjack and other games had to become mobile-friendly.

Blackjack apps were made to increase the availability of the game so fans can play it on the go.

☞ **The Security Issue :-** Being able to play blackjack anywhere is great, but in this digital era, anyone is prone to scams. Top ranking sites make sure the customer is given every manner of protection. Transactions are SSL encrypted and identity confirmations are made with every withdrawal. Random number generators were introduced to blackjack pretty early on. They're also encrypted. An online blackjack's algorithm keeps the numbers random and with that, it keeps the game fair. The chances of getting cheated at an online casino site are minute.

☞ **The Future of Blackjack :-** Virtual Reality is slowly placing its foothold in the gaming industry. There are already several titles that are popular with gamers so companies will likely keep making VR games in the future. What does this mean for blackjack? Since online casinos always look for new ways to keep their users entertained they'll implement VR technology into blackjack. By turning your head you'll be able to see the staff wondering about, other tables and even other player's avatars seated at them.

पराली जलाने का गंभीर परिणाम है मिट्टी की उर्वरता का क्षरण

● ललन कुमार प्रसाद

हमारी तीन बुनियादी जरूरतें हैं- रोटी, कपड़ा और मकान। इनमें सर्वाधिक बुनियादी जरूरत है रोटी। दुनियां भर में पेट भरने के मुख्य आहार है-अनाज, सब्जी और फल, जो मिट्टी की उर्वराशक्ति पर निर्भर करती है। अर्थात् जो भूमि की ऊपरी सतह की उर्वरता पर निर्भर करती है, जिसे हम मिट्टी कहते हैं। हम सभी जानते हैं कि पौधों, वृक्षों और वनस्पतियों को उगाने का आधार मिट्टी है। बगैर मिट्टी के ऐसा किया जाना नामुमकिन है। दरअसल कॉर्बनिक पदार्थों की मौजूदगी से भूमि समृद्ध होती है। एक ग्राम मिट्टी में पांच करोड़ सूक्ष्म जीवाणु होते हैं, जो मिट्टी को उपजाऊ बनाते हैं और इन सूक्ष्म जीवों का जीवन मिट्टी में मौजूद कॉर्बनिक पदार्थों पर निर्भर है।

खेतों में लगी पराली जलाने की परंपरा तेज रफ्तार से फसल उगाने से जुड़ी हुई है। जो विगत दो दशकों से शुरू हुई है। जिसका परिणाम है मिट्टी की उर्वराशक्ति का क्षरण और गंभीर वायु प्रदूषण।

★ **पराली क्या है? :-** खेतों में धान और गेंहू की पूरी तरह से पककर तैयार हो गई फसलों की बाली को काट लेने के बाद पुआल लगी डंठल जो शेष बच जाती है, उसे पराली कहते हैं। पराली यानि कटाई के बाद खेतों में बची फसल अवशेष। सर्दियों में देश की राजधानी दिल्ली और बिहार की राजधानी पटना सहित देश के तमाम बड़े शहर जहरीली गैसों का चेम्बर बन जाते हैं और इनमें से कई शहर स्मॉग की समस्या से जुझ रहे हैं, जिसका एक बहुत ही बड़ा कारण है, दस से पन्द्रह दिनों के अंदर लाखों एकड़ खेत में लगी पराल को किसानों द्वारा जलाया जाना। खेतों में लगी पराल को जलाने का एक ही उद्देश्य, तेज रफ्तार से फसल उगाने से जुड़ा है। जो विगत कुछ दशकों से चल रहा है और जिसका परिणाम है, गंभीर वायु प्रदुषण तथा मिट्टी की उर्वरा शक्ति का क्षरण। सूखी होने, बहुत तेजी से जलने और बहुत तेजी से फैलने के कारण कुछ ही घंटों में लाखों एकड़ खेत में लगी पराल जलकर राख में तब्दील हो जाती है। यही कारण है कि पराली अत्यंत तेजी से पर्यावरण को बुरी तरह प्रदुषित कर देती है। एक अनुमान के अनुसार देश में हर साल धान और गेंहू की फसलों की कटाई के बाद करीब 60 करोड़ टन पराली दो बार में यानि छः-छः माह के अंतराल पर 10-30 दिनों में जला

दी जाती है। पराली को जलने में तो सिर्फ 10-30 दिन लगते हैं, लेकिन उससे उत्पन्न धुंआ और जहरीली गैसें वातावरण में महीनों छायी रहती है। खेतों में पराली के जलाने से मिट्टी भी कुछ हद तक निर्जीव हो जाती है, क्योंकि मिट्टी में मौजूद असंख्य सूक्ष्म जीव, केचुआ आदि आग की गर्मी से झुलसकर मर जाते हैं तो मिट्टी में जैविक तत्वों का बनना कुछ हद तक रूक जाता है। नतीजा मिट्टी की उर्वराशक्ति का क्षरण हो जाता है। हम सभी जानते हैं कि जमीन की सेहत के लिहाज से केचुआ कितना महत्वपूर्ण है। जब हम पराली जलाते हैं तो खेत का कॉर्बन जल जाता है जबकि केचुआ इसी कॉर्बन को खाकर जिंदा रहता है। सोचिए ऐसे में केचुए का क्या होगा? फिर कॉर्बन के खत्म हो जाने से जमीन की जल संरक्षण क्षमता भी खत्म हो जाती है।

ध्यान रहे कि खेत की मिट्टी बायोफैक्ट्री की तरह है। लेकिन खेतों में लगी पराल को जलाने पर आग की गर्मी से मिट्टी में मौजूद असंख्य सूक्ष्म जीव, केचुए आदि मर जाते हैं। लेकिन, बहुत हद तक नहीं मरते। गनीमत है कि खेतों में पराली जलाने से मिट्टी में मौजूद सूक्ष्म जीव पूरी तरह से नहीं मरते हैं। अर्थात् मिट्टी पूरी तरह से निर्जीव नहीं हो पाती है, वरना किसान भाई बुरी तरह से बर्बाद हो जाते। ऐसा इसलिए कि धरती की उपरी परत

की एक इंच मोटी मिट्टी की परत को उपजाऊ बनाने में प्रकृति को 300 से 800 वर्ष लग जाते हैं। दरअसल पराली जलाने से खेतों में लगाई गई आग बहुत तेजी से फैलती है। लेकिन, सघन ईंधन के आभाव में बहुत तेजी से स्वत: बुझती चली जाती है। इसलिए पराली में लगी आग खेतों की ऊपरी परत की मिट्टी को ठीक से झुलसा नहीं पाती। नतीजा मिट्टी कुछ हद तक ही निर्जीव हो पाती है।

पराली में लगी आग के चलते निकलने वाली धूंआ और कॉर्बन डाईऑक्साइड के कारण जमीन के ऊपरी सतह से छ: फीट की ऊँचाई तक पाये जाने वाले मित्र किटों का पलायन हो जाता है या मौत हो जाती है। पराली में आग लगने से तितली प्रजाती वाले जीवों जैसे-जुगनू, फतिंगों के साथ ही वैसे कीटों को सर्वाधिक नुकसान पहुंचता है, जिनके डंक और पूंछ होती है। फिर पराली को जलाने से वायुमंडल में कॉर्बन डाईऑक्साइड की मात्रा बहुत अधिक तेजी से और बहुत अधिक मात्रा में बढ़ती है, जिसके कारण पर्यावरण प्रदूषण के साथ-साथ जलवायु परिवर्तन भी हो रहा है।

पराली में आग लगाने से वे मिट्टी में उपलब्ध जैविक कॉर्बन के साथ-साथ जमीन के लिए जरूरी पोषक तत्व नष्ट हो जाते हैं। मिट्टी में नाइट्रोजन की कमी हो जाती है। इसके कारण मिट्टी की उर्वराशक्ति घट जाती है। हाल ही में कृषि विभाग ने आग से प्रभावित मिट्टी की अंकुरण क्षमता का परीक्षण किया तो पाया है इसमें 15 फिसदी से कम उर्वराशक्ति पायी गयी है। इसलिए सरकार 'हरित चादर योजना' के तहत ढ़ैंचा, मूंग और उरद की खेती को बढ़ावा देने का प्रयास कर रही है। हरित चादर योजना के तहत किसानों को 90% अनुदान पर ढ़ैंचा, मूंग और उरद के बीच दे रही है। बावजूद इसके खेत के किसानों द्वारा खेतों में पराली जलाने के चलते सरकार द्वारा चलायी जा रही हरित चादर योजना को बड़ा झटका लगा है। ऐसा इसलिए कि खेतों में पराली के चलते मिट्टी इस हद तक निर्जीव हो गई है कि अब इस समस्या को और अधिक नजरअंदाज नहीं किया जा सकता, क्योंकि खेतों में बीजों के अंकुरण पर बड़ा ही प्रतिकूल असर पड़ रहा है।

★ जबर्दस्त नुकसानदेय है पराली जलाना :- एक टन पराली जलाने से 146 किलो कॉर्बन डाईऑक्साइड, 6 किलो कॉर्बन मोनोऑक्साइड, 2 किलो सल्फर डाईऑक्साइड और 3 किलो धूलकण (पार्टिकुलेट मैटर) निकलता है तथा 199 किलो राख बनती है। हमारे देश में हर साल करीब 60 करोड़ टन पराली जलायी जाती है, जिससे 7 करोड़ 66 लाख टन कॉर्बन डाईऑक्साइड, 36 लाख टन कॉर्बन मोनो ऑक्साइड, 12 लाख टन सल्फर डाईऑक्साइड और 18 लाख टन धूलकण निकलता है तथा 11 करोड़ 94 लाख टन राख बनती है। इसी से आप अंदाजा लगा सकते हैं कि देश भर में हर साल किसानों द्वारा पराली जलाने से हवा किस कदर प्रदूषित हो जाती है तथा वातावरण धूल से भर जाता है। यही कारण है कि पंजाब, हरियाणा और दिल्ली के सीमावर्ती उत्तर प्रदेश के इलाकों में किसानों द्वारा पराली जलाने से 200 वर्ग किलोमीटर में फैली दिल्ली में रहने वाली आबादी के लिए सांस लेना भी दुभर हो जाता है। कुछ हफ्तों के लिए दिल्ली के स्कूलों में छुट्टी दे दी जाती है, आम जनता का सुबह में टहलना और पार्कों में जाकर कसरत करना और दौड़ना बंद हो जाता है। ज्यादा से ज्यादा समय के लिए दिल्ली वासी घर में दुबक कर रहने के लिए मजबूर हो जाते हैं। ढ़ेर सारे समृद्ध परिवारों के लोग हर साल नवम्बर से दिसम्बर तक के लिए पहाड़ों पर सैर सपाटें के लिए निकल जाते हैं तथा देश के दूसरे राज्यों में अपने-अपने रिश्तेदारों के यहाँ रहने के लिए चले जाते हैं। दिल्ली में दूसरे राज्यों से आकर पढ़ने वाले छात्र दिल्ली छोड़कर अपने-अपने गृह राज्यों में चले जाते हैं। जिससे उनको पढ़ाई में काफी नुकसान पहुंचता है। मधुमेह से ग्रसित लोग, जिनके लिए नित्य चार-पांच किलोमीटर टहलना जरूरी होता है, उनका टहलना बंद हो जाता है। लोग गैस मास्क लगाकर स्कूटी, स्कूटर और बाइक चलाने को मजबूर हो जाते हैं। जाड़ा के तीन महीनों के लिए वायु प्रदूषण को लेकर पूरी दिल्ली में त्राहीमाम की स्थिति पैदा हो जाती है।

★ पराली जलाने से मिट्टी के पोषक तत्वों की जबर्दस्त बर्बादी होती है :- पराली जलाने से मिट्टी को मिलने वाले पोषक तत्व जमीन को नहीं मिल पाता है, यू ही बर्बाद हो जाता है। एक टन पराली में 60 किलो पोटाश, 30 किलो नाइट्रोजन और 60 किलो सल्फर मौजूद होता है। इस तरह 60 करोड़ टन पराली में 3 करोड़ 60 लाख टन पोटाश, एक करोड़ 80 लाख टन नाईट्रोजन, 42 लाख टन सल्फर और 4 करोड़ 80 लाख टन जैविक कॉर्बन मौजूद रहता है। पराली जलाने पर इतनी भारी मात्रा में मिलने वाले पोषक तत्वों से मिट्टी वंचित हो जाती है। इसलिए किसानों तथा केन्द्र व राज्य सरकारों को इस बात पर गंभीरता से सोचना चाहिए और तीनों को मिलकर हर संभव प्रयास करना चाहिए कि पराली न जलायी जाये, बल्कि पराली सहित खेतों को जोतकर मिट्टी में मिला दी जाये। आलू, मूंगफली, मूंग और उरद जैसी फसलों के अवशेषों को भूमि में जोतकर मिला सकते हैं।

खेतों में पराली जलाने से मिट्टी के जैविक कॉर्बन बहुत हद तक खत्म हो जाते हैं, जिससे मिट्टी की जल संरक्षण क्षमता बहुत हद तक कम हो जाती है और इसलिए जमीन में नमी की कमी हो जाती है। नतीजा जिन इलाकों में जमीन की नमी कम हो रही है, वहाँ भू-जल स्तर घटता जा रहा है। जिस इलाके में भू-जल स्तर घट रहा है, वहां रसायनिक खाद के मुकाबले कंपोस्ट खाद का इस्तेमाल करने से जमीन की भू-जल क्षमता में सुधान होने लगता है और पराली जैसे फसल-अवशेष को आसानी से बगैर

किसी खर्च के कंपोस्ट खाद में बदला जा सकता है। केले की फसल के बचे अवशेषों से यदि कंपोस्ट खाद तैयार करे तो उससे अच्छी-खासी मात्रा में नाइट्रोजन, फॉस्फोरस और पोटाश प्राप्त किये जा सकते हैं। ध्यान रहे कि यदि मिट्टी में नमी कम हो जाये तो जमीन के बंजर होने का खतरा बढ़ जाता है। लेकिन पराली से तैयार कंपोस्ट खाद का इस्तेमाल करने पर मिट्टी की नमी बढ़ जाती है और इसलिए कम सिंचाई से काम चल जाता है।

★ किसान पराली क्यों जलाते हैं? :- सरकार ने पराली जलाने को अपराधीकृत घोषित कर दिया है। यदि कोई किसान अपने खेत में पराली जलाते हुए पाया जाता है तो दो एकड़ रकवा वाले किसान से 2500 रूपये, दो से पांच एकड़ वाले किसान से 5 हजार रूपये और पांच एकड़ से अधिक रकवा वाले किसान से 15 हजार रूपये हर्जाना वसूलने का प्रावधान किया गया है। फिर भी पूरे देश में पराली क्यों जलायी जा रही है। साल भर में तीन फसल लेने का लालच न केवल मिट्टी की उर्वरता का क्षरण कर रही है, बल्कि गंभीर पर्यावरणीय संकट को जन्म दे दिया है। बात यह है कि वर्तमान में आधुनिक कृषि के तहत खेतों में पककर तैयार हो गई धान और गेंहू की कटाई हार्वेस्टर मशिनों से की जाती है। जिसके चलते एक फीट से ज्यादा ऊँचे पुआल लगे डंठल खेतों में ही बच जाते हैं। मिट्टी में इस जीवाष्म पदार्थ को बचाना बेहद जरूरी है और वह भी तब, जब खेती में रसायनिक उर्वरकों का इस्तेमाल धड़ल्ले से किया जा रहा है। ये रसायनिक उर्वरक कृषि मित्र सूक्ष्म जीवाणुओं को ही खत्म कर देते हैं। इसलिए खेतों में पराली जलाना बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है। धान की कटाई के बाद लगभग एक माह के अंदर ही किसान रवी फसल की बुआई शुरू कर देते हैं। इसलिए उन्हें खेतों में लगी पराली को जलाना सर्वाधिक सुविधाजनक लगता है। दरअसल किसानों को मिट्टी की उर्वराशक्ति को बचाने और वायु को प्रदूषित होने से ज्यादा चिंता अगली फसल की बुआई की होती है। जिससे मिट्टी की उर्वरता और हवा की स्वच्छता को बहुत अधिक नुकसान पहुंच रहा है। इससे स्पष्ट है कि किसान नादानी में पराली नहीं जला रहे हैं, बल्कि जान बूझकर जला रहे हैं। दिन के उजाले में सीना ठोककर पराली जलाते हैं, कानून का उपहास करते हैं, जुर्माना भी नहीं देते हैं और सरकार मूकदर्शक बनी हुई है। यह किसानों द्वारा किया जा रहा जुल्म नहीं तो और क्या है। यह किसानों द्वारा मानवता के विरूद्ध आतंकीकृत है, शर्मनाक कृत्य है, शर्मसार कर देने वाला कृत्य है, अन्नदाता के नाम पर कलंक है। ग्रामीण किसानों का शहरों में रहने वाले लोगों के प्रति ईर्ष्या का परिणाम है। यह किसानों की ओछी हरकत है, किसानों द्वारा किये जाने वाले इस जघन्य अपराध पर किसानों के सबसे बड़े हिमायती योगेन्द्र यादव क्यों नहीं कुछ बोलते हैं?

ऐसे में केन्द्र और राज्य सरकारों को मिलकर ऐसा उपाय करना चाहिए कि किसानों को खेतों में जलाने के लिए पराली बचे ही नहीं। इसके लिए सरकार को धान और गेंहू के फसलों की कटाई के तुरंत बाद 10-25 दिनों के अंदर ट्रैक्टर से पराली लगी खेतों को मुफ्त में जुतवा देना चाहिए, जो बिल्कुल सरल, सस्ता और अतिशीघ्र पूरा किया जाने वाला उपाय है। ऐसा हर हालत में केन्द्र और राज्य सरकारों को करनी ही चाहिए, क्योंकि यह उपाय किसानों के लिए बहुत ही कल्याणकारी साबित होगा। जिससे किसानों के बीच सरकार की लोकप्रियता बहुत बढ़ जायेगी। यह सरकारों के लिए सुनहरा अवसर है। इसलिए उन्हें इस मौके को हांथ से जाने नहीं देना चाहिए। सरकार द्वारा ऐसा कराने से हमारे किसान भाई बहुत राहत महसूस करेंगे। वैसे भी हमारे किसान भाईयों की हालत बहुत खराब है, जिसके चलते वे आये दिन आत्म-हत्या करने को मजबूर होते रहते हैं। फिर ट्रैक्टर से जुतवाने पर पराली मिट्टी में दबकर जैविक खाद में तब्दील हो जायेगी, जिससे मिट्टी की उर्वराशक्ति बढ़ जायेगी। पंजाब के फतेहगढ़ साहिब गांव के 55 वर्षीय किसान परमजीत सिंह चीमा कहते हैं कि पराली को जमीन में दबा देने से खेतों में खाद पर 50% खर्च कम हो जाती है। चीमा कहते हैं कि पहले प्रति एकड़ धान और गेंहू की बुआई पर 4 थैले खाद लगती थी, पराली को जमीन में दबा देने से दो थेले खाद लगती है।

★ बेहद कारगर है पराली निष्पादन की तकनीक :- पंजाब के युवा किसान जितेन्द्र का कहना कि बेहद कारगर है पराली निष्पादन की तकनीक। हार्वेस्टर से धान के फसल की कटाई करने के बाद हैपी सीडर का इस्तेमाल करके पराली को काटकर एक-दो इंच के छोटे-छोटे टुकड़े कर दिये जाते हैं और तब रोटावेटर से पराली के इन छोटे-छोटे टुकड़ों को जमीन में दबाकर समतल कर दिया जाता है। ऐसा करने से पराली जैविक खाद में तब्दील हो जाती है। जिससे जमीन की उर्वराशक्ति बढ़ जाती है। इसलिए राज्य सरकारों द्वारा किसानों को हैपी सीडर और रोटावेटर नामक कृषि उपकरणों को पर्याप्त संख्या में किसानों को उपलब्ध कराना चाहिए और इन कृषि उपकरणों की खरीद पर सरकार द्वारा किसानों को अधिकाधिक अनुदान दिया जाना चाहिए।

★ अत्यंत लाभकारी है पराली से बायोगैस बनाना :- खेतों में पराली को जलाने से बचाने के लिए इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन (आईओसी) के साथ मिलकर पंजाब सरकार जगह-जगह पराली का इस्तेमाल कर बॉयोगैस बनाने के लिए कंप्रेस्ट बायोगैस प्लांट (सीबीसी प्लांट) स्थापित करा रही है। पंजाब सरकार का लक्ष्य है कि पूरे प्रदेश में 200 सीबीसी प्लांट स्थापित करना। ऐसे

हर प्लांट में प्रतिदिन 100 टन पराली की खपत होती है। इससे दोहरा लाभ हो रहा है। उत्तम जैविक खाद की प्राप्ति के साथ-साथ पर्यावरण प्रदूषित करने की पीड़ा से भी मुक्ति मिल रही है। इसी का परिणाम है कि पिछले वर्ष 15 हजार हेक्टेयर से अधिक भूमि में पराली नहीं जली। करनाल जिले के 382 गांवों में से 118 गांवों में, सिरसा जिले के 330 में से 208 गांवों में, जींद जिले के 306 में से 110 गांवों में और फतेहाबाद जिले के 257 गांवों में से 20 गांव में पराली जलाने की एक भी घटना नहीं घटी। पंजाब में पराली नहीं जलाने के इस अभियान को देश के अन्य राज्यों में भी बगैर किसी विलंब के चलाया जाना शुरू कर दिया जाना चाहिए।

★ पूरे देश में पराली आधारित उद्योग स्थापित किये जाने चाहिए :- पत्ते की तरह पुआल से प्लेट और कटोरी बनाने के उद्योग स्थापित किये जाने चाहिए। ऐसा करने से प्लेट और कटोरी तैयार करने हेतु पत्ते की कमी की पूर्ति हो जायेगी। साथ ही प्लेट और कटोरी बनाने हेतु प्लास्टीक और थर्मोकोल का विकल्प मिल जायेगा। नतीजा प्लास्टीक और थर्मोकोल द्वारा होने वाले प्रदूषण में अच्छी-खासी कमी हो जायेगी तथा किसानों की आमदनी बढ़ जायेगी। बात यह है कि एक किलो पुआल की कीमत दो से तीन रूपये आती है। प्लेट और कटोरी बनाने हेतु इसकी प्रोशेसिंग में प्रति किलो 50 रूपये लगते हैं और तैयार उत्पाद प्रति किलो 150 रूपये बिकती है।

★ पुआल से पुआल का ब्लॉक बनाना भी बहुत लाभकारी है:- रूई और पटुआ की गांठ की तरह पुआल को दबाकर पुआल की गाठ बनाकर सुरक्षित जगह पर भंडारित किया जाये और भंडारित पुआल की गांठ को वर्षा के पानी से बचाने के लिए त्रिपाल से ढ़ककर रखी जाये तो बाढ़ और सुखाड़ के समय मवेशियों के लिए चारे की कमी नहीं होगी। इससे किसानों की आमदनी भी बढ़ जायेगी।

★ लाभकारी है पैकिंग मैटेरियल के रूप में पुआल का इस्तेमाल :- थर्मोकोल के पहले नाजूक सामग्रियों की पैकिंग में पुआल का इस्तेमाल किया जाता था, जिसकी जगह थर्मोकोल ने ले लिया है, जो प्रदूषण का एक बहुत बड़ा कारक है। इसलिए नाजूक सामग्रियों का पैकिंग सिर्फ और सिर्फ पुआल से किया जाना चाहिए, जिससे पर्यावरण प्रदूषित न हो तथा किसानों की आमदनी भी बढ़ जाये।

उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि पराली के सही इस्तेमाल से पर्यावरण प्रदूषित नहीं होगी, मिट्टी की उर्वरता में कमी आने के बजाय बढ़ोत्तरी होगी, उत्तम जैविक खाद की कोई कमी नहीं होगी और किसानों की आय में उल्लेखनीय वृद्धि हो जायेगी, पर जरूरत है किसानों के बीच पराली की उपयोगिता के प्रति जागरूकता लाने की। सरकार और सरकारी मुलाजिम इस पुणित कार्य में ईमानदारी से तत्परतापूर्वक सहयोग करे तो पराली से जुड़े उपरोक्त कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कोई दिक्कत नहीं होगी। किसानों के साथ-साथ सरकारी मुलाजिम भी सुधर जाये तो यह काम बहुत ही आसान हो जायेगा। ●

(लेखक फायर एण्ड सेफ्टी विशेषज्ञ हैं।)
मो०:- 9334107607
वेबसाईट :www.psfsm.in

अभी कलम उठाइये

आपके सामने हो रहे भ्रष्टाचार एवं अपराध की खबर की समीक्षा करें और सरकार सहित पुलिस-प्रशासन तक उसको पहुंचाने के लिए केवल सच पत्रिका के साथ जुड़े। खबर की जानकारी इस नम्बर पर दें

सम्पर्क करें:- 9431073769/9955077308

ई-मेल:- editor.kstimes@rediffmail.com पर भेजें।

Kashmiri Pandit's exodus almost an untouchable subject for Bollywood Filmmakers

● **Avichal Sharma**

Mumbai: B town has canvassed many relevant socio-economic subjects. Flicks based on the violation of human rights have been taken on priority by the filmmakers of parallel cinema. 1947 Earth, Garam Hawa, Provoked can be quoted under some fine examples. Commercially inclined producers couldn't gather the courage to touch these issues to avert the loss. Over a period of time producer, adapted changes due to the taste and preferences of Indian audience and started considering these offbeat topics. Unfortunately, one trend has not changed, Kashmiri Pandit Exodus has always been untouched by the makers of B-town. There has been a beeline of movies ever since the Gujarat Riots broke out in 2002 after train coaches were set ablaze in Godhra. Nandita Das directed Firaaq, Parzania, Chand Bujh Gaya followed by Dev in which Amitabh Bachchan, Kareena Kapoor was in the lead role. Later came a movie "Kai Po Che" a commercially hit movie, which had the sufferings of the victim of Gujarat in the concluding part.

There are majorly four movies based on Gujarat riots 2002, but a movie based on the biggest massacre which forced Kashmiri Pundits to leave their homeland has not hogged even one-fourth of the headlines. In fact, there is only one movie based on this subject and it is titled "Sheen". The lead role in this movie is played by actor turned politician Raj Babbar, who has essayed the role of a Kashmiri Pandit and Anup Soni has played the role of Islamic fundamentalist. The movie was produced and Directed by Ashoke Pandit. Interestingly, this movie failed to find television rights of high profile channels due to the technical flaws. Although Sheen can be seen on You-Tube and B string movie channels provided by the DTH Operators. While the Kashmiri Pundits await the justice the Indian audience too awaits a technically sound movie based on this horrendous event that can portray the suffering of KP's at the hand of Salafism.For that B-town needs to shun its strategic Silence.

State-of-the-art Bihar Emporium inaugurated in Delhi

Ambapali Bihar Emporium, situated in Baba Kharak Singh Marg, New Delhi was reopened today with state-of-the-art facilities for millions of admirers and fans of handicrafts and artwork of Bihar. Industry Minister of Bihar Shri Shyam Rajak inaugurated it in a grand ribbon-cutting ceremony. It is to be noted that Bihar Emporium was under modernization and renovation for last some time. A sum of Rs. 40 million (approx.) was spent on this work. Post-renovation it has come to a modern, sophisticated and aesthetic look. Located in Central Delhi adjacent to Connaught Place, the world–famous marketing hub, Ambapali Bihar Emporium is a famous handloom and handicraft spot. Apart from home décor the Emporium also has huge collection of popular items and products. A wide range of products of handloom, handicrafts and Bihar khadi is available here. A wonderful collection of Mithila Paintings, a specialty of Bihar, embroidered & crocheted goods, famous Tussar sarees of Bhagalpur, hand-printed textiles, silk dress materials, Madhubani khadi, metalware, woodware, earthenware, stone craft, paintings, bronze sculpture, Tikuli art, sikki craft, shawls, carpets and leather goods can be found here. Aimed at enhancing employment and income of rural artisans and weavers by purchasing items from them for sale and display, three-floor Ambapali Bihar Emporium brings the best of Bihar. Resident Commissioner, Bihar Shri Vipin Kumar, Industry Secretary, Bihar Shri Narmadeshwar Lal were also present in the function.

नटवरलाल चोर धीरज जलान का पर्दाफाश

● ओम प्रकाश

डोरंडा थाना कांड सं0-248/19 दि0 15/7/2019 ध ारा-461/379 भा0द0वि0 के अनुसंधान के लिए वरीय पुलिस अधीक्षक, रांची द्वारा गठित टीम इस कांड के एक अभियुक्त कुणाल कुमार पासवान उम्र -30 वर्ष, पिता - मनोज कुमार पासवान ,पता - स्वर्णरेखा नगर केतारीबगान, थाना चुटिया जिला रांची, को गिरफ्तार किया गया।अपने स्वीकारोक्ति बयान में कुणाल ने बताया कि गाड़ीखाना के धीरज जलान के साथ मिलकर उक्त कांड के साथ-साथ मोटर वाहनों के शीशे तोड़कर समान चुराने एवं चोरी के कई अन्य कांडों को अंजाम दिए है। उनकी निशानदेही पर उसके घर से इस कांड में चोरी किये गए तीन पासपोर्ट व लैपटॉप बरामद हुए। साथ ही उसने बताया कि धीरज जलान, पिता- श्याम सुंदर जलान जो गाड़ीखाना के रहने वाले है ,के साथ

धीरज जलान

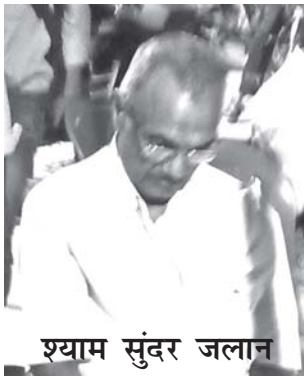

श्याम सुंदर जलान

ही इस घटना को अंजाम दिए है। ये लोग चोरी के सभी समान धीरज जलान के घर पर ही रखा करते है। उसके घर पर जाकर इस कांड में चोरी किये गये अन्य सामानों के साथ अनेक स्थानों में चोरी किये गए कई सामान बरामद कर सकते है। इसके उपरांत वरीय पुलिस अध ीक्षक रांची द्वारा छापामारी हेतु एक विशेष टीम का गठन कर धीरज जलान के गाड़ीखाना स्थित मकान पर छापामारी की गई। छापामारी के दौरान टीम द्वारा चोरी के कई लैपटॉप के संख्या में मोबाइल, लैपटॉप के खाली बैग, चांदी के सिक्के, कई एटीएम कार्ड, चोरी के कई हेलमेट, चांदी के चोरी के बर्तन, कई पेन ड्राइव, नगद रुपए, कई डिब्बे सिक्के व एक चालू हालत में रिवॉल्वर, 9एमएम पिस्टल का एक मैगजीन एक गोली के साथ 7.56 एमएम का एक गोली एवं दो गोली 8एमएम का और चोरी के कई अन्य समान बरामद हुए।

16 साल से चोरी की घटना को अंजाम दे रहा था ये सुपर शोर अलीबाबा चालीस चोर की तरह अपना गिरोह चला रहा था। रांची, सिमडेगा, खूंटी, गुमला, लोहरदगा और कई अन्य शहरों में धीरज जलान अपराधियों से संपर्क कर उन्हें महज हजार डेढ़ हजार रुपए में किराए पर लेकर चोरी की घटनाओं को अंजाम देता था। इसमे धीरज जलान

के पिता श्याम सुंदर भी शामिल रहते थे। 9 मामलों में थी धीरज जलान की तलाश। कोतवाली के अजीत कुमार बिमल ने प्रेसवार्ता कर जानकारी में विदेशी मुद्रा से लिंक होने के बारे में जानकारी दी। पुलिस ने आरोपी के घर से 15 देशों की करेंसी जब्त की। इसमें सबसे अधिक इंडोनेशिया के 27.50 लाख रुपये जब्त किये गए, जिनमे एक-एक नोट पचास-पचास हजार के थे। वही भारतीय रुपये 4.18 लाख रुपये, 26 हजार रुपये के सिक्के, बांग्लादेश का 2 टाका, मलेशिया का 6 रिंगिट, भूटान का 3 गुलट्रम, अफगानिस्तान का 50 रुपया, ईरान का 50 रियाल, ओमान का 100 रियाल, सऊदी अरब का 6 रियाल, नेपाल का 710 रुपया, यूनाइटेड अरब का 10 दिरहम, वियतनाम का 2000 डॉन एक पीस और 1000 डॉन एक पीस, पाकिस्तान का 11 रुपया, अमेरिका का तीन डॉलर, थाईलैंड का 10100 भाट तथा रूस का 1000 रूबल शामिल है।

छापेमारी दल के सदस्य :-टीम में कोतवाली डीएसपी अजीत कुमार बिमल, सिटी डीएसपी अमित कुमार सिंह, डीएसपी यशोदरा, डोरंडा थानेदार अनिल कुमार कर्ण, चुटिया थानेदार रवि ठाकुर, सुखदेव नगर थानेदार संजय कुमार, डोरंडा थाना के परिचारी पुलिस अवर निरीक्षक चन्द्रशेखर यादव व शशि शेखर पाण्डेय, चुटिया थाना के पुलिस अवर निरीक्षक रंजीत कुमार व परिचारी अवर निरीक्षक पंकज चौधरी, सुखदेवनगर थाना के परिचारी अवर निरीक्षक संजय कुमार दास व अमित कुमार पासवान, अवर निरीक्षक रमेश कुमार साहु, राकेश कुमार प्रेम प्रकाश, राजेन्द्र रजक, संदीप कुमार, राजेश्वर साहू और मनोज प्रसाद यादव सहित सुखदेवनगर थाना के जवान, साईबर सेल के कर्मी सहित 26 सदस्य शामिल थे।●

राजस्व वसूली में कोताही बर्दाश्त नहीं

● अजय कुमार

बीते 16 सितम्बर को झारखण्ड प्रदेश के मुख्य सचिव डॉ. डी. के. तिवारी ने झारखंड मंत्रालय में राजस्व संग्रहण की वर्तमान स्थिति पर विभागीय प्रमुखों के साथ समीक्षा बैठक करते हुए राजस्व से जुड़े सभी विभागों को राजस्व संग्रहण में तेजी लाने का निर्देश दिया। मुख्य सचिव ने कहा कि इसमें कोताही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। उन्होंने स्पष्ट निर्देश दिया कि राजस्व उगाही में रुकावटों को दूर करने के लिए विभाग नई सोच के साथ पहल करें और एक्शन लें। उन्होंने इसकी रिपोर्ट अगली बैठक में प्रस्तुत करने का भी निर्देश दिया। उन्होंने राजस्व संग्रहण की नियमित बैठक पर जोर देते हुए हर डेढ़ माह में इसे आयोजित करने को कहा। मुख्य सचिव ने खनन के क्षेत्र में 15 सितंबर तक राजस्व उगाही के लिए कहा कि इसमें जो भी कारक बाधक हैं, उन्हें यथाशीघ्र दूर कर लक्ष्य प्राप्त करें। मुख्य सचिव ने खनन राजस्व के लीकेज को बंद करने तथा नई सोच और ऊर्जा के साथ इस काम में पहल करने का निर्देश दिया। साथ ही इस क्षेत्र में बेहतर करनेवाले दूसरे राज्यों की राजस्व संग्रहण प्रक्रिया का अध्ययन कर उसे अपनाने पर बल दिया।

☞ **वाणिज्य कर उगाही की रफ्तार बढ़ाएं** :- समीक्षा में पाया गया कि वाणिज्य कर विभाग अपने लक्ष्य का 40 फीसदी उगाही कर चुका है। मुख्य सचिव ने चुनाव आदि को देखते हुए राजस्व वसूली की रफ्तार तेज रखते हुए लक्ष्य प्राप्ति का निर्देश दिया। मुख्य सचिव ने कहा कि कागज पर ही खरीद-बिक्री करनेवालों पर सख्त नजर रखते हुए ऐसे तत्वों पर केस करने के साथ सजा के अंजाम तक पहुंचाने को कहा। साथ ही निर्देश दिया कि टास्कफोर्स के माध्यम से लीकेज को फूलप्रूफ करें। सिस्टम को बेहतर करने तथा तकनीक के उपयोग पर बल देते हुए इस पर गंभीरता से पहल करने की जरूरत बताई।

☞ **उत्पाद विभाग ने की 55 प्रतिशत वसूली** :- राज्य में उत्पाद विभाग राजस्व वसूली में अन्य सभी विभागों को पीछे छोड़ते हुए 15 सितंबर तक 1800 करोड़ के लक्ष्य का 55 प्रतिशत उपलब्धि हासिल कर चुका है। उसने अब तक 987 करोड़ रुपये की राजस्व वसूली की है। हालांकि इसमें नई उत्पाद नीति के तहत इस वर्ष शराब दुकानों की नये सिरे से बंदोबस्ती का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उत्पाद विभाग की समीक्षा में पाया गया कि पंजाब और हरियाणा से दूसरे राज्यों में जानेवाली शराब की खेप का चौपारण और धनबाद के बीच खपत हो रही है। इससे राजस्व की हानि हो रही है। मुख्य सचिव ने ऐसा नहीं हो, इसके लिए नियम बनाने का निर्देश देते हुए कहा कि ऐसे वाहनों में डिजिटल लॉक की व्यवस्था कराएं। वहीं उनके भौतिक सत्यापन के साथ डिजिटल मॉनिटरिंग की व्यवस्था पर भी जोर दिया।

☞ **परिवहन विभाग जुर्माना रसीद पर होलोग्राम अंकित करे** :- मुख्य सचिव ने परिवहन नियमों के उल्लंघन में जुर्माना वसूली को ज्यादा पारदर्शी और विश्वसनीय बनाने पर जोर देते हुए इसके लिए जुर्माना रसीद पर विभाग का होलोग्राम अंकित करने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि इसमें अगर कहीं फर्जीवाड़ा है, तो वह भी रुकेगा। उन्होंने कहा कि इनफोर्समेंट टीम में सेवानिवृत्त कर्मियों की सेवा लेकर इसे मजबूत करें। परिवहन विभाग ने अपने वार्षिक राजस्व संग्रहण के लक्ष्य का 36 फीसदी संग्रहण है।

☞ **निबंधन विभाग दाखिल-खारिज को तेजी से निबटाये** :- निबंधन विभाग अर्से से लंबित दाखिल-खारिज के मामलों को तेजी से निबटाने की कवायद शुरू करने जा रहा है। इसके लिए निर्धारित समय-सीमा के भीतर मामले के निबटारा का प्रयास होगा। मामला जिस कर्मचारी-अधिकारी के पास अटका होगा, उन्हें लगातार एसएमएस के माध्यम से इसकी सूचना भेजी जाएगी। साथ ही ससमय उसके निबटारा का दायित्वबोध कराया जाएगा। हालांकि पिछले कुछ दिनों से जारी कवायद से दाखिल-खारिज के मामले के निबटारा में तेजी आई है, लेकिन वह अभी भी बहुत संतोषप्रद नहीं है। ●

कानूनी सलाह

शिवानंद गिरि
(अधिवक्ता)
Ph.- 9308454485
7004408851
E-mail :-
shivanandgiri5@gmail.com

☆ प्रश्न :-माता-पिता व वरिष्ठ नागरिकों का भरण-पोषण तथा कल्याण अधिनियम 2007 एवं बिहार सरकार द्वारा बनाई गई नियमावली 2012 के मुख्य प्रावधान क्या है?

परंपरागत तौर से भारतीय समाज में इस बात पर जोर दिया जाता है कि परिवार व बुजुर्गों का देखभाल किया जाना चाहिए। 'मातृ देवो भवः' या 'पितृ देवोभवः' की संस्कृति में माता-पिता को भगवान का दर्जा दिया गया है। औद्योगीकरण, पैसे पाने की लालसा, बढ़ते हुए दामों, महंगाई इत्यादि के कारण आज इन्सान पैसा बनाने की होड़ के कारण अपने माता-पिता और घर के बुजुर्गों की उपेक्षा कर रहा है। वरिष्ठ नागरिकों को बहुत बड़ी संख्या में सामाजिक, शारीरिक, मानसिक और आर्थिक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। इन्सान को इस आयु में सहारा चाहिए इसी कारण यह आवश्यक हो जाता है कि लोगों को अपने परिवार के वरिष्ठ नागरिकों के प्रति नैतिक और वैधिक रूप से कुछ कर्त्तव्य सौंपा जाए।

☞ **उद्देश्य :-**

(क) वरिष्ठ नागरिकों के बुनियादी अधिकारों एवं उन्हें प्रदेय लाभों की रूपरेखा तैयार करना।

(ख) वरिष्ठ नागरिकों के लिए राष्ट्रीय, राज्य, जिला एवं तालुका स्तर पर कानूनी सहायता को मजबूत बनाना।

(ग) विभिन्न सरकारी योजनाओं और कार्यक्रमों को वरिष्ठ नागरिकों के लिए सुनिश्चित करना।

(घ) यह सुनिश्चित करना कि, माता-पिता और वरिष्ठ नागरिक भरण-पोषण तथा कल्याण अधिनियम 2007 के अन्तर्गत न्यायाधिकरण और अपीलीय न्यायाधिकरण जैसी संस्थाओं और वृद्धि आश्रमों की स्थापना कराया जाय।

(ड़) वरिष्ठ नागरिकों को उनके अधिकारों एवं हकों के बारे में जागरूक बनाना।

(च) पैनल अधिवक्ता और पारा-लीगल स्वयंसेवकों की इस दिशा में न्यायिक सेवा की क्षमता को बढ़ाना।

यह अधिनियम केवल जम्मू कश्मीर राज्य को छोड़कर पूरे भारत देश में लागू है तथा यह भारत के बाहर रहने वाले सभी भारतीय नागरिकों को भी लागू है। वरिष्ठ नागरिक का तत्पर्य है, भारतीय नागरिक जिसने साठ (60) वर्ष की आयु प्राप्त कर ली है। भरण-पोषण के लिए आवेदन निम्नलिखित व्यक्ति कर सकते हैं -

(i) माता-पिता या वरिष्ठ नागरिक जैसा भी हो,

(ii) अगर वह असमर्थ हों तब किसी अन्य व्यक्ति या संस्था द्वारा जो उनके द्वारा अधिकृत हो,

(iii) ट्रिब्यूनल द्वारा स्वतः संज्ञान लिया जा सकता है।

यदि वरिष्ठ नागरिक इस स्थिति में नहीं है कि शिकायत करने के लिए घर से बाहर जा सके तो उनके द्वारा अधिकृत अन्य व्यक्ति या संस्था शिकायत दर्ज कर सती है। प्रत्येक वरिष्ठ नागरिक/ माता-पिता/ दादा-दादी/ नाना-नानी जो अपनी निजी आय से भरण-पोषण करने में असमर्थ हैं, अपने बच्चों पर भरण-पोषण का दावा कर सकते हैं। बच्चों/उत्तराधिकारियों द्वारा जीवन-यापन का भार उठाने की स्थिति में भरण-पोषण हेतु दावा भरण-पोषण न्यायाधिकरण यानि अनुमंडल कार्यालय में आवेदन देकर किया जा सकता है। यह आवेदन स्वयं, किसी अधिकृत व्यक्ति या पंजीकृत स्वयंसेवी संस्था के माध्यम से किया जा सकता है। भरण-पोषण न्यायिकरण, वरिष्ठ नागरिक/माता-पिता को उसके बच्चे/संबंधी द्वारा भरण-पोषण भत्ते के रूप में 10,000/- रूपये प्रतिमाह तक की राशि का भुगतान करने का आदेश दे सकते हैं। न्यायाधिकरणों को भरण-पोषण संबंधी आवेदन का निर्णय 90 दिन की अवधि में करना अनिवार्य है। भरण-पोषण और अपीलीय न्यायाधिकरण के समक्ष्ख वकील किसी पक्ष का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकते हैं। राज्य सरकार ने सभी जिले के समाज कल्याण विभाग के सहायक निदेशक या समकक्ष अधिकारी को भरण-पोषण अधिकारी नियुक्ति किया है, जो माता-पिता/वरिष्ठ नागरिक के अनुरोध पर भरण-पोषण अथवा अपीलीय न्यायाधिकरण के समक्ष उनका प्रतिनिधित्व कर सकते हैं। वरिष्ठ नागरिक का परित्याग (abandonment) करना दण्डनीय अपराध है, जिसके लिए तीन माह का कारावास अथवा 5000/- रूपये तक का जुर्माना अथवा दोनों हो सकता है। वरिष्ठ नागरिक एवं माता-पिता अपने शरीर या सम्पत्ति पर खतरे की स्थिति में जिला पदाधिकारी के कार्यालय में आवेदन दे सकते हैं। प्रत्येक पुलिस स्टेशन (थाना), अपने क्षेत्र के अंतर्गत रहने वाले वरिष्ठ नागरिकों की अद्यतन सूची रखेगा, खासकर जो अकेले रहते हों, साथ ही, पुलिस थाने के प्रतिनिधि, स्थानीय समाज कार्यकर्त्ता या स्वयं सेवक के साथ प्रत्येक माह में कम से कम एक बार वरिष्ठ नागरिक के घर जाकर उनकी शिकायतों/समस्याओं का त्वरित समाधान की कोशिश करेंगे। पुलिस आयुक्त या जिला पुलिस अधीक्षक प्रचार माध्यमों या पुलिस थाना के माध्यम से नियमित अंतराल पर वरिष्ठ नागरिकों के जीवन एवं संपत्ति की सुरक्षा के लिए उठाए जा रहे कदमों की व्यापक प्रचार-प्रसार करेंगे। राज्य सरकार ने इस अधिनियम के प्रभावी क्रियान्वयन पर सलाह के लिए राज्य स्तर पर वरिष्ठ नागरिकों की राज्य परिषद् एवं जिला स्तर पर भी वरिष्ठ नागरिकों की जिला समिति की स्थापना की है। राज्य सरकार प्रतयेक जिले में निर्धन वरिष्ठ नागरिकों के लिए वृद्धाश्रम की स्थापना एवं संचालन की व्यवस्था करेगी।

☞ **अन्य प्रावधान :-**

1. दण्ड प्रक्रिया संहिता की धारा 125 माता-पिता को भी भरण-पोषण प्राप्त करने का कानूनी अधिकार देती है।

2. धारा 125 पति, पिता और पुत्रों पर अपने आश्रित माता-पिता के भरण-पोषण की कानूनी जिम्मेदारी डालती है।

3. आश्रित पत्नी, संतान या माता-पिता प्रथम श्रेणी के मजिस्ट्रेट की अदालत में उन्हें मासिक खर्च देने के लिए अपने पति, पिता या पुत्र के खिलाफ केस दर्ज कर सकते हैं।

4. यदि विवाहित बेटी के पास स्वतंत्र पर्याप्त साधन है अथवा उनके पति के पास पर्याप्त साधन अथवा आय है और उस बेटी के माता-पिता स्वयं अपना निर्वाह नहीं कर सकते हों तो वे अपनी विवाहित बेटी से भी भरण-पोषण का दावा कर सकते हैं।

5. हिन्दु दत्तक ग्रहण एवं भरण-पोषण अधिनियम 1956 की धारा 20 के तहत एक हिन्दु पुत्र या पुत्री अपने जीवनकाल में अपने बुजुर्ग या अक्षम माता-पिता के भरण-पोषण के लिए उत्तरदायी है। यदि पुत्र या पुत्री के पास कोई सम्पत्ति है तो यह जिम्मेदारी उस सम्पत्ति के विरूद्ध भी लागू की जा सकती है।

विश्व शांति स्तूप पर आकर शांति के भाव को आत्मसात करे : मुख्यमंत्री

● अमित कुमार/त्रिलोकी नाथ प्रसाद

बीते 25 अक्टूबर को राजगीर के रत्नागिरी पर्वत पर विश्व शांति स्तूप के 50वें वार्षिकोत्सव कार्यक्रम में भारत के राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद, राज्यपाल श्री फागु चौहान एवं मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार शामिल हुए। उक्त अवसर पर मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद जी, देश की प्रथम महिला श्रीमती सविता कोविंद जी एवं देश–विदेश से आए हुए प्रतिनिधियों का स्वागत करता हूं। पिछले वर्ष के कार्यक्रम में मैं उपस्थित हुआ था, उस कार्यक्रम में सभी लोगों की इच्छा थी कि 50वें वार्षिकोत्सव कार्यक्रम में राष्ट्रपति जी शामिल हों। इस विश्व शांति स्तूप का निर्माण फूजी गुरुजी ने किया था, लेकिन इसका शिलान्यास तत्कालीन राष्ट्रपति सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी ने एवं वर्ष 1969 में इसका उद्घाटन तत्कालीन राष्ट्रपति वी0वी0 गिरी जी ने किया था। 50वें वार्षिकोत्सव कार्यक्रम में राष्ट्रपति जी के शामिल होने के लिए मैं विशेष तौर पर उनको धन्यवाद देता हूं।

बताते चले की फूजी गुरु जी का भारत से संबंध न सिर्फ शांति स्तूप के निर्माण के समय से ही है बल्कि उसके पूर्व देश की आजादी की लड़ाई के समय से ही था। पिछले वर्ष जापान की यात्रा के दौरान राजदूत श्री सूजन राज चिनॉय ने बताया

था कि गांधी जी के तीन बंदर बुरा मत देखो, बुरा मत बोलो, बुरा मत सुनो की मूर्ति फूजी गुरु जी ने ही गांधी जी को दी थी। उन्होंने कहा कि 1969 में ही देश का पहला रोप–वे यहां बना था, जिसके पहले यात्री लोकनायक जयप्रकाश नारायण जी थे। उसी समय भूदान आंदोलन से संबंधित यहां एक भव्य कार्यक्रम हुआ था, जिसमें आचार्य विनोवा भावे, लोकनायक जयप्रकाश नारायण जैसे लोग शामिल हुए थे। इस विश्व शांति स्तूप से पूर्व राष्ट्रपति डॉ0 राजेंद्र प्रसाद, पूर्व प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू, पूर्व प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई जैसे लोगों का भी संबंध रहा है। आगे मुख्यमंत्री ने कहा कि राजगीर ऐतिहासिक जगह है। यह मगध की पहली राजधानी थी। यहां बिंबिसार का अखाड़ा है। अजातशत्रु यहां से राजधानी स्थानांतरित कर पाटलिपुत्र ले गए थे। बगल में नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना की जा रही है। उन्होंने कहा कि शांति स्तूप के सामने गृद्धकूट पर्वत है। ज्ञान प्राप्ति के बाद राजगीर में भगवान बुद्ध गृद्धकूट पर्वत पर कई बार उपदेश देने आते थे। यहां से भगवान महावीर, मखदूम साहब, गुरुनानक देव जी का भी संबंध रहा है। हिंदू धर्म के प्रसिद्ध मलमास मेले में 33 करोड़ देवी–देवता के यहां उपस्थित होने की अवधारणा है। उन्होंने कहा कि वर्ष 2009 में यहां पहली बार राज्य मंत्रीमंडल की बैठक हुई थी, उसी समय नया रोप–वे बनाने का निर्णय लिया गया था। जिसका निर्माण कार्य हो गया है लेकिन अभी उसका निरीक्षण चल रहा है। उन्होंने कहा कि बुद्ध शांति स्तूप से अशोका स्तूप तक जाने के मार्ग को सुगम बनाया जा रहा है। गृद्धकूट पर्वत पर जाने के लिए सीढ़ियों का निर्माण कराया गया है। हमलोगों का प्रयास है कि इस विश्व शांति स्तूप पर अधिक से अधिक लोग आएं और शांति के भाव को आत्मसात कर सकें। हमलोगों की कोशिश है कि यहां आने वाले पर्यटकों को किसी प्रकार की

असुविधा न हो। मुख्यमंत्री ने कहा कि राजगीर को इको टूरिज्म सेंटर के रुप में विकसित किया जा रहा है। राजगीर के घोड़ाकटोरा में 50 फीट की बुद्ध की मूर्ति लगायी गई है। उन्होंने कहा कि पटना में बुद्ध स्मृति पार्क बनाया गया है जहां बुद्ध से जुड़े म्यूजियम और बिपयना केंद्र हैं। यहां बोधगया एवं अनुराध ापुरम से बोधिवृक्ष मंगाये गये हैं, जिसे बुद्ध की प्रतिमा के इर्द–गिर्द लगाया गया है। उन्होंने कहा कि वैशाली में बुद्ध सम्यक दर्शन संग्रहालय का निर्माण कराया जा रहा है। वैशाली से भगवान बुद्ध की अथेन्टिक रेलिक्स मिली है, जिस पर वहां स्तूप बनेगा। गौरतलब हो कि मुख्यमंत्री ने अपने जापान की यात्रा की चर्चा करते हुए कहा कि वहां साढ़े सात सौ वर्ष पुरानी मूर्ति को देखने का मौका मिला था। आज के समय इस विश्व शांति स्तूप का और महत्व है। लोग अपनी समस्याओं के समाधान के लिए भी यहां आकर शांति का भाव ग्रहण कर सकते हैं। हमलोग भगवान बुद्ध के विचारों के अनुरुप प्रेम, सद्भाव को बढ़ावा दे रहे हैं। उन्होंने कहा कि जापान–भारत का संबंध मजबूत है और हमलोगों की इच्छा है कि यह और मजबूत बना रहे।

सनद् रहे कि इस अवसर पर मुख्यमंत्री का स्वागत मोमेंटो भेंटकर किया गया। मुख्यमंत्री ने शांति स्तूप में पूजा–अर्चना की। कार्यक्रम को उप मुख्यमंत्री श्री सुशील कुमार मोदी, चीफ मांक ऑफ निपोजन मयोहोजी वेन जी0 योशिदा, चेयरमैन बोर्ड ऑफ डायरेक्टर सी0जी0सी0 कम्पनी ऑफ जापान एंड वाइस चेयरमैन ऑफ राजगीर बुद्ध विहार सोसायटी श्री अत्शुहिरो होरीयूची, राजगीर बुद्ध सोसायटी की सेक्रेटरी श्रीमती महाश्वेता महारथी ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर ग्रामीण विकास मंत्री श्री श्रवण कुमार, पर्यटन मंत्री श्री कृष्ण कुमार ऋषि, सांसद श्री कौशलेंद्र कुमार, मुख्यमंत्री के परामर्शी श्री अंजनी कुमार सिंह, कला संस्कृति विभाग के प्रधान सचिव श्री उदय सिंह कुमावत, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव श्री चंचल कुमार, मुख्यमंत्री के सचिव श्री मनीष कुमार वर्मा, पटना के आयुक्त श्री संजय अग्रवाल, मुख्यमंत्री के विशेष कार्य पदाधिकारी श्री गोपाल सिंह सहित अन्य बौद्ध भिक्षुगण एवं देश–विदेश से आए अतिथि एवं अन्य पदाधि ाकारीगण उपस्थित थे। इसके पश्चात् पटना एयरपोर्ट पर महामहिम राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविन्द को राज्यपाल श्री फागु चौहान एवं मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार ने विदाई दी। उनके साथ मंत्रिमंडल के अन्य सदस्यगण, मुख्य सचिव एवं पुलिस महानिदेशक समेत वरीय पदाधिकारी मौजूद थे।

धान में लगने वाले कीट-व्याधियों से बचाव

● अमित कुमार/त्रिलोकी नाथ प्रसाद

कृषि विभाग से प्राप्त सूचनानुसार वर्त्तमान समय में राज्य के कई जिलों के कई प्रखण्डों में तनाछेदक, सैनिक कीट/स्वार्मिग कैटर पीलर/शीथ ब्लाईट एवं शीथ रॉट कीट के आक्रमण की सूचना प्राप्त हो रही है। तानाछेदक कीट का अग्र पंख पीलापन लिये हुए होता है, जिसके मध्य भाग में एक काला धब्बा होता है। कीट के पिल्लू तना के अंदर घुसकर मुलायम भाग को खाता है जिसके कारण गभ्भा सूख जाता है। बाद की अवस्था में आक्रान्त होने पर बालियाँ सफेद हो जाती है। सैनिक कीट/स्वार्मिंग कैटर पीलर कीट समूह में फसल पर आक्रमण करती है एवं इसका आक्रमण रात में फसलों की पत्तियों या अन्य हरे भाग को किनारे से काटने से शुरू होता है जो काफी तेजी से कम समय में पूरे फसल को नष्ट कर देती है। यह कीट–विशेषकर रात में ही नुकसान करती है एवं दिन में खेत में स्थित दरार मिट्टी के ढेंलों, पुआल, खरपतवार या अन्य घनें फसलों में छिप जाता है। शीथ ब्लाईट पत्रावरण पर हरें भूरे रंग के अनियमित आकर के धब्बे बनते है, जो देखने में सर्प के केचूल जैसा लगते है तथा शीथ रॉट धान फसल के पत्रावरण पर अनियमित आकार के भूरे–काले धब्बे बनते है, जिसके कारण बाली पत्रावरण के अन्दर ही सड़ जाती है। तानाछेदन कीट से बचाव के लिए खेत में 8–10 फेरोमोन ट्रैप प्रति हेक्टेयर, खेत में बर्ड पर्चर तथा खेत में शाम के समय प्रकाश फन्दा लगाना चाहिए। खेत में नमी की स्थिति में कार्बाफ्यूरान 3 जी दानेदार 25 किलोग्राम अथवा कार्टाफ हाइड्रोक्लोराईड 4 जी दानेदार 25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से तथा बिलम्ब की स्थिति में एसिफेट 75ः एस0पी0 का 1 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर फसल पर छिड़काव करना चाहिए। सैनिक कीट/स्वार्मिग कैटर पीलर कीट का प्रकोप कम हो उन क्षेत्रों में खेतों के मेड़ एवं बीच में जगह–जगह पुआल को छोटा–छोटा ढ़ेर लगाकर रखनी चाहिए ताकि सैनिक कीट धूप से बचने हेतु छाया की तलाश में इन ढ़ेरो में छिप जाए और शाम में पुआल को इक्कठा कर उसे नष्ट कर देना चाहिए। जगह–जगह पर अंग्रेजी के ज (टी) आकर का बर्ड पर्चर (पक्षी बैठका) खेंतों में लगानी चाहिए ताकि पक्षी इस पर बैठकर इन कीटों को खा सकें। जो फसल बढ़वार (वानस्पतिक वृद्धि) की अवस्था में हो उस खेत में हल्की सिंचाई कर के इस कीट का प्रबंधन किया जा सकता है। क्योकि इस कीट के पिल्लू जमीन पर रेंगते हुए एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाकर फसलों को काटने/खाने का काम करते हैं सिंचाई के पानी में क्लोरपायरीफॉस 20 प्रतिशत ई0सी0 मिलाया जाना श्रेयंकर होता है। जिन क्षेत्रों में सैनिक कीट आक्रमण की संभावना हो या इसकी संख्या अधिक देखी जा रही हो उन क्षेत्रों में (1)क्लोरपायरीफॉस 20 प्रतिशत ई0सी 2.5 मि0ली0 प्रति लीटर पानी (2) प्रोफेनोफॉस 40 प्रतिशत+साइपरमेथ्रिन 4 प्रतिशत (3) क्लोरोपयरीफॉस 50 प्रतिशत +साइपरमेथ्रिन 5 प्रतिशत का 1. 5 मि0ली0 प्रति लीटर पानी (4) लेक्डासाइलोहेलेथ्रीन 5 प्रतिशत ई0सी का 1 मि0ली0 प्रति लीटर पानी अथवा (5) डायक्लोरभॉस 76 प्रतिशत ई0सी का 1 मि0ली0 प्रति 2 लीटर पानी में किसी एक कीटनाशी का घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए। शीथ ब्लाईट कीट से बचाव के लिए खेत में जल निकास का उत्तम प्रबंध, यूरिया का टॉप ट्रेसिंग सुध ार होने तक बंद करना तथा कार्बेन्डाजिम 50 प्रतिशत घुलनशील चूर्ण का 1 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर फसल पर छिड़काव या भैलिन्डामाइसीन 3 एल0 अथवा हेक्साकोनाजोन 5 प्रतिशत ई0सी0 का 2 मि0ली0 प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए। मैन्कोजेब 75 प्रतिशत घुलनशील चूर्ण का 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिकाव करना चाहिए।

सामाजिक एवं बौद्धिक क्षेत्र में रोजगार का सुनहरा अवसर

केवल सच सामाजिक संस्थान और श्रुति कम्युनिकेशन ट्रस्ट अपने भविष्य के आगामी योजनाओं में सामाजिक एवं बौद्धिक सुधार के क्षेत्र में पुर्नजागरण के शंखनाद हेतु बिहार और झारखण्ड राज्य के मेधावी/सक्षम/योग्य/दक्ष एवं कर्मठ नवयुवकों को अपने टीम में वैतनिक/अवैतनिक रूप से जुड़ने के लिए अवसर प्रदान करना चाहती है। उक्त स्वयंसेवी संस्थान मुख्य रूप से 'अपना घर' (वृद्धाश्रम आवास योजना), परिवार परामर्श केन्द्र, शिक्षा का संक्षिप्त पाठ्यक्रम (मूल रूप से निर्धन/बेसहारा लड़कियों हेतु) और विभिन्न मुद्दों पर जागरूकता कार्यक्रम पर ध्यान केन्द्रीत करना चाहती है। इन कार्यक्रमों से जुड़कर नवयुवक सामाजिक क्षेत्र में अपनी हिस्सेदारी सुनिश्चित कर सकते हैं। उक्त संगठन इसके लिए टीम वर्क के तहत कार्य करना चाहती है, जिसके अंतर्गत राष्ट्रीय समन्वयक के अधीन वार्ड/ पंचायत/ प्रखण्ड/ अनुमण्डल/जिला समन्वयकों की नियुक्ति भी करना चाहती है। इस संस्थान से जुड़कर इच्छुक नवयुवक उक्त पदों पर अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर सकते हैं।

संस्थान

shruti कम्युनिकेशन ट्रस्ट

www.shruticommunicationtrust.org

श्रुति कम्युनिकेशन ट्रस्ट

भारतीय ट्रस्ट अधिनियम 1882 के तहत संचालित

निबंधन संख्या : 22333/2008, आयकर निबंधित : 12 ए ए/2012-13/2549-52 | 80 जी (5)/तक०/2013-14/1073

केवल सच सामाजिक संस्थान

भारतीय सोसायटी एक्ट 21, 1860 के तहत निबंधित

निबंधन संख्या : 1141 (2009-10), आयकर निबंधित : 12 ए ए/2012-13/2505-8 | 80 जी (5)/तक०/2013-14/1060-63

KEWAL SACH SAMAJIK SANSTHAN

www.ks3.org.in

Regd. Office:- East Ashok Nagar, House No.-28/14, Road No.-14, kankarbagh, Patna- 8000 20 (Bihar)
Jharkhand State Office:- **Riya Plaza, Flat No.-303, Kokar Chowk, Ranchi**
Mob.- 9431073769

चलें गाँधी मैदान! पायें प्रतिष्ठा और सम्मान!!

12 अप्रैल 2020

ब्राह्मण परिवार मिलन महाकुम्भ

भविष्य की रक्षा करनें पहुचे

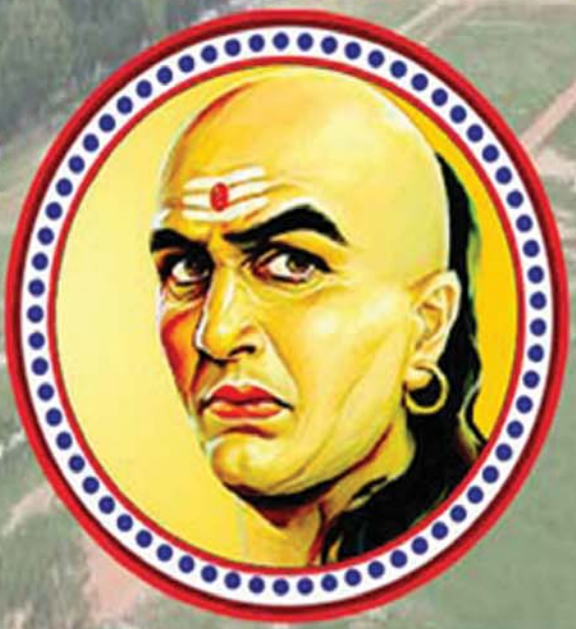

समय 11 बजे AM

1001 ब्राह्मणों के द्वारा सुन्दर कांड का पाठ

पारिवारिक प्रीतिभोज

परिवार के साथ पहुचें गाँधी मैदान, पटना

आयोजक

चाणक्य विकास मोर्चा

पता - पूर्वी अशोक नगर, रोड नं.-14, मकान सं. 14/28, कंकड़बाग, पटना-800020 (बिहार)

Mob. 9431073769, 9955077308